इग्नू
जन–जन का
विश्वविद्यालय

# BHDC-109
# हिन्दी उपन्यास

खंड

## 3
## 'मृगनयनी' और 'आपका बंटी'


इकाई 12
'मृगनयनी' का कथानक और प्रतिपाद्य 211

इकाई 13
'मृगनयनी' के चरित्र 227

इकाई 14
'मृगनयनी' का परिवेश और संरचना–शिल्प 241

इकाई 15
मन्नू भंडारी के उपन्यास और 'आपका बंटी' 255

इकाई 16
'आपका बंटी' के चरित्र 269

इकाई 17
'आपका बंटी' का परिवेश और संरचना–शिल्प 287


ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

## खंड 3 का परिचय

प्रस्तुत खंड इस पाठ्यक्रम का अंतिम खंड है। इस खंड में आप हिंदी के जिन दो विशिष्ट उपन्यासों का अध्ययन करेंगे वे हैं– वृंदावनलाल वर्मा का 'मृगनयनी' तथा मन्नू भंडारी का 'आपका बंटी'। इस खंड में इन दोनों उपन्यासों के विशिष्ट विषयों पर विचार किया है। खंड में कुल छः इकाइयाँ हैं, जो इस प्रकार हैं :

इकाई–12 'मृगनयनी' का कथानक और प्रतिपाद्य

इकाई–13 'मृगनयनी' के चरित्र

इकाई–14 'मृगनयनी' का परिवेश और संरचना–शिल्प

इकाई–15 मन्नू भंडारी के उपन्यास और 'आपका बंटी'

इकाई–16 'आपका बंटी' के चरित्र

इकाई–17 'आपका बंटी' का परिवेश और संरचना–शिल्प

**परिशिष्ट**

प्रस्तुत खंड की इकाई –12 में वृंदावनलाल वर्मा का संक्षिप्त परिचय दिया गया है तथा मृगनयनी की कथावस्तु तथा उसकी मूल संवेदना पर विचार किया गया है। इकाई–13 में 'मृगनयनी' के पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं को बताया गया है तथा इकाई–14 में उपन्यास के परिवेश, भाषा, शैली आदि की जानकारी दी गई है। इकाई–15 में विशिष्ट महिला साहित्यकार मन्नू भंडारी का परिचय देते हुए उनके उपन्यासों की विशेषताओं की चर्चा की गई है तथा इकाई–16 में 'आपका बंटी' के चरित्रों की विशिष्टताओं और पात्रों के आपसी संबंधों पर प्रकाश डाला गया है। खंड की अंतिम इकाई, इकाई–17 में 'आपका बंटी' के मध्यवर्गीय परिवेश को विस्तार से बताया गया है। साथ ही, उपन्यास की भाषा, शैली तथा संवाद योजना की विशेषताओं पर चर्चा की गई है।

खंड के अंत में **'परिशिष्ट'** है। 'परिशिष्ट' के अंतर्गत पाठ्यक्रम में अध्ययन कराये जा रहे पाँचों उपन्यासों में से चयनित कुछ विशेष गद्यांश संकलित किए गए हैं। इन अंशों की व्याख्या स्वयं करने का प्रयास एवं अभ्यास करें। इससे आप आसानी से व्याख्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या करने में सक्षम हो सकेंगे। आपकी सुविधा के लिए उपन्यासों से संबद्ध इकाइयों में हमने उदाहरणस्वरूप कुछ अंशों की व्याख्या भी प्रस्तुत की है।

इकाइयों का अध्ययन करने से पूर्व आप खंड में अध्ययन कराए जा रहे दोनों उपन्यासों को अवश्य पढ़ें। इससे इकाइयों में विश्लेषित विषयों को समझने में आपको आसानी होगी। दोनों उपन्यास पुस्तकालय से आसानी से उपलब्ध किए जा सकते हैं। इनका अध्ययन आपके लिए अपेक्षित है।

**शुभकामनाओं सहित!**

BHDC-109_4th proof.indd 210 8/6/2021 2:09:11 PM

# इकाई 12 'मृगनयनी' का कथानक और प्रतिपाद्य

**इकाई की रुपरेखा**


12.0 उद्‌देश्य

12.1 प्रस्तावना

12.2 कथासार

12.3 कथानक के अवांतर प्रसंग

- 12.3.1 इतिहास और कल्पना
- 12.3.2 मुस्लिम शासकों का वर्णन
- 12.3.3 लाखी और अटल का वर्णन
- 12.3.4 बैजू बावरा और कला

12.4 'मृगनयनी' का प्रतिपाद्य

- 12.4.1 इतिहास का पुनर्निर्माण
- 12.4.2 युद्ध का वर्णन
- 12.4.3 प्रेम का चित्रण

12.5 लेखकीय दृष्टि

12.6 संदर्भ सहित व्याख्या

12.7 सारांश

12.8 बोध प्रश्नों के उत्तर


## 12.0 उद्‌देश्य

इस इकाई को पढ़ने के उपरांत आप :

- 'मृगनयनी' की कथावस्तु की संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर सकेंगे;
- 'मृगनयनी' की कथावस्तु की विशेषताओं को समझ सकेंगे;
- 'मृगनयनी' का प्रतिपाद्य समझ पाएँगे; और
- 'मृगनयनी' में व्यक्त लेखकीय दृष्टि को समझ पाएँगे।

## 12.1 प्रस्तावना

वृंदावनलाल वर्मा हिंदी के महत्वपूर्ण उपन्यासकार हैं। उन्होंने उपन्यासों के अलावा कई कहानियाँ और नाटक भी लिखे हैं। वे हिंदी में ऐतिहासिक उपन्यासकार के रूप में चर्चित और प्रशंसित हैं। 'मृगनयनी' के अलावा, विराटा की पद्‌मिनी, झाँसी की रानी, गढ़कुंडार, टूटे काँटे, अहिल्याबाई, सोना आदि उनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं। उनका नाम हिंदी में अमृतलाल नागर, भगवती चरण वर्मा के साथ लिया जाता है। उन्होंने आचार्य चतुरसेन शास्त्री और आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी दोनों उपन्यासकारों से अलग विषयों और शैली के उपन्यासों की रचना की है। उनकी रचनाओं में इतिहास और कल्पना का सामंजस्य बनाए रखने का प्रयास दिखाई देता है।

'मृगनयनी' उनका नायिका प्रधान उपन्यास है। इस उपन्यास में उन्होंने ग्वालियर के राजा मानसिंह तोमर और गूजर कन्या मृगनयनी के प्रेम और पारिवारिक संबंधों के वर्णन

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

के साथ उस युग के इतिहास की जटिलताओं का वर्णन किया है। उनके उपन्यासों का फलक विस्तृत होता है। भौगोलिक विविधता के साथ उनके पात्र भी अनेक रूपों में हमारे सामने आते हैं। वृंदावनलाल वर्मा के अनुसार मानसिंह तोमर 1486 से 1516 ई. तक ग्वालियर के राजा रहे। इतिहासकार उन्हें वीर और योग्य शासक बताते हैं। वर्मा जी ने भी उपन्यास में उनकी इस छवि को बनाए रखा है। इस काल के राजनीतिक और सामाजिक घटनाक्रम का वर्णन इस उपन्यास में मिलता है।

## 12.2 कथासार

'मृगनयनी' का प्रारम्भ ग्वालियर पर बहलोल लोदी के आक्रमण और इस आक्रमण के विजय के बाद की परिस्थितियों के वर्णन से होता है। तब गाँव के गाँव उजड़ चुके थे। कई युवक मार डाले गए थे। फसलें नष्ट हो चुकी थी। ऐसे में होली का त्योहार आता है और गाँव इस दुःख दैन्य से उबरने का प्रयास करने लगता है। यहाँ ग्वालियर के पास ही साँक नदी के किनारे राई नाम का गाँव बसा हुआ था। यहाँ हमारे उपन्यास की नायिका मृगनयनी, जिसे गाँव वाले निन्नी कहकर बुलाते हैं, और उसकी सहेली लाखी की किशोरावस्था का वर्णन मिलता है। यह गाँव जानवरों के मांस पर गुजर–बसर करता है। खेत में अनाज न होने या कम होने के कारण ये शिकार करके अपना पेट भरते हैं। गरीबी और दैन्य के बीच अल्हड़ जवानी में मदमस्त दोनों कन्याएँ बड़े–बड़े जंगली जानवरों का लोहे के और बांस के तीरों से शिकार करती हैं।

एक बार निन्नी एक ही तीर से अरने भैंसे और जंगली सुअर को मार देती है तथा जंगली सुअर को अकेली पीठ पर लादकर अपने घर ले आती है। उसकी यह कहानी आसपास के राज्यों में प्रसिद्ध हो जाती है। इस वीरता के साथ निन्नी और लाखी का अद्‌भुत सौन्दर्य राज दरबारों में चर्चा का विषय बन जाता है। कथा के सूत्र को जोड़ते हुए लेखक लिखता है, "भारतीय जन आसानी के साथ इधर–उधर की लंबी यात्रा नहीं कर पाता था, परन्तु भारतीय समाचारों के लिए नदी–नालों, जंगल–पर्वत मानो कोई अड़चन ही नहीं रखते थे।

ग्वालियर से सिकंदर लोदी के चले जाने का समाचार फैल गया, कुओं को सड़ा डालने की बात रुकी न रही और निन्नी के एक तीर से बड़ी–बड़ी खीसों वाले सुअरों का मारना और कंधों पर एक भारी भरकम सुअर को कोसों की दूरी से अपने घर उठा ले आना तथा अरने भैंसे का लाखी द्वारा 'बाँस के तीर से ही' मारा जाना दूर–दूर तक थोड़े–से समय में विख्यात हो गया। खबर मालवा की राजधानी माण्डू, मेवाड़ की राजधानी चितौड़, गुजरात की राजधानी अहमदाबाद में पहुँची और अन्यत्र स्थानों पर भी पहुँची। साथ ही प्रसिद्ध हुआ उन दोनों युवतियों का अप्रतिम, अद्वितीय, असाधारण सौन्दर्य और लावण्य भी।

देखने के लिए और संभव हो तो संग्रहण के लिए भी राजाओं और सामन्तों का भी जी ललचाया। दीदार के लिए मुमकिन ही नहीं सहज भी है। उन दोनों को पकड़कर हरम में दाखिल कर लेना। मालवा और गुजरात के सुल्तानों के दिल की धड़कनें बढ़ीं।" यहाँ से उपन्यास का घटनाक्रम बदलता है। माण्डू का सम्राट निन्नी और लाखी को अगवा करके लाने की योजना बनाता है। ये दोनों जिस राई गाँव में रहती है, वह ग्वालियर राज्य में पड़ता है। इसलिए राई पर आक्रमण तो नहीं किया जा सकता। अतः वह इस कार्य के लिए वह एक नट परिवार की सेवा लेता है। नट, लाखी और निन्नी को बहलाकर एक स्थान पर ले जाते हैं। वहाँ कुछ घुड़सवार उन्हें पकड़ने का प्रयास करते हैं और निन्नी और लाखी के हाथों मारे जाते हैं। इधर मानसिंह के पास इन दोनों के किस्से पहुँचते हैं। महाराजा स्वयं राई आते हैं। शिकार का आयोजन होता है। इसमें



BHDC-109_4th proof.indd 212 8/6/2021 2:09:12 PM

महाराजा निन्नी की बहादुरी देखते हैं। उसे पसंद करते हैं और इन दोनों का विवाह हो जाता है। यह विवाह गाँव का पंडित बोधन करवाता है।

इधर लाखी और अटल के संबंधों की चर्चा होती है। दोनों अलग जाति के हैं। पंडित इस अन्तर्जातीय विवाह को करवाने से इन्कार कर देते हैं। फिर वे दोनों अपने आप अपना विवाह कर लेते हैं। इस बीच नट परिवार लाखी और अटल को अपने साथ लेकर चले जाते हैं। वे धीरे–धीरे नरवर गढ़ पहुँच जाते हैं। नट, लाखी को बादशाह के पास भिजवाने के लिए राजी करते हैं। लाखी किसी तरकीब से उनसे बचती है। नट मारे जाते हैं। यहाँ ग्वालियर नरेश मानसिंह तोमर आते हैं। वे लाखी और अटल को अपने साथ ग्वालियर ले जाते हैं। इस बीच ग्वालियर के बादशाह की फौज का, माण्डू के साम्राज्य का विस्तृत वर्णन उपन्यास में होता है।

अब पूरा उपन्यास ग्वालियर में सिमट जाता है। मृगनयनी संगीत और चित्रकला सीखती है। नए भवन बनवाए जाते हैं। ग्वालियर महल में रानियों का आपसी द्वेष प्रकट होता है। यहाँ विधि–विधान से अटल और लाखी का पंडित द्वारा विवाह संपन्न करवाया जाता है। सब कुछ ठीक हो रहा होता है, तभी दिल्ली का बादशाह सिकन्दर लोदी ग्वालियर पर आक्रमण करता है। इस युद्ध में लाखी और अटल मारे जाते हैं। ग्वालियर अंत तक अपराजित रहता है। मानसिंह की बड़ी रानी के पुत्र को युवराज बनाने का प्रस्ताव मृगनयनी रखती है। इस तरह घर का कलह भी शांत हो जाता है। और धीरे–धीरे उपन्यास अपनी स्वाभाविक गति से समाप्त हो जाता है।

## 12.3 कथानक के अवांतर प्रसंग

इस उपन्यास का कथानक दो भागों में बँटा हुआ है– इतिहास और कल्पना। उपन्यास का आरंभ कल्पना से होता है। हालाँकि उसका आधार ऐतिहासिक है। यह इतिहास का हिस्सा है कि ग्वालियर के राजा मानसिंह ने एक गूजर कन्या से विवाह किया। अब उस गूजर कन्या का जीवन, उसका परिवार, उसकी चिंताएँ, उसके स्वप्न, उसका सौन्दर्य सब कल्पना द्वारा उपन्यास में पुनः सर्जित किया गया है। यह उपन्यास का बड़ा हिस्सा समेटते हैं। इसी आधार पर उपन्यास का नामकरण किया गया है।

उपन्यास की मूल कथा या उसके कथानक का उद्देश्य मानसिंह और मृगनयनी के प्रेम का चित्रण करना रहा है। हालाँकि उपन्यास में कई अवांतर प्रसंग हैं जो इस प्रेम को समझने में सहायक होते हैं। इसमें जो सबसे पहला प्रसंग है, वह जाति का है। मानसिंह तोमर है, और मृगनयनी गूजर (उपन्यास में अंकन के आधार पर) है। तो इन दोनों का अन्तर्जातीय विवाह किस तरह से शास्त्र–सम्मत है। मानसिंह उसे जबर्दस्ती उठाकर अपने घर में नहीं ले जाता है। बाकायदा शास्त्र विधि से विवाह करता है। उनका विवाह राई के पंडित बोधन द्वारा सम्पन्न होता है। बोधन स्वयं जाति–प्रथा का और वर्णाश्रम धर्म का कट्टर समर्थक और पक्षपाती है, लेकिन उसने इस अन्तर्जातीय विवाह का समर्थन इसीलिए किया क्योंकि मानसिंह राजा है। राजा विशिष्ट है अतः कुछ भी कर सकता है। उस पर सामान्य नियम लागू नहीं होता। उपन्यास का यह हिस्सा रूमानी होते हुए भी इतिहास का अंग है।

### 12.3.1 इतिहास और कल्पना

वृंदावनलाल वर्मा यह बार–बार रेखांकित करते चलते हैं कि इतिहास के नाम पर आए हुए तथ्य निर्विवाद नहीं है। नरवर की लड़ाई में मानसिंह विजयी हुआ और माण्डू का बादशाह गयासुद्दीन पराजित हुआ। इतिहास ग्रंथों में और यहाँ तक कि शिलालेखों में अलग–अलग तथ्य दिए हुए हैं। गयासुद्दीन ने नरवर पर अपनी विजय की गाथा लिख दी। इसी तरह दिल्ली के बादशाह ने भी ग्वालियर पर आक्रमण और विजय संबंधी



BHDC-109_4th proof.indd 213 8/6/2021 2:09:12 PM

कल्पित कथा लिख रखी है। इस पर निहाल सिंह से विवाद होता है। इस विवाद में निहाल सिंह की मौत हो जाती है। इसी तरह इतिहास संबंधी कुछ लौकिक ओर मौखिक तथ्य भी मिलते हैं, जो परस्पर विरोधी होते हैं। उपन्यासकार ने अपनी समझ से उनमें से कुछ तथ्य चुन लिए हैं और कुछ तथ्य छोड़ दिए हैं। फिर इस इतिहास को लेखक पुनर्निमित करता है। यह पुनर्निर्माण इतिहास द्वारा प्राप्त छवि पर आधारित होता है। मानसिंह तोमर वीर और बहादुर तो था ही, साथ ही बहुत सुंदर भी था। मृगनयनी ने जब पहली बार उसे देखा तो उसके सामने यह तस्वीर आई– ''यह है राजा! भरी हुई साँचे में ढली हुई–सी देह। ऊँचे कंधे, धनुष–बाण कंधे पर और ढाल पीठ पर। लंबा खड़ग कमर में। वीर होगा यह राजा। नाहर और अरनों को मार देने का बल होगा इसमें। तुर्कों को मार भगाने की शक्ति होगी, इसके कलेजे और हाथों में!'' इसी तरह अन्य ऐतिहासिक पात्रों का परिचय भी लेखक कल्पना के द्वारा निर्मित करता जाता है। इससे उपन्यास की विश्वसनीयता बढ़ती जाती है।

इतिहास के बीच जो शून्य होता है, उसे भी लेखक कल्पना के द्वारा भरता है। मानसिंह के शासन में ग्वालियर में कई महल बनाए गए। उन महलों की प्रेरणा कहाँ से मिली होगी, किसने यह प्रेरणा दी, इस सबको लेखक ने बहुत कलात्मक तरीके से कहने का प्रयास किया है। एक भावुक प्रकरण में मृगनयनी सोचती है और कहती है, ''एक रात मेरे मन में चाह उठी थी कि चाँदनी में चमकती नदी की दमक को समेटकर अंचल में बाँध लूँ, खेत की ऊँधती हुई बालों और पहाड़ की उस ऊँचाई को एक ही ठौर पर इकट्ठा कर लूँ, बड़े–बड़े पेड़ों की बंदनवार बनाऊँ और डालियों, पत्तों के झरोखे सजाऊँ, उन झरोखों से होकर मोतियों के हार–सी पहने हुए नदी की लहरों को गीत सुनाऊँ और फिर एक ऐसा घर बनाऊँ जिसमें यह सब आ जाए।'' इसी कलात्मक भावना और प्रेरणा से आगे चलकर ग्वालियर के महल बनाए गए।

नटों का जीवन कितना ऐतिहासिक है और कितना प्रामाणिक है, यह कहना मुश्किल है। परन्तु लेखक ने जिस तरह से उनका विस्तृत वर्णन किया है, वह लेखक की अपनी कल्पना का ही हिस्सा अधिक लगता है। संभवतः इसी कारण यह वर्णन उतना प्रभावशाली नहीं है। इस वर्णन में लेखक की नटों के प्रति कोई सहानुभूति नहीं है, वरन् उनके प्रति हिकारत का भाव है। ऐसा लगता है कि उनको सिर्फ इस्तेमाल किया गया है, ताकि यह बताया जा सके कि कैसे शासक वर्ग अपनी विलासिता की पूर्ति के लिए इनको साधन के रूप में इस्तेमाल करता था। ऐसा ही उपयोग उपन्यास में राजसिंह ने कला का भी किया था लेकिन कला के चरित्र–चित्रण में वह हिकारत का भाव नहीं है। कला अपनी गरिमा से आती है और उसी गरिमा से मानसिंह उसे वापिस चँदेरी पहुँचा देता है। नटों के मारे जाने के प्रति लेखक की कोई सहानुभूति नहीं है।

उपन्यास में कई जगहों पर युद्धों का वर्णन किया गया है। युद्ध की रणनीति, कौशल, जासूसी, बचाव के तरीकों के साथ शारीरिक–सैनिक शक्ति का भी विस्तार से वर्णन किया गया है। यह बन्दूक के आविष्कार से पहले का युद्ध है जो तलवार, भाला, तीर–कमान और छुरी से लड़ा जाता था। इसमें सैनिकों की शारीरिक शक्ति की भी बड़ी भूमिका हुआ करती थी। इन युद्धों में घोड़ों और हाथियों का उपयोग हुआ करता था। राजा आम तौर से घोड़े पर बैठकर युद्ध करता था तथा वह स्वयं रणभूमि में अपनी सेना का नेतृत्व करता था। वह सिर्फ आदेश नहीं देता था, स्वयं भी शत्रु सेना का संहार करता था। जब उसे लगने लगता कि अब विजय मिलने की संभावना नहीं है तब वह स्वयं पीछे हटने का आदेश देता था। किले के भीतर रहकर युद्ध करना और किलों से बाहर निकलकर युद्ध करना राजा की योजना का हिस्सा हुआ करता था। युद्ध के विनाश की जानकारी युद्ध के समाप्त होने के बाद मिलती है। इसका वर्णन मृगनयनी



BHDC-109_4th proof.indd 214 8/6/2021 2:09:12 PM

के आरंभ में किया गया है। युद्ध उस युग की वास्तविक स्थिति हुआ करती थी। पीने के पानी में जहर मिला देना, रसद को न पहुँचने देना भी उसकी सफलता–असफलता को तय करता था। फिर भी वास्तविक विजय–पराजय का निर्णय आमने–सामने के सैनिक युद्ध से ही होता था।

### 12.3.2 मुस्लिम शासकों का वर्णन

ग्वालियर पर माण्डू, दिल्ली और अहमदाबाद के मुस्लिम शासकों की नजर रहती थी और ग्वालियर के राजा को इनसे हमेशा सतर्क रहने की जरूरत रहती थी। ग्वालियर पर आक्रमण न तो माण्डू ने किया और न अहमदाबाद ने। यह साहस दिल्ली के बादशाह बहलोल लोदी और सिकंदर लोदी ने किया था और उनको कभी भी विजय नहीं मिली। मानसिंह कूटनीतिक और सैनिक दृष्टि से हर बार पराजय से बच जाता था। हालाँकि मानसिंह ने कभी भी उनपर आक्रमण करके विजय प्राप्त नहीं की। वृंदावनलाल वर्मा ने इन तीनों मुस्लिम शासकों का विस्तार से वर्णन किया है। माण्डू ने नरवर पर आक्रमण किया था, जो उस समय ग्वालियर के अधीन था। यहाँ माण्डू को पराजित होना पड़ा।

इस उपन्यास में सबसे पहले माण्डू के पठान शासक गयासुद्दीन का उल्लेख मिलता है जो ''हिन्दुओं के साथ अत्याचार नहीं करता था। शराब पीने पर वह कट्टरता का मजाक उड़ाया करता था, इसलिए मुल्ला वर्ग उससे रुष्ट रहता था। कामुकता के अंधेपन में वह पुरुष और स्त्री की पहचान नहीं रखता था।'' ख्वाजा मटरू उसका सबसे चहेता था। उसी की सलाह से गयासुद्दीन के पुत्र नसीरूद्दीन ने गयासुद्दीन को जहर देकर मरवा दिया था। उसने जब से मृगनयनी और लाखी के सौन्दर्य की चर्चा सुनी थी, तब से वह उन्हें पाने के लिए प्रयासरत था। इसके लिए उसने कुछ नटों को तैयार किया। इस बीच मृगनयनी का विवाह हो जाता है, परन्तु नट लाखी को नरवर तक लाने में सफल हो जाते हैं। यहाँ नट मारे जाते हैं और गयासुद्दीन लाखी को पाने में सफल नहीं होता। उसका पुत्र नसीरुद्दीन उससे भी ज्यादा ऐय्याश होता है। वह पन्द्रह हजार सुन्दरियों को इकट्ठा करना चाहता है। एक दिन वह इन परियों–सुन्दरियों को तालाब में नहाने के लिए एकत्रित करता है। वहीं तालाब में डूबकर नसीरुद्दीन की मृत्यु हो जाती है।

दूसरा शासक गुजरात का महमूद बघर्रा था, जो तीन हाथ से अधिक ऊँचाई का था तथा बहुत चौड़ा था। वह गयासुद्दीन को पसन्द नहीं करता। उसके पेटू स्वभाव का अतिरंजनापूर्ण वर्णन वृंदावनलाल वर्मा ने किया है। वह भी ग्वालियर को जीतना चाहता था। वह भी माण्डू को परास्त करने के लिए निकलता है। बीच में उसे पुर्तगालियों की गतिविधियों का पता चलता है, तो वह लौट जाता है। उसके मन में निन्नी और लाखी को हासिल करने की तमन्ना जाग्रत होती है। नरवर के करीब पहुँचकर वह भी वापिस चला जाता है। ''बघर्रा के जासूसों ने दूसरे दिन समाचार दिया कि बिलौचियों ने गुजरात के उत्तर में एक लाख की संख्या में सिंध में घुसकर लूटपाट–उपद्रव मचा दिया है। उसने तुरंत लौट पड़ने का निश्चय किया। माण्डू के सुल्तान और दो देहाती छोकरियों के पीछे न पड़कर बिलोचियों को पहले कुचल डालना जरूरी है, माण्डू को फिर देखा जाएगा।''

इन दोनों के अलावा दिल्ली के सुल्तान बहलोल लोदी और सिकन्दर लोदी ग्वालियर पर आक्रमण करते हैं, लेकिन वे ग्वालियर को जीत नहीं पाते। उपन्यास का प्रारंभ ही बहलोल लोदी के बाद की परिस्थितियों के चित्रण से होता है। राई गाँव और ग्वालियर में उनके विध्वंस के चिन्ह बचे हुए हैं और मानसिंह अब ग्वालियर के नव–निर्माण में लगा हुआ है। कुएँ के पानी को फिर से शुद्ध करवाया जा रहा है। दूसरी बार सिकंदर लोदी पूरी तैयारी के साथ आक्रमण करता है। इस आक्रमण में लाखी और अटल मारे जाते हैं। मानसिंह के दूत निहाल सिंह की भी वह हत्या कर देता है। उनकी छावनी में ही बोधन पुजारी की भी हत्या कर दी जाती है। अंत में शांति स्थापित हो जाती है।



BHDC-109_4th proof.indd 215 8/6/2021 2:09:12 PM

यह युद्ध बहुत भयानक होता है, लेकिन सिकंदर को अपने भाई से समस्या आती है और वह भी युद्ध बीच में ही छोड़कर चला जाता है।

### 12.3.3 लाखी और अटल का वर्णन

मृगनयनी के समान लाखी और अटल भी राई गाँव के हैं। अटल मृगनयनी का भाई है और लाखी उसकी सहेली है। किशोरावस्था की पक्की सहेली है। मृगनयनी गूजर है और लाखी अहीर है। लाखी अपनी बूढ़ी माँ के साथ रहती है। एक दिन उसकी माँ मर जाती है और लाखी, अटल और मृगनयनी के साथ रहने लगती है। लाखी और अटल के बीच में चाहत पैदा होती है। मृगनयनी उन्हें प्रोत्साहित करती है। एक दिन एकांत में अटल लाखी को प्रेम प्रस्ताव देता है और लाखी उसे स्वीकार कर लेती है। परन्तु विवाह कैसे हो, समाज और जाति का बंधन भी तो है। अटल हर परिस्थिति में लाखी का साथ देने का वादा करता है। अटल गाँव के पुजारी बोधन से निवेदन करता है कि वह उनका विवाह करवा दे। पंडित मना कर देता है। अटल जब यह तर्क देता है कि जब तोमर (मानसिंह) और गूजर (मृगनयनी) का विवाह हो सकता है तो अहीर–गूजर में वैवाहिक संबंध क्यों नहीं हो सकता ? इस बात का उत्तर देते हुए पंडित कहता है– ''वह राजा है। राजा किसी देवता का अवतार होता है, वह कर सकता है। उसको सुहाता है। तुम लोग राजा नहीं हो। तुम्हारे लिए मना है।'' जब अटल ने राजा से अपने संबंधों का जिक्र किया तो बोधन बोला, ''मैं राज्य को छोड़कर परदेस चला जा सकता हूँ परन्तु वर्णाश्रम धर्म को लात नहीं मार सकता।'' इसके बाद उन दोनों (लाखी और अटल) ने स्वयं ही गंगा जी की सौगन्ध खाकर विवाह कर लिया और अटल ने प्रतिज्ञा की कि ''यह जन्म–भर मेरी होकर रहेगी।'' उसके बाद वे लोग पति–पत्नी की तरह रहने लगे। अब जाति और गाँव की पंचायत हुई और उन्हें ग्राम बाहर कर दिया गया। इधर माण्डू के शासक के प्रतिनिधि नट उन्हें बहलाने–फुसलाने लगे और बिरादरी का भय दिखाकर उन्हें अपने साथ ले गए और वे नरवर पहुँच गए। जब लाखी को इन नटों की मानसिकता का पता चला तो उसने नटों के भागने और भगाने की रस्सी काट दी। इस तरह यहाँ दानों का जीवन समगति पर आ जाता है। मानसिंह नरवर आता है और लाखी और अटल को अपने साथ ग्वालियर ले चलता है।

अब लाखी मृगनयनी की सहेली के रूप में उसके साथ राजसी ठाट–बाट में रहने लगती है। मृगनयनी को लगता था कि भले ही उन्होंने स्वतः विवाह कर लिया है, परन्तु समाज के सामने उनका विवाह तो हुआ नहीं। अतः वह राजा से उनके विवाह का आग्रह करती है। राजा बोधन से विवाह संपन्न करने के लिए कहता है। यहाँ भी बोधन वर्णाश्रम धर्म के पक्ष में खड़ा होता है। राज भय से भी वह आतंकित नहीं होता। वह कहता है, ''महाराज ने वर्ण व्यवस्था के विरुद्ध ठान ली है, इसलिए मैं अब ग्वालियर में नहीं ठहरूँगा। अधर्म के समय अब और इस स्थान में नहीं रहूँगा।'' तब लाखी और अटल का 'पाणि ग्रहण संस्कार विजयजंगम' से करवाया गया।

इस विवाह के बाद भी महल की आठों रानियाँ लाखी से दूर रहती थीं । इस पीड़ा को वह देखती और झेलती थी। इस बीच दिल्ली के बादशाह सिकंदर लोदी का आक्रमण होता है। लाखी और अटल राई के पास की एक गढ़ी में रहने चले जाते हैं। वहाँ लाखी फिर पराक्रम दिखाती है, परन्तु उसे प्राणघातक चोट लगती है। मरते–मरते वह अटल से वचन लेती है, ''ब्याह कर लेना अपनी जात–पाँत में।'' इस तरह लाखी के मृगनयनी से समानान्तर जीवन की समाप्ति होती है। इसी युद्ध में अटल भी शहीद हो जाता है।

### 12.3.4 बैजू बावरा और कला

पाठकों को उपन्यास के भाग 13 में पहली बार चँदेरी में राजसिंह कच्छवाह के दरबार में बैजनाथ या बैजू का पता चलता है, जो जाति का ब्राह्मण है। बैजू को पता चलता है कि ग्वालियर में संगीतकारों का बड़ा सम्मेलन होने जा रहा है, यह जानकर वह



BHDC-109_4th proof.indd 216 8/6/2021 2:09:12 PM

ग्वालियर आना चाहता है। उसके साथ राजसिंह, कला को भी भेज देता है। बैजू को पता है कि वहाँ के राजा को स्वयं भी संगीत का ज्ञान है। ग्वालियर आने के बाद बैजू संगीत में डूब जाता है और फिर वह वहाँ से वापिस नहीं जाना चाहता। कला, राजसिंह के लिए जासूसी करने के लिए ग्वालियर महल की चित्रकारी करने लग जाती है। मानसिंह इन दोनों के मासिक भत्ते पर रुकने की व्यवस्था कर देता है। जब मृगनयनी ग्वालियर में आ जाती है, तब उसके मन में राज दरबार के तौर–तरीके, कला और नृत्य सीखने की इच्छा जाग्रत होती है। उसमें ज्ञान की तीव्र लालसा और तीक्ष्ण बुद्धि है। अब बैजू बावरा मृगनयनी का गुरु हो जाता है। साथ ही, कला उसको चित्रकारी सिखाती है। ''बैजनाथ कहते थे कि जिन तानों को और लोग एक महीने में सीख पाते हैं, उनको तुम (अर्थात् मृगनयनी) एक दिन में सीख लेती हो।'' इनके साथ विजय जंगम मृगनयनी को शास्त्र और ज्ञान की पढ़ाई के लिए नियत कर दिए जाते हैं। संगीत के प्रति उसकी लगन और अभ्यास को देखते हुए स्वयं बैजनाथ कहते हैं कि ''महाराज, वह पूर्व जनम में संगीत की अवतार रही होगी। मुझको अपना आचार्य पद बनाए रखने के लिए विशेष अभ्यास करना पड़ेगा।''

बैजनाथ और कला के सान्निध्य में ग्वालियर में संगीत, कला और भवन निर्माण कला का विकास होता है। संगीत और कला में डूबने के कारण युद्ध–कला पर ध्यान कम हो जाता है। जब सिकदंर लोदी का आक्रमण होता है तब जनता में इस बात की चर्चा होती है कि ''राजा नाच–गाने में ज्यादा उलझ गया है। वह उतना सावधान नहीं रहा।'' जनता का मानना था कि ''रात–भर जागेगा, दिन भर सोएगा, तब तुर्कों को पीछे हटाने का समय कब और कहाँ से निकलेगा।'' बैजू अपनी संगीत साधना में इतना डूबा रहता है, उसे और किसी चीज से कोई मतलब नहीं रहता। इसलिए उसका नाम 'बावरा' पड़ गया। वह कला की जासूसी वृत्ति को सहज रूप में उद्घाटित कर देता है। बैजू की गायकी से प्रसन्न होकर राजा मानसिंह ने घोषणा की कि ''आज से आचार्य बैजनाथ को नायक बैजनाथ का पद दिया गया।'' पुजारी बोधन ने इसका विरोध किया और संगीत शास्त्र के बारे में उसने मत व्यक्त किया कि ''प्राचीन ऋषियों ने जो कुछ किया उसको अब न तो कोई बदल सकता है और न उसमें किसी नई बात को उत्पन्न कर सकता है।'' बैजू बावरा ने मृगनयनी की प्रेरणा से 'गूजरी–टोढ़ी राग' निर्मित किया। इस प्रकरण के साथ ही बैजू का महत्व ग्वालियर में बना रहा और कला को महाराज मानसिंह ने सम्मानपूर्वक चँदेरी के लिए विदा कर दिया।

**बोध प्रश्न–1**

1. निम्नलिखित कथनों में से सही पर ✓ तथा गलत पर ✗ का निशान लगाइए :

   क) मानसिंह तोमर के कितनी रानियाँ थीं ? (आठ / नौ)

   ख) मानसिंह तोमर के छः वर्ष पूर्व ग्वालियर के राजा ने किस राजकुमारी से विवाह किया था। (तैलंग / मेवाड़)

   ग) उपन्यास में मानसिंह का अंतिम युद्ध किससे होता है ? (सिकंदर लोदी / बहलोल लोदी)

2. उचित शब्दों द्वारा रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

   क) ..... माण्डू के शासक गयासुद्दीन का चहेता नौकर था। (ख्वाजा मटरू / निहाल सिंह)

   ख) नरवर पर ..... अपना अधिकार मानता था। (राजसिंह कच्छवाहा / कला)

   ग) ..... हरम में 15000 सुन्दरियाँ इकट्ठा करना चाहता था। (नसीरुद्दीन / बघर्रा)



BHDC-109_4th proof.indd 217 8/6/2021 2:09:12 PM

3. सही विकल्प का चुनाव कीजिए :

क) बैजू बावरा मानसिंह के दरबार में प्रतिष्ठित गायक था। (सही / गलत)

ख) अंत में सिकन्दर लोदी ने मानसिंह तोमर को परास्त किया। (सही / गलत)

ग) बोधन पुजारी को अटल ने मार डाला। (सही / गलत)

## 12.4 'मृगनयनी' का प्रतिपाद्य

'मृगनयनी' उपन्यास की रचना किसी के अनुरोध पर की गई है। उस अनुरोध में इस कथा के प्रति, प्रमुख पात्रों के प्रति समर्थन का भाव होना स्वाभाविक है। इसलिए वृंदावनलाल वर्मा इस उपन्यास में मानसिंह की उज्ज्वल छवि को स्थापित करते हैं। उपन्यास के परिचय में ही उन्होंने लिखा है कि चारों तरफ मारकाट, युद्ध की विभीषिका और जनता पर अत्याचार हो रहे थे, उस समय ग्वालियर में मानसिंह का होना आश्चर्यजनक लगता है। मानसिंह तोमर सन् 1486 से 1516 तक ग्वालियर का राजा रहा। लेखक ग्वालियर की स्थिति बताते हुए कहता है कि उस समय में ''उत्तर में सिकंदर लोदी और उसके सहयोगियों के परस्पर युद्ध और दोनों द्वारा घोर जन पीड़न; राजस्थान में राणा कुंभा का अपने बेटे के ही हाथ से विष द्वारा वध और उसके उपरांत वहाँ की अराजकता; गुजरात में महमूद बघर्रा के अगणित विजन और रक्तपात; मालवा में गयासुद्दीन खिलजी और उसके उत्तराधिकारी नसीरुद्दीन की अत्याचार–प्रियता और ऐय्याशी; दक्षिण में बहमनी सल्तनत और विजयनगर राज्य के युद्ध और बहमनी सल्तनत का पाँच सल्तनतों में बिखर जाना; जौनपुर, बिहार और बंगाल में पठान सरदारों की निरंतर नोच–खसोट और इन सबके बीच में ग्वालियर।''

### 12.4.1 इतिहास का पुनर्निर्माण

इन सब परिस्थितियों में ग्वालियर में राजा मानसिंह तोमर हुए और निरंतर युद्ध करते हुए भी, युद्ध की आशंका में रहते हुए भी अपराजेय रहना–इतिहास का यह बड़ा तथ्य है। उपन्यास में लेखक ने मानसिंह के व्यक्तित्व और उनके क्रियाकलापों का लेखा–जोखा प्रस्तुत किया है। उनके इतिहास के बारे में प्रचलित तथ्यों, लोक–धारणाओं और मिथ्या कथनों की पुनर्परीक्षा करके उसे पूर्ण रूप में निर्मित करना इस उपन्यास का मूल प्रतिपाद्य है। मृगनयनी और मानसिंह का संबंध उपन्यास का एक हिस्सा है। इस हिस्से का बड़ा तथ्य यह है कि मानसिंह–मृगनयनी के संबंध जीवन भर मधुर बने रहे। उनमें समय के साथ कोई फेर–बदल नहीं हुआ। दूसरा, मृगनयनी के आने के बाद मानसिंह ने फिर कोई विवाह नहीं किया, जैसी आशंका उनकी बड़ी रानी को हमेशा बनी रहती थी। मृगनयनी राई से आकर जब ग्वालियर में बस गई तब उसने वहाँ अपने आपको स्थापित करने के लिए बहुत मेहनत की, ताकि वहाँ राजमहल में वह अन्य रानियों और दासियों के बीच खड़ी रह सके और राजा का प्रेम भी पाती रहे। इसी क्रम में उसने संगीत, नृत्य, चित्रकला और अन्य कलाओं के साथ शास्त्रीय ज्ञान और व्यावहारिक ज्ञान अर्जित किया। इसका वर्णन करना हालाँकि उपन्यासकार का उद्देश्य प्रतीत नहीं होता, परन्तु मानसिंह के जीवन के वर्णन के क्रम में ये बातें भी स्वतः अभिव्यक्त हो गई हैं।

मध्यकाल के अन्य शासकों की भाँति मानसिंह तोमर के तो दो कार्य क्षेत्र थे– एक राजमहल और दूसरा युद्धभूमि। राजमहल का अधिकांश समय मृगनयनी के साथ बीतता था। साथ ही दरबार की बैठक, सैनिक तैयारी, महल का नवनिर्माण और संगीत और कला की आराधना में बीतता था। उनकी मृगनयनी के अलावा आठ रानियाँ और थीं। उन सबके बीच समन्वय स्थापित करना भी एक पति के रूप में राजा का कर्त्तव्य था, जिसे मानसिंह ने समझदारी से निभाया था। शास्त्रीय संगीत और कला के विकास के साथ मानसिंह ने भवन–निर्माण की कला के विकास में भी बहुमूल्य योगदान दिया था।



BHDC-109_4th proof.indd 218 8/6/2021 2:09:12 PM

नए महल के स्थापत्य के निर्माण पर चर्चा करते हुए विजय जंगम ने सुझाव दिया कि महल ''तैलंग शैली में बनवाइए। ऊपर के दोनों खंडों में वन–उपवन की भिन्नतापूर्ण, विपुल शालीनता, छोटी–छोटी पहाड़ियों के प्रतिमा रूप मड़ियाँ, बड़े पहाड़ों सरीखे आड़े, शिखर और आड़े शिखरों पर पहाड़ों के अनेक तुंगों के प्रतीक, मंदिर के चारों पार्श्व त्रिभुजाकार, इन कमल गुंजित त्रिभुजों के शिखर पर सूर्य का गोल मंडल।'' मानसिंह ने जो महल बनवाए थे, उसकी शिल्प कला का अपना इतिहास था। ''छः सौ वर्ष से ऊपर हो गए जब ग्वालियर के राजा ने एक तैलंग राजकुमारी के साथ विवाह किया। दक्षिण के कुछ शिल्पी उस राजकुमारी की प्रेरणा से आए। उनके और उत्तर के शिल्पियों के सहयोग से वह मंदिर बना। तैल–मंदिर का शिखर तैलंग राजकुमारी की वांछा का प्रतीक है और शिखर के नीचे का सारा खंड उत्तर की परंपरा की मूर्ति है। अब वे कारीगर नहीं हैं।'' उत्तर और दक्षिण की शिल्प कला का संगम विजय जंगम की प्रेरणा से नए भवन में भी होता है। इसके अलावा 'काव्य को पत्थरों में उतार' देने की कामना भी है। मानसिंह कहता है, ''शिल्पी और कारीगर निर्माण कला के शब्द और व्याकरण हैं। उनकी योजना शब्द–विन्यास, पद लालित्य और अनुपात को कविता कथा में मंजुल–मंगल की फुरफुरी देना'' निर्माताओं का काम है। दक्षिण के लिंगायत सम्प्रदाय का विजय जंगम महाराजा मानसिंह का मित्र था। उनके प्रभाव से मानसिंह के मन में वर्णाश्रम धर्म के प्रति दुराग्रह नहीं था। वे वर्णाश्रम धर्म को भी समय के अनुसार सुधारना चाहते थे, हालाँकि वे अपने जीवन काल में ऐसा कुछ कर नहीं पाए। वे प्रयास पूर्वक दोनों में समन्वय और संतुलन बनाए रखना चाहते थे।

इसी तरह मृगनयनी की प्रेरणा से उसके पैतृक गाँव की साँक नदी के पानी की नहर ग्वालियर के महल तक लाई जाती है। किले को घेरेबंदी के समय सुरक्षित रखना–यह युद्ध कला की अनिवार्य विशेषता है। राजा भवन निर्माण करवाते समय इसको भी ध्यान में रखता है। अंदर पीने के पानी की व्यवस्था करता है तथा इसकी भी व्यवस्था करता है कि युद्ध की घेराबंदी के समय अधिकांश जनता किले के भीतर आ जाए। ग्वालियर के साथ नरवर के किले की भी यह मजबूत व्यवस्था थी।

### 12.4.2 युद्ध का वर्णन

हालाँकि मानसिंह का काल युद्ध की आशंकाओं का काल था। इस आशंका के कारण उन्हें हमेशा सतर्क रहना पड़ता था। इसलिए सैन्य प्रबंध की सबसे प्रमुख टुकड़ी जासूसी के काम में रत रहती थी। मानसिंह अपने आसपास के सभी राजाओं और शासकों के व्यक्तित्व, मनोभाव, क्रियाकलाप–सबकी सटीक जानकारी रखता था। उपन्यास में इसका विस्तृत वर्णन मिलता है। उपन्यास में आए हुए अन्य शासक मानसिंह की दृष्टि में भी वैसे ही हैं।

मानसिंह के तीन युद्धों का वर्णन इस उपन्यास में किया गया है। उपन्यास का आरंभ सिकंदर लोदी से हुए युद्ध के बाद के परिवेश के वर्णन से होता है। इस तरह पहला युद्ध माण्डू के सुल्तान गयासुद्दीन से नरवर में होता है। इस युद्ध में आमने–सामने की लड़ाई होती है, जिसमें मानसिंह की सेना विजयी होती है। फिर राजा, नरवर की व्यवस्था करता है और यह जानकारी लेता है कि माण्डू का शासक वापिस माण्डू पहुँच गया है, यह जानकर ही मानसिंह ग्वालियर जाता है। इसके अलावा गयासुद्दीन और अहमदाबाद के शासक बघर्रा के युद्ध अभियान का वर्णन मिलता है।

उपन्यास का अंतिम युद्ध सिकंदर लोदी से होता है। ''सिकंदर ने अपनी सेना के तीन खंड किए। एक नरवर की दिशा में भेजा और दो खंडों को भिन्न–भिन्न दिशाओं में ग्वालियर पर। राई के पास से आने वाले खंड के साथ वह स्वयं था। नरवर की ओर जाने वाली सेना का पता मानसिंह को नहीं लगा। उसने समझा, ग्वालियर पर ही तीन तरफ से चढ़ाई हो रही है।



BHDC-109_4th proof.indd 219 8/6/2021 2:09:12 PM

मुकाबला करने की योजना शीघ्र बन गई। उत्तरी सिरे को मानसिंह खदेड़ता हुआ बीच वाले खंड को जा दबोचेगा, दक्षिण सिरे को मानसिंह का एक नायक इसी तरह दबाएगा और बीच वाले को अटल रोककर पीछे हटाएगा। बीच वाली तोमर सेना के सहारे के लिए राई की गढ़ी अटल के अधिकार में।" इसी तरह हाथी दल के सामने हाथी होना चाहिए था, परन्तु लड़ते–लड़ते मुठभेड़ तो हो ही जानी थी। ''मानसिंह घोड़े पर था। इसको हाथी की अपेक्षा अपने घोड़े पर अधिक विश्वास था।''

इस युद्ध और उसकी व्यूह रचना का विस्तार से वर्णन किया गया है। लेखक ने किसी भी तरह से लोदी की सेना को कमजोर मानकर चित्रित नहीं किया। दोनों शक्तिशाली थे। सिकंदर लोदी आक्रमण की मुद्रा में था और मानसिंह रक्षात्मक युद्ध लड़ रहा था। उसे अपने किले की सुरक्षा प्राप्त थी। अंत में जब लोदी को लग गया कि यह विजय संभव नहीं है, तब उसने युद्ध बंद कर दिया। और मानसिंह ने अपनी तरफ से युद्ध को बढ़ावा नहीं दिया। राजसिंह ने सिकंदर का साथ दिया और नरवर को उसने प्राप्त कर लिया। मानसिंह को संतोष करना पड़ा। इसके साथ ही लेखक ने युद्ध संबंधी छोटी–मोटी अनेक बातों का उल्लेख भी किया है।

### 12.4.3 प्रेम का चित्रण

इस उपन्यास की मुख्य विषय वस्तु मानसिंह तोमर का चरित्र गायन या उसका युद्ध कौशल नहीं है। इसकी मुख्य विषय–वस्तु मानसिंह और मृगनयनी का प्रेम है। इस प्रेम के स्वरूप के जानने से पहले यह जान लेना जरूरी है कि मृगनयनी अद्‌भुत सुन्दरी और वीर कन्या है। उस काल में उसकी इतनी अधिक चर्चा हो गई थी, कि एक बार तो यह भी लगने लगता है कि उस काल के सारे शासक मृगनयनी को पाने के लिए ही मानो लगे रहते थे। उनके युद्ध का एक लक्ष्य मृगनयनी को प्राप्त करना भी था। उसके सौन्दर्य की और वीरता की चर्चा ग्वालियर भी पहुँची और महाराजा मानसिंह तोमर के मन में भी उसे देखने की जिज्ञासा और कुतूहल उत्पन्न हो जाता है। इसी जिज्ञासा में मानसिंह राई आता है और शिकार के आयोजन में पहली बार मृगनयनी को देखता है और मुग्ध हो जाता है। वह कुछ आगे–पीछे नहीं सोचता। सौन्दर्य के प्रभाव से वशीभूत राजा प्रथम मिलन में विवाह का प्रस्ताव दे देता है।

हिंदी में प्रेम कहानी लिखते हुए आमतौर से लेखक के मन में छायावादी प्रेम की तस्वीर उभरती है। इसका पहला लक्षण है प्रथम दृष्टि से उत्पन्न प्रेम। अटल और लाखी के संदर्भ में भी यही दिखाई देता है कि पहली बार लाखी को अटल ने देखा और मुग्ध हो गया। मुग्ध होने के बाद पता चलता है कि लाखी तो अहीर है और वह स्वयं गूजर है। (उपन्यास की कथा के संदर्भ में) अहीर–गूजर विवाह कैसे संभव है ? यह प्रश्न प्रेम के बाद उत्पन्न होता है। यह प्रश्न महाराजा मानसिंह– मृगनयनी के मन में पैदा नहीं होता। राजा सर्वशक्तिमान है। वह वर्णाश्रम व्यवस्था के नियमों से ऊपर है। वैसे ग्वालियर नरेश मानसिंह तोमर और मृगनयनी में किसी प्रकार की तुलना नहीं हो सकती। राजा ने उसको पसन्द किया, यही उपकार बहुत बड़ा है। इसके बावजूद उपन्यास में गूजर रानी की गमक मौजूद है। वह उसके प्रेम–प्रस्ताव पर नतमस्तक नहीं हुई। उसने राजा के प्रेम प्रस्ताव के सामने अपनी शर्तें रखी। राजा ने उन शर्तों को स्वीकार किया। यह राजा की उदारता है, लेकिन इससे निन्नी के साहस को हम छोटा नहीं कह सकते। उसने पहली शर्त रखी– ''मेरी पत रखना'' अर्थात् मेरे विश्वास को खंडित मत करना। दूसरे, राजा साँक नदी के पानी को ''नहर काटकर किले तक लेकर आए,'' और अंतिम शर्त थी कि ''मैं ग्वालियर में परदा नहीं करूँगी।' यह मध्यकाल की ग्रामीण स्त्री है जिसने राजा के सामने अपनी शर्तें रखने और पूर्ण करवाने का साहस दिखाया।

जहाँ तक मानसिंह का प्रश्न है, पहली बार जब उसने मृगनयनी को देखा तो वह उसके सौन्दर्य पर मुग्ध हो गया। फिर जब उसने मृगनयनी को शिकार करते हुए देखा तो



BHDC-109_4th proof.indd 220 8/6/2021 2:09:12 PM

विस्मय विमूढ़ हो गया। ऐसी ग्रामीण कन्या मेरे राज्य की प्रजा है, इसकी प्रसन्नता तो हुई, परन्तु उससे प्रेम निवेदन करते हुए राजा ने अहंकार त्याग दिया और एक गरिमामय सामान्य व्यक्ति की तरह प्रेम निवेदन किया। न केवल प्रेम निवेदन किया वरन् उसके उचित प्रत्युत्तर का इंतजार किया। मृगनयनी ने जब स्वीकृति दी तब राजा ने आगे विवाह की प्रक्रिया का प्रस्ताव रखा। राजा है तो क्या हुआ, मृगनयनी के परिवार और गाँव की प्रतिष्ठा के अनुरूप विवाह–संस्कार राई गाँव में संपन्न किया गया। सबकी मर्यादा की रक्षा की गई।

कई बार 'मृगनयनी' उपन्यास में हम देखते है कि प्रेम कहानी लिखते–लिखते झटके से लेखक को याद आता है कि वह तो ऐतिहासिक उपन्यास लिखने बैठा था और किस कहानी में उलझ गया। और वह इतिहास का वर्णन–विवरण देने लगता है। जो भी हो, विवाह के पश्चात् जब मृगनयनी ग्वालियर जाती है तो देखती है कि राजा के आठ रानियाँ पहले से मौजूद हैं। उसके मन को झटका लगता है, परन्तु राजा के अगाध प्रेम से वह इस आघात से उबर जाती है। कभी–कभी वह एकांत में सोचती है, ''जब इन्होंने पहली स्त्री से ब्याह किया होगा तब उससे भी इसी तरह का प्रेमालाप करते होंगे। फिर दूसरा, तीसरा, और आठवाँ ब्याह किया। हर एक रानी के साथ आरंभ में इसी प्रकार की चिकनी और मीठी बातें करते होंगे। क्या मेरे साथ सदा ऐसा ही बरताव करेंगे या किसी दसवीं के साथ विवाह करेंगे और मुझसे ऐसे बरतेंगे जैसे इन आठ के साथ आजकल बरत रहे हैं।'' हालाँकि ऐसा हुआ नहीं। उनका प्रेम जीवन पर्यन्त ऐसे ही बना रहा तथा मानसिंह ने मृगनयनी के बाद फिर किसी और से विवाह नहीं किया। प्रेम के स्थायीत्व के लिए मृगनयनी ने राजा को संयम का पाठ भी पढ़ाया।

## 12.5 लेखकीय दृष्टि

वृंदावनलाल वर्मा ने यह उपन्यास एक ऐतिहासिक उपन्यास की तरह लिखा है। उन्होंने इतिहास की किसी नई दृष्टि की स्थापना नहीं की, वरन् अब तक प्रचलित मान्यताओं को ही इस उपन्यास में स्थान दिया है। उदाहरण के लिए वर्मा जी बताते जाते हैं कि तुर्क और पठान आक्रांता रहे हैं। उन्होंने जनता पर बहुत अन्याय, अत्याचार किया है और इस तरह वे भारतीय इतिहास के आदर्श पात्र नहीं हो सकते। फिर उनका एक दृष्टिकोण धार्मिक रहा है। वे भारत में इस्लाम का प्रचार करते रहना चाहते थे। इन शासकों के राजनीतिक स्वार्थ की पूर्ति के लिए वे मुल्लाओं का उपयोग करते थे, तब भी मुल्लाओं के अनुसार वे पूरी तरह चलते नहीं थे। उनका एक आन्तरिक अन्तर्विरोध इन इस्लामी धर्म गुरुओं से भी रहता था। हालाँकि शासक उस अन्तर्विरोध से निपट लेते थे।

इस दौर में किसी भी शासक का दृष्टिकोण राष्ट्रीय नहीं हुआ करता था। सब राजा, चाहे वे हिन्दू हों या मुसलमान अपने (राज) क्षेत्र को अपना मानते थे और उसी की रक्षा में लड़ते मरते थे। राजसिंह नरवर को पाने के लिए सिकन्दर का समर्थन कर देता है। सिकन्दर ने अपने भाई की हत्या कर दी थी, क्योंकि वह उसके अपने क्षेत्र को अस्थिर करना चाहता था। इस तरह लेखक पर्याप्त तटस्थता से इतिहास को पुनः प्रस्तुत करता है। उन्होंने इतिहास के तथ्यों और मान्यताओं के साथ छेड़–छाड़ नहीं किया।

इन राजाओं और शासकों का वर्णन करते हुए वृंदावनलाल वर्मा लिखते हैं कि राजा को प्रजा वत्सल होना चाहिए। प्रजा पर अत्याचार करने वाला राजा अच्छा नहीं माना जाता। मानसिंह जब किसी गरीब के घर जाकर स्वयं आटा पीसने लगता है, तो उसका यह कृत्य सराहनीय है और सफल राजा की पहचान है। राजा सिर्फ ब्राह्मणों और सेठों का ही नहीं होना चाहिए, उसे गरीबों का राजा भी होना चाहिए। इसी तरह राजा को विलासी और नारी लोलुप भी नहीं होना चाहिए। जब माण्डू के शासक ने अपने हरम में पन्द्रह हजार सुन्दरियों को इकट्ठा किया, तो उसे वर्मा जी ने सकारात्मक दृष्टि से अंकित नहीं किया। फिर भी उन्होंने राजाओं के लिए एक पत्नी व्रत की धारणा का



BHDC-109_4th proof.indd 221 8/6/2021 2:09:12 PM

समर्थन नहीं किया। बहुविवाह मध्यकालीन भारतीय राजाओं की आम कमजोरी रही है। वैसे वृंदावनलाल वर्मा मानते हैं और उपन्यास के लगभग सारे किसान पात्र भी मानते हैं कि राजा के राज में अत्याचार अवश्यंभावी है। उससे बचा नहीं जा सकता। उसे स्वीकार करना होता है। इसी तरह जनता की गरीबी भी एक तरह का स्वीकृत तथ्य है। इसके खिलाफ कोई विद्रोह नहीं होता।

उपन्यास में वृंदावनलाल वर्मा ने वर्णाश्रम धर्म की कठोरता की आलोचना की है। लाखी और अटल के जीवन के संदर्भ में उन्होंने अन्तर्जातीय विवाह का समर्थन किया है। उसे वे बहुत हद तक शास्त्र सम्मत सिद्ध करने की कोशिश करते हैं। इसके साथ यह भी तथ्य है कि नटों के प्रति उनका दृष्टिकोण सकारात्मक नही है। उनको वे छली, धोखेबाज और षड्यंत्रकारी सिद्ध करते हैं। नरवर में जब नटनी रस्सी से गिरकर मर जाती है तो लेखक के मन में उसके प्रति सहानुभूति जाग्रत नहीं होती, वरन् वह शेष पात्रों के साथ प्रसन्न होता है कि 'बला टल गई'।

जहाँ तक मानसिंह तोमर और मृगनयनी के प्रेम का प्रश्न है, वृंदावनलाल वर्मा प्रेम के उतने समर्थक नहीं हैं। प्रेम होना आसान है परन्तु प्रेम का निर्वाह बड़ी बात है। राजा मानसिंह ने मृगनयनी से किए हुए वादे को निभाया तथा जीवन भर उस प्रेम को बनाए और बचाए रखा। यही विशेषता अटल और लाखी में भी है। इसी तरह किसी भी पात्र की दृष्टि से प्रेम का पात्र मात्र यौन उपकरण नहीं होना चाहिए। माण्डू के सम्राट की दृष्टि में निन्नी और लाखी यौन उपकरण हैं। लेखक इस मत का समर्थन नहीं करता। मानसिंह और अटल की दृष्टि में भी मृगनयनी और लाखी यौन उपकरण नहीं है। वे उनसे प्रेम करते हैं। पिल्ली भी अटल को यौन उपकरण की दृष्टि से देखती है। लेखक ने इस तरह के मत का समर्थन नहीं किया।

**बोध प्रश्न–2**

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग सात–सात पंक्तियों में दीजिए :

   क) 'मृगनयनी' के प्रतिपाद्य पर विचार कीजिए।

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

   ख) 'मृगनयनी' उपन्यास के संदर्भ में वृंदावनलाल वर्मा की लेखकीय दृष्टि का विश्लेषण कीजिए।

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....



BHDC-109_4th proof.indd 222 8/6/2021 2:09:12 PM

## 12.6 संदर्भ सहित व्याख्या

**उद्धरण 1**

**''राजा ने अपना हाथ बढ़ाया, कहा,–'इस भाषा को संसार भर समझता है। अपना हाथ मेरे हाथ में दो।' गर्दन मोड़े हुए, कनखियों से देखते हुए, धड़कते कलेजे और अर्द्धस्मित के साथ निन्नी ने अपना काँपता हुआ धूल भरा हाथ उसके हाथ में दे दिया।**

**बोली, 'मैं नहीं जानती क्या कर रही हूँ। मेरी पत रखना।'**

**मानसिंह ने तुरन्त कहा, 'परमात्मा मेरा साक्षी है, तुम सदा मेरे हृदय की रानी और जीवन की शोभा रहोगी। समझ गई?'**

**'समझ गई।' बहुत धीरे से उनके मुँह से निकला।**

**'क्या कहा ?'**

**'आज्ञा का पालन करूँगी।'**

**'मेरी तरफ देखो।'**

**'लाखी उस झाड़ी के पीछे से झाँक रही होगी।'**

**निन्नी ने अपना हाथ उसके हाथ से छुटा लिया। छुटाते समय गीली आँखों उसकी ओर देखा। मानसिंह के नेत्रों से आभा सी बिखर रही थी। वह आभा उस गीली आँखों में समा गई।''**

**संदर्भ**

प्रस्तुत प्रकरण वृंदावनलाल वर्मा के चर्चित ऐतिहासिक उपन्यास 'मृगनयनी' से लिया गया है। इस उपन्यास में ग्वालियर के राजा मानसिंह तोमर और राई गाँव की गरीब गूजर कन्या निन्नी उर्फ मृगनयनी के प्रेम और विवाह का वर्णन किया गया है। प्रकरण का प्रारंभ राजा मानसिंह के विवाह–प्रस्ताव से होता है। मानसिंह प्रौढ़ है, समझदार है, जबकि मृगनयनी किशोरी है। उसे स्त्री–पुरूष के संबंधों की बहुत–सी बातें समझ में नहीं आती।

मानसिंह पहली बार मृगनयनी को देखते हैं और उस पर मुग्ध हो जाते हैं। वह मृगनयनी से विवाह करना चाहते हैं, परन्तु विवाह का यह प्रस्ताव मृगनयनी के सामने कैसे रखें। बड़ा से बड़ा और समझदार से समझदार व्यक्ति प्रेम प्रस्ताव देते समय अटक जाता है। ऐसे ही मानसिंह को भी समझ नहीं आता कि वह कैसे अपनी बात कहे, ताकि मृगनयनी सहमत हो जाए और उसके राजसी व्यक्तित्व की मान–मर्यादा भी बनी रहे।

**व्याख्या**

इस स्थिति से उबरने के लिए मानसिंह अपना हाथ आगे बढ़ाता है और कहता है कि इस भाषा को तो सारा संसार समझता है, जाहिर है कि जब सब समझते हैं तो तुम भी इस भाषा को समझती होगी। वैसे भी प्रेम में कई बार भाषा असमर्थ और अप्रासंगिक हो जाती है। आगे वह कहता है कि अपना हाथ मेरे हाथ में दे दो। यह प्रेम की स्वीकृति का लक्षण होगा। एकाएक इस प्रस्ताव को सुनकर मृगनयनी गरदन मोड़े हुए, लेकिन सीधी आँखों से उसे देख पाने में समर्थ नहीं होती। वह कनखियों से राजा को देखती है। उसका कलेजा धड़कने लगता है। होठों पर अर्द्धस्मिति आ जाती है। जो उसके संकोच और प्रसन्नता का लक्षण है। उसका हाथ काँप रहा है। किसान पुत्री होने के कारण उसका हाथ धूल से भरा हुआ है। इस संवेदनशील बिम्ब में खड़ी मृगनयनी अपना हाथ राजा के हाथ में दे देती है। अंतर्द्वंद्व से घिरी वह बोलती है कि पता नहीं मैं क्या



BHDC-109_4th proof.indd 223 8/6/2021 2:09:12 PM

कर रही हूँ ? सही कर रही हूँ या गलत कर रही हूँ ? इतना विवेक मृगनयनी में नहीं है। लेकिन फिर भी एक बात कहती है कि 'मेरी पत रखना' अर्थात् मेरे विश्वास, मेरे मान को बनाए रखना। उसके लिए यह बहुत बड़ा निर्णय है। तब राजा परमात्मा को साक्षी मानकर कसम खाता है कि तुम हमेशा मेरे हृदय की रानी रहोगी। तुम्हारे होने से मेरे जीवन की शोभा बढ़ेगी।

राजा के यह पूछने पर कि मृगनयनी को समझ में आ गया कि इस क्षण यह सब क्या हो रहा है, तब मृगनयनी उसे सीधा जवाब न देकर कहती है कि मैं सदा आपकी आज्ञा का पालन करूँगी। राजा बड़ा है, इस बात का एहसास मृगनयनी को है। संकुचित मृगनयनी अपनी नजर नीची किए हुए रहती है। तभी मृगनयनी को एहसास होता है कि यहाँ हम दो ही नहीं है, लाखी भी तो है और लाखी झाड़ी के पीछे खड़ी हुई इस गोपन प्रेम–प्रसंग को देख रही होगी। यह संदर्भ देती हुई वह अपना हाथ छुड़ा लेती है। इस क्षण मृगनयनी की आँखें भावातिरेक से गीली हो जाती हैं। वह उन गीली आँखों से मानसिंह की तरफ देखती है। मानसिंह का व्यक्तित्व आभायुक्त गरिमा से भरा हुआ था। इस आभा को मृगनयनी ने देखा और वह आभा उसकी गीली आँखों में समाहित हो गई। नेत्रों के रास्ते से वह गरिमामयी छवि मृगनयनी के मन में बस गई। प्रेम प्रस्ताव का यह प्रकरण पूर्ण हो गया। तब राजा लाखी को आवाज लगाता है। इस प्रकरण को संपन्न होने के लिए ही वह बहाना बनाकर हट गई थी। मानसिंह परिपक्व है अतः इसे समझता है और लाखी की इस हरकत पर आत्मीयता से कहता है कि लाखी, अब तुम आ जाओ। जिन तीरों का बहाना बनाकर के तुम यहाँ से चली गई थी, वे तीर तुम्हें मिल गए होंगे। इस तरह मृगनयनी और मानसिंह का प्रथम मिलन सम्पन्न होता है।

**उद्धरण 2**

**''अपना राजा है बहुत अच्छा। बड़ा रसिया है। है न ?'**

**'रसिया न होता तो उसको हाथी पर कैसे चढ़ा देता ? सलहज है उसकी। साले को भी हाथी पर चढ़ा दिया! अच्छा तो रहा।'**

**'बाई! रूप–सरूप ने बिठला दिया हाथी पर। क्या सचमुच तुर्कों की सेना को रस्सी और उस नसेनी पर से नट उतार लाते नगर में ?'**

**'की तो लाखी ने बहादुरी। इतना तो कहना पड़ेगा।'**

**'इतनी कि राजा घोड़े पर और वह छोकरी हाथी पर! पर हाँ रूप सुनाई है उसमें। तुमने लखा या नहीं, जब हाथी पर चढ़ने को जाने लगी, तब कैसी आँख उठाई थी राजा पर ?'**

**'राजा उसको ग्वालियर ले जा कर महलों में डाल लेगा।'**

**'राजा जो ठहरा, चाहे जो करे। पर है अच्छा। ठीक समय पर आ गया नहीं तो नरवर राख हो जाती। उसी ने बचाया।''**

**संदर्भ**

प्रस्तुत प्रकरण वृंदावनलाल वर्मा के चर्चित ऐतिहासिक उपन्यास 'मृगनयनी' से लिया गया है। उपन्यास में लाखी निन्नी की सहेली है, जो बाद में उसके भाई अटल से विवाह करती है। यह विवाह भी प्रेम विवाह होता है दोनों का अन्तर्जातीय विवाह होता है। इस प्रकरण में नरवर युद्ध के बाद का वर्णन है।

नरवर में लाखी और अटल नटों के साथ आ जाते हैं। नट षड्यंत्रपूर्वक लाखी को माण्डू सुल्तान गयासुद्दीन को सौंपना चाहते हैं। लाखी कुशलतापूर्वक नटों की इस योजना को विफल कर देती है। नट एक रात को पेड़ से रस्सा बाँधकर खुद को और बाद में लाखी को किले के बाहर भिजवाना चाहते हैं। उसी रस्से से चढ़कर गयासुद्दीन की



BHDC-109_4th proof.indd 224 8/6/2021 2:09:12 PM

सेना किले में प्रवेश करना चाहती है। लाखी अंत में उस रस्से को काट देती है। फिर राजा मानसिंह आते हैं और लाखी और अटल को हाथ पर बिठाकर अपने डेरे पर ले जाते हैं। नरवर की जनता इस पूरे घटनाक्रम को देखती है। इस अवसर पर नरवर की स्त्रियाँ निस्संकोच होकर इस पर टिप्पणी करती हैं।

**व्याख्या**

एक स्त्री टिप्पणी करती है कि अपना राजा बहुत अच्छा है। यह टिप्पणी मानसिंह के व्यक्तित्व के बड़प्पन की स्वीकृति है। आधी टिप्पणी के बाद वह स्त्री बोलती है बड़ा 'रसिया' है। यह राजा के स्त्री अनुरक्त मन की ओर इंगित करता है। बड़प्पन तक तो ठीक है। अच्छा है, परन्तु 'रसिक' है, यह टिप्पणी भी साथ ही मिलती है। दूसरी स्त्री उसके मत का समर्थन करती है तथा उसके मत को आगे बढ़ाती है। अगर वह 'रसिया' न होता तो लाखी को हाथी पर कैसे बिठा देता। यहाँ यह भी ध्यान दें कि मानसिंह घोड़े पर बैठता है ? लाखी के लिए विशेष रूप से हाथी मँगवाया गया और लाखी को हाथी पर बिठा दिया। आगे संवाद में 'रसिया' को थोड़ा–सा उचित बनाते हुए स्त्री कहती है कि लाखी मानसिंह की सरहज अर्थात् साले की पत्नी है। मानसिंह रिश्ते की इस मर्यादा की रक्षा कर रहा है। फिर अकेली लाखी को नहीं बिठाया, साले अटल को भी बिठा दिया। मानसिंह का यह कृत्य उसके 'अच्छा' होने का प्रमाण है।

दूसरी स्त्री ने इस प्रकरण की नई व्याख्या की। लाखी खूबसूरत है और उसके सौन्दर्य ने उसको हाथी पर बिठा दिया। ऐसा इसलिए क्योंकि एकाएक उस स्त्री को लगा कि लाखी की तारीफ भी होनी चाहिए। साथ ही, विषय को लाखी से हटाकर तुर्कों पर ले आती हैं। क्या सचमुच तुर्कों की सेना उस नसैनी और रस्सी के सहारे नरवर में प्रवेश कर जाती। लाखी का पक्ष लेती हुई एक स्त्री बोली कि बाकी चीजें तो छोड़ो, परन्तु लाखी ने बहादुरी का काम किया। यह बात तो हम को कहनी पड़ेगी और सबको माननी ही पड़ेगी। एक अन्य स्त्री ने इस बहादुरी पर टीका–टिप्पणी की कि (लाखी ने तो) इतनी बहादुरी की कि राजा स्वयं घोड़े पर बैठा है और यह 'छोकरी' हाथी पर। वरिष्ठता क्रम में राजा को हाथी पर बैठना चाहिए था। लाखी के सौन्दर्य और आत्मीयता की अभिव्यक्ति है– टिप्पणी अगली कुछ भी कहो लाखी के रूप में लावण्य तो है। तुमने देखा या नहीं देखा, पता नहीं। जब वह हाथी पर बैठने के लिए जाने लगी तो राजा को कैसे आदर व ममता की नजर से देखा था। इस पर स्त्री जो टिप्पणी करती है वह सामान्यतः राजाओं पर टिप्पणी है और इस स्त्री को आशंका है कि राजा इस स्त्री को अपने महलों में डाल लेगा। इस पर कोई विवाद नहीं होता। सहमति में बात को आगे बढ़ाते हुए कहा गया कि वह राजा है, जो चाहे करे, उसे कौन रोक सकता है। फिलहाल यह महत्वपूर्ण बात नहीं है। महत्वपूर्ण बात यह है कि राजा मानसिंह ठीक समय पर नरवर में आ गया अन्यथा तुर्क सेना नरवर को तहस–नहस कर देती। नरवर को तो इसी राजा ने बचाया। इसलिए अन्ततः राजा मानसिंह नरवर की प्रजा की दृष्टि में 'अच्छा' है।

**उद्धरण 3**

**''चुपचाप बैठी हुई खेत के कोनों पर आँख पसारे थी। पवन के झोकों के कारण कभी–कभी मेंढ़ के छोटे–छोटे झाड़–झकूटे हिल जाते थे तो उसकी किसी वन्य पशु के आ जाने की शंका हो जाती थी। तुरंत कमान पर तीर चढ़ा लेती थी।**

**दो पहर रात गये आसपास के खेतों की हा–हा हू–हू कम हो गई और दूर के खेतों की बहुत क्षीण। चांदनी छिटक आई कि दूर का भी स्पष्ट दिखाई पड़ने**



BHDC-109_4th proof.indd 225 8/6/2021 2:09:12 PM

**लगा। जिन झकूटों का निन्नी को कई बार जंगली पशु होने का भ्रम हुआ था, अब वे शंका का कारण न रहे। परंतु बीच–बीच में आँख झपकने लगी। झपकियों के बीच में अधमुंदी आँख से जग पड़ने पर कभी सुअर और कभी जंगली भैंसा हवा के सर्राटे के साथ दिखलाई पड़–पड़ जाता था। वह आया, वह आया और गया! मन को भासने लगता। हाथ तीर–कमान पर जाता।''**

इस अंश की व्याख्या उद्धरण 1 तथा 2 के अनुसार स्वयं करने का प्रयत्न कीजिए।

## 12.7 सारांश

- 'मृगनयनी' वृंदावनलाल वर्मा का ऐतिहासिक उपन्यास है। इस उपन्यास में ग्वालियर के राजा मानसिंह तोमर और ग्रामीण कन्या निन्नी उर्फ मृगनयनी की प्रेम कहानी का वर्णन किया गया है। मानसिंह तोमर का समय सन् 1486 तक का है।
- 'मृगनयनी' अत्यंत सुन्दरी और वीर स्त्री थी। उसे तीर चलाना आता था। राजा ने उसे देखा उसकी शक्ति को देखा और विवाह का प्रस्ताव दिया। फिर शास्त्र विधि से उनका विवाह हो गया।
- 'मृगनयनी' और लाखी का अपहरण करने के लिए माण्डू के शासक ने घुड़सवार भेजे, जिन्हें इन दोनों स्त्रियों–मृगनयनी और लाखी, ने मार डाला। मृगनयनी की सहेली लाखी और मृगनयनी के भाई अटल का विवाह होता है। अलग–अलग जातियों से संबद्ध होने के कारण इन्हें जात–पाँत की समस्या से जूझना पड़ता है। गाँव का पुजारी बोधन इनका विवाह करने से इन्कार कर देता है।
- ग्वालियर के राजा तीन बार युद्ध करते हैं। इसमें एक बार माण्डू के शासक गयासुद्दीन को नरवर में पराजित करता है तथा दिल्ली के शासक बहलोल लोदी और सिकंदर लोदी से युद्ध करता है। इन रक्षात्मक युद्धों में मानसिंह अपराजेय रहता है।
- मृगनयनी, बैजू बावरा से संगीत, कला से चित्रकला और विजय जंगम से शास्त्र ज्ञान अर्जित करती है। इससे उसके व्यक्तित्व का विकास होता है।
- मानसिंह संगीत का जानकार है तथा ग्वालियर में कई सांस्कृतिक इमारतों का निर्माण करता है।
- 'मृगनयनी' में इतिहास और कल्पना का सामंजस्य दिखाई देता है।
- वृंदावनलाल वर्मा तत्कालीन शासकों के अत्याचारों का वर्णन करते हैं तथा उनका विरोध करते हैं। वे वर्णाश्रम धर्म की कट्टरता का समर्थन नहीं करते। प्रजा हितैषी राजा की प्रशंसा भी करते हैं।

## 12.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

**बोध प्रश्न–1**

1. क) नौ, ख) तैलंग, ग) सिकंदर लोदी।
2. क) ख्वाजा मटरू ख) राजसिंह कच्छवाहा, ग) नसीरूद्दीन।
3. क) सही ख) गलत ग) गलत

**बोध प्रश्न–2**

4. क) के उत्तर के लिए देखिए 12.4
   ख) के उत्तर के लिए देखिए 12.5



BHDC-109_4th proof.indd 226 8/6/2021 2:09:12 PM

# इकाई 13 'मृगनयनी' के चरित्र

**इकाई की रूपरेखा**


13.0 उद्देश्य

13.1 प्रस्तावना

13.2 मृगनयनी

13.2.1 अतीव सुन्दरी और शक्तिशाली

13.2.2 आत्मसम्मान

13.2.3 न्यायप्रिय और उदार

13.2.4 साहसी

13.3 मानसिंह तोमर

13.3.1 शासन–व्यवस्था

13.3.2 क्षमाशील प्रवृत्ति

13.3.3 परिवार में

13.4 लाखी और अटल

13.4.1 जाति–प्रथा का विरोध

13.4.2 साहसी

13.4.3 स्वाभिमानी

13.4.4 प्रेम

13.5 नट

13.6 मुस्लिम सुल्तान

13.6.1 निर्दयी और हृदयहीन

13.6.2 व्यक्तित्व–वर्णन

13.6.3 स्त्री–लोलुप और विलासी

13.6.4 धार्मिक साम्प्रदायिक दृष्टि

13.7 सारांश

13.8 बोध प्रश्नों के उत्तर


## 13.0 उद्देश्य

यह इकाई 'मृगनयनी' उपन्यास के चरित्रों की विशेषताओं पर आधारित है।

इस इकाई के पढ़ने के उपरांत आप :

- उपन्यासों के पात्रों के चरित्र–चित्रांकन का आधार समझ सकेंगे;
- मृगनयनी और राजा मानसिंह की चारित्रिक विशेषताओं का विश्लेषण कर सकेंगे;
- 'मृगनयनी' में चित्रित लाखी और अटल के चरित्र को समझ सकेंगे; और
- 'मृगनयनी' में अभिव्यक्त मुस्लिम बादशाहों की कार्य पद्धति को बता सकेंगे।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

## 13.1 प्रस्तावना

किसी भी उपन्यास की रचना में कथा के साथ–साथ पात्रों के चरित्र के विकास और विश्लेषण करने की आवश्यकता होती है। पात्रों के बिना केवल कथा के विवरण और उसके विकास से उपन्यास का ढाँचा तैयार नहीं होता। वह तो सिर्फ इतिहास लेखन बन जाएगा, उपन्यास रचना नहीं। उपन्यास के चरित्र–चित्रण के दो–तीन मात्र तरीके हैं, जिनके माध्यम से उपन्यासकार अपने पात्रों का ढाँचा निर्मित करता है। इन प्रविधियों के संदर्भ में आपको इस पाठ्यक्रम की अन्य इकाइयों में विस्तृत जानकारी दी गई है। किसी ऐतिहासिक रचना में चरित्रों की नियति और उनका विकास पूर्व निर्धारित होता है। उसमें आप बहुत अधिक परिवर्तन नहीं कर सकते। उनके भीतरी तर्कों को आप विकसित करते हैं या उन्हें पुनर्व्याख्यायित कर सकते हैं, परन्तु उन्हें बदल नहीं सकते। उदाहरण के लिए 'मृगनयनी' में राजा मानसिंह तोमर और मृगनयनी का विवाह होना निश्चित है, इसलिए यह विवाह संपन्न होता है। लेखक के रूप में आप लाखी से मानसिंह का विवाह नहीं करवा सकते या उदाहरण के लिए नरवर में गयासुद्दीन मानसिंह के हाथों पराजित हुआ था यह ऐतिहासिक तथ्य है। उसे वापिस माण्डू लौटना पड़ा। इस तरह के ऐतिहासिक तथ्यों, घटनाओं को उपन्यासकार बदल नहीं सकता। अतः उपन्यास के लेखक को इतिहास की संगति में ही अपनी रचना को विकसित करना होता है।

किसी पात्र को पाठक कैसे जान पाता है या लेखक कैसे उसके चरित्र को दिखाता है, इस दृष्टि से पहला तरीका तो यही है कि पात्र स्वयं अपने बारे में ही कहता है। वह अपने संदर्भ में जानकारी देता है तब हम उसके बारे में जान पाते हैं। दूसरे, वह जो कुछ करता है, उन कर्मों से भी उसके चरित्र की जानकारी मिल पाती है। यदि कोई पात्र कहता कुछ है और करता कुछ और है, तब हम इस असंगति में भी उसके चरित्र की विशेषता को समझ सकते हैं। वह दूसरे पात्रों के बारे में टिप्पणी करता है, अपनी राय देता है। इन विचारों और टिप्पणियों से हम दोनों पात्रों को समझ पाते हैं। इसमें संभव है कि टिप्पणी देने वाले पात्र का अपना कोई निहित स्वार्थ हो। वह अपने हित–अनहित को ध्यान में रखते हुए टिप्पणी कर सकता है। उदाहरण के लिए ग्वालियर से निकाले जाने के बाद यदि 'कला' टिप्पणी करती है कि 'मानसिंह का व्यक्तित्व बड़ा' था, तो यह एक अनुभवपरक टिप्पणी है। इससे मानसिंह के बारे में हमारी अलग समझ बनती है। कई बार पात्र अपनी तरफ से किसी मिथ्या बात पर हामी भर लेता है, परन्तु वास्तव में वह उसकी राय नहीं है। इससे भी हमें उस पात्र की मानसिकता के बारे में पता चलता है। उपन्यास में आप देखेंगे कि नटों से बातचीत के क्रम में लाखी सहमति देती हुई दिखाई देती है कि वह बादशाह के पास जाने के लिए राजी है, परन्तु दरअसल अंतस्तल से वह राजी नहीं है। उसकी इस चतुराई में भी लाखी का व्यक्तित्व प्रकट होता है।

कई बार पात्रों के कर्मों से पात्रों का चरित्र प्रकट होता है। बड़ी रानी सुमनमोहिनी, मृगनयनी और लाखी को विष खिला कर मार डालना चाहती है। मृगनयनी बच तो जाती है परन्तु इससे सुमन मोहिनी की मृगनयनी के प्रति ईष्या और आक्रोश प्रकट हो जाता है। लाखी अटल पर मुग्ध है, यह उपन्यास के आरंभ से ही हमें पता चल जाता है, लेकिन मृगनयनी के मन या जीवन में कोई पुरुष नहीं है इसकी जानकारी भी हमें पूर्व में ही मिल जाती है। अतः वह जब राजा मानसिंह से विवाह करती है तो उसके मन में कोई दुराव–छिपाव या द्वंद्व नहीं होता। यदि ऐसा होता तो वह जीवन भर मानसिक संताप में रहती। लेखक ने लाखी को इस संकट से बचाया तथा मृगनयनी के सामने यह संकट आने ही नहीं दिया।

## 13.2 मृगनयनी

इस उपन्यास का विशिष्ट पात्र मृगनयनी है। अतः सबसे पहले मृगनयनी के चरित्र की विशेषताओं पर विचार किया जाएगा।



BHDC-109_4th proof.indd 228 8/6/2021 2:09:12 PM

### 13.2.1 अतीव सुन्दरी और शक्तिशाली

इस उपन्यास के आरंभ में मृगनयनी अपनी सहेली लाखी के साथ अठखेलियाँ करती हुई आती है। किशोरावस्था की, ''आयु लगभग पन्द्रह–सोलह वर्ष। परन्तु निन्नी बलिष्ठ और पुष्टकाय थी, लाखी दुबली और छरहरी।'' यहाँ मृगनयनी का नाम निन्नी है। उसके मृगनयनी नाम का पता पाठकों को तब चलता है, जब मटरू, माण्डू के शासक गयासुद्दीन के सामने निन्नी और लाखी के सौन्दर्य की प्रशंसा करता है। निन्नी अतीव सुन्दरी थी, परन्तु लेखक ने उसके सौन्दर्य का नख–शिख वर्णन नहीं किया। उसके सौन्दर्य का एहसास इस तथ्य से होता है कि उस युग के शासक उसे पाना चाहते थे। इसके अलावा मानसिंह जब पहली बार निन्नी को देखते हैं, तो देखते ही उसकी शक्ति और सौन्दर्य से प्रभावित हो जाते हैं। जहाँ तक निन्नी के बल का प्रश्न है, एक बार उसने अपने गाँव में अरने भैंसे को मार गिराया था तथा मरे हुए सुअर को उठाकर गाँव में ले आई थी। उपन्यास में यह कथा बार–बार कही जाती है। इसी तरह एक बार राजा मानसिंह के राई आने पर शिकार का आयोजन होता है। इसमें मृगनयनी ने नाहर को एक ही तीर से मार दिया। उसका निशाना भी पक्का था क्योंकि उसने अरने के माथे पर बरछी मारी थी और दोनों ही पशु मर गए। राजा अभिभूत हो गया। राजा ने यह भी देखा कि लाखी ने अरने भैंसे के ''एक सींग को दोनों हाथों से पकड़ कर'' प्रचंड वेग से धक्का दिया। जिससे अरना मुड़ गया और गिर गया।

इससे पहले भी लाखी ने मृगनयनी की शक्ति का वर्णन करते हुए कहा था कि तुम्हारी बाँहें ''साँप की रस्सी जैसी है। हे भगवान् कैसी कस जाती है!'' इसी क्रम में लेखक लाखी और निन्नी के सौंदर्य और शक्ति का वर्णन करते हैं। ''दोनों ने अपने लहँगों को घुटनों के ऊपर समेटकर कसकर कच्छा बाँधा। दोनों की गोरी–गोरी जाँघें आधी उधड़ गईं। लाखी की पतली–सुती हुई–सी थीं और निन्नी की माँसल पट्ठों वाली, जैसे बैठकें लगाने वाले किसी पहलवान की हों।'' इसी तरह गयासुद्दीन के कुछ घुड़सवार इन दोनों का अपहरण करने के लिए आते हैं, जिन्हें ये दोनों मार भगाती हैं। उस वक्त बातचीत के क्रम में लाखी, निन्नी के सौंदर्य की प्रशंसा करते हुए कहती है कि ''ये लोग हमें पकड़ने के लिए आए थे। क्योंकि तुम्हारे गोरेपन की, तुम्हारी आँखों की, तुम्हारी छवि की चारों दिशाओं में कीर्ति फैल गई है।'' इस तरह के छिटपुट वर्णन से मृगनयनी के सौन्दर्य और उसकी हिम्मत का अंकन दृष्टिगत होता है।

### 13.2.2 आत्मसम्मान

मृगनयनी के चरित्र में आत्मसम्मान और आत्म विश्वास कूट–कूट कर भरा हुआ था। लेकिन यह आत्मविश्वास ग्वालियर की रानी बनने के बाद नहीं आया अपितु उससे पूर्व ही राई में भी यह आत्म विश्वास उसमें दृष्टिगत होता है। अतः राजा मानसिंह ने जब विवाह का प्रस्ताव दिया, तो मृगनयनी ने सहज रूप में उसे स्वीकार नहीं किया। उसने प्रश्न रखा कि राजा उसको समानता के स्तर पर स्वीकार कर रहा है या नहीं ? इस अवसर पर ''निन्नी ने धीरे से कहा, 'गरीबों और बड़ों का जन्म–संग कैसा ?' मानसिंह ने सुन लिया। उसको सुनाने के लिए ही कहा गया था। मानसिंह का उत्तर था–'आदिकाल में सबके पुरखे गरीब ही थे, अपने शौर्य से बढ़े। शौर्य में तुम मुझसे कम नहीं हो।'' इसके बाद भी मृगनयनी ने राजा के सामने अपनी शर्तें रखी। ये शर्तें उसके आत्मविश्वास और आत्मसम्मान की प्रतीक हैं।

यही आत्मसम्मान उसका ग्वालियर में भी बना रहा। वहाँ जाने के बाद उसे पता चला कि राजा की आठ रानियाँ पहले से ही हैं। इसे राजाओं की प्रथा और परंपरा मानकर उसने स्वीकार कर लिया, लेकिन जीवन भर उसने पति पर अपना अधिकार बनाए रखा। यद्यपि वहाँ जाने के बाद उसे सह–पत्नियों का विरोध और उपहास झेलना पड़ा। इसके



BHDC-109_4th proof.indd 229 8/6/2021 2:09:12 PM

लिए उसने प्रयासपूर्वक कला, साहित्य–संस्कृति और शास्त्रीय ज्ञान सीखकर स्वयं को राज परिवार में रहने योग्य बनाया। हालाँकि उसके चरित्र के वर्णन में इस प्रक्रिया का अभाव खटकता है कि एक ग्रामीण बालिका का रानी के रूप में रूपांतरण किस तरह से हुआ। उसकी परेशानियों की तरफ लेखक का ध्यान नहीं गया। यद्यपि राजमहल में वह अपने व्यक्तित्व के बड़प्पन से सभी को प्रभावित करने में सफल हुई। यहाँ तक कि बातचीत में और व्यवहार में उसने बड़ी रानी को छोटा साबित कर दिया। वहाँ रहते हुए उसने पति का पूरा ध्यान रखा। अपने व्यवहार से मानसिंह को कोई कष्ट न हो, इसका वह निरंतर प्रयास करती रही। यहाँ तक कि उत्तराधिकार के प्रश्न पर बड़ी रानी के ज्येष्ठ पुत्र को उतराधिकारी घोषित करके परिवार के इस विवाद को भी मृगनयनी ने ही शांत किया।

मानसिंह तोमर और मृगनयनी का प्रेम स्थायी कैसे बना रह सकता है, इस प्रश्न पर मृगनयनी विचार करती रही और वह उसमें सफल हुई। ''नियम–संयम के साथ रहिए और मुझको रहने दीजिए। मैं चाहती हूँ कि उन गुणों के साथ मेरी देह में भी वही बल बना रहे जिसको राई से लेकर आई हूँ, जिसके भरोसे मरे हुए सुअर को पीठ पर लादकर गाँव तक लाई थी।'' सिर्फ इतना ही नहीं वह राजा के बारे में भी सकारात्मक दृष्टि से सोचती है–''मैं चाहती हूँ, आपका शरीर, उत्साह, यश और सूरमापन दिन दूना दृढ़ और चमत्कार से भरा हुआ बना रहे। जिस राजा में ये गुण न हों उसका राज आजकल दो महीने भी नहीं टिक सकता।'' इस तरह मृगनयन के प्रयासों से उन दोनों का प्रेम स्थायी बना रह सका और मृगनयनी का सम्मान भी।

### 13.2.3 न्यायप्रिय और उदार

मृगनयनी उदार और संवेदनशील पात्र है। लाखी, मृगनयनी की सहेली रही है। बाद में लाखी का मृगनयनी के भाई अटल से विवाह हो गया। राजमहल में लाखी का सम्मान बराबर बना रहे, इसका ध्यान मृगनयनी हमेशा रखती थी। एक दिन उसने देखा कि उसके पैरों में तो सोने के जेवर हैं लेकिन लाखी के पैरों में चाँदी के जेवर हैं। यह भेद भाव उसे पसंद नहीं आया। यद्यपि लाखी ने उसे समझाया कि परंपरागत रूप से रानी ही पैरों में सोने के जेवर पहन सकती है। दूसरी कोई औरत नहीं पहन सकती। तब उदारता का परिचय देते हुए मृगनयनी कहती है, ''मैं चाहे नंगे पैर रहूँ, कल से सोने के गहने नहीं पहनूँगी। तुम चाँदी के पहनो और मैं सोने के! यह नहीं हो सकता।'' लेकिन लाखी बहुत अनुनय–विनय कर मृगनयनी को राजी करती है कि वह इस बात को और अधिक न उठाए। मृगनयनी को यह बात भी हमेशा बहुत खटकती है कि लाखी और अटल का अभी तक सामाजिक रूप से विवाह नहीं हुआ। अतः सब पात्रों अर्थात् अटल और लाखी के भी ग्वालियर आने पर वह राजा से निवेदन करती है कि अब लाखी और अटल का विवाह करवा दें। राजा बोधन पंडित को कहते हैं, परन्तु बोधन पंडित मना कर देता है। राजा को क्रोध आता है, परन्तु फिर भी विवाह के मंत्र बोधन नहीं पढ़ता। अंततः विजय जंगम के द्वारा यह विवाह–संस्कार संपन्न करवाया जाता है।

### 13.2.4 साहसी

ग्वालियर आने के बाद और रानी बनने के बाद मृगनयनी को साहस और वीरता पूर्ण कार्य करने के अवसर नहीं मिलते। तब भी वह विचार के स्तर पर वहाँ भी साहसी है। राजा मानसिंह जब नरवर में युद्ध के लिए जाते हैं, तब मृगनयनी भी युद्ध में शामिल होना चाहती है, परन्तु मानसिंह उसे इसकी इजाजत नहीं देते। इसके अलावा वे युद्ध के दिनों में रानियों द्वारा किए गए जौहर पर भी विचार करते हैं। ''पहले की सतियों ने आग और चिता को जितना प्यार किया, उसके बराबर तीर और तलवार के साथ भी करना चाहिए था।'' मृगनयनी सोचती है और कहती है, ''वीणा को बजाते–बजाते, काम पड़ने पर, यदि तुरंत तलवार न उठा पाई, कोमल सेज पर सोते–सोते संकट आने



BHDC-109_4th proof.indd 230 8/6/2021 2:09:12 PM

पर यदि तुरंत ही उछलकर कमर न कसी, ध्रुवपद गाते–गाते शत्रु के सामने आ खड़े होने पर यदि तुरंत गरजकर चुनौती न दे पाई, जिन कानों में मीठे स्वरों की रसधारा बह–बहकर जा रही थी, उन्हीं कानों में यदि रणवाद्यों और कड़खों की धुन न समा पाई तो ऐसी वीणा, सेज और ध्रुवपद की तानों का काम ही क्या ?'' हालाँकि मृगनयनी के जीवन में ऐसा कभी अवसर आया नहीं। यदि आता तो वह अवश्य ही संघर्ष का वरण करती, जौहर का नहीं।

## 13.3 मानसिंह तोमर

इस उपन्यास के नायक ग्वालियर के महाराजा मानसिंह तोमर हैं। उपन्यास में उनकी उपस्थिति बहुत बाद में होती है जबकि मृगनयनी और लाखी का प्रवेश उपन्यास में बहुत पहले हो जाता है। मृगनयनी किशोरावस्था में उपन्यास में आती है, जबकि मानसिंह युवा एवं कुशल राजा के रूप में उपन्यास में आते हैं। उनका चरित्र स्थिर हो चुका है। वे बहलोल लोदी से युद्ध जीत चुके हैं और इस युद्ध के पश्चात वे ग्वालियर के किले के नवनिर्माण में लगे हुए हैं। योजनाएँ बना रहे हैं, उन्हें क्रियान्वित कर रहे हैं। ऐसे में वे एक दिन मृगनयनी के शौर्य और सौन्दर्य की चर्चा सुनते हैं। इससे उनके मन में उत्सुकता जाग्रत होती है। यह उत्सुकता मृगनयनी के शौर्य को, धनुष कला को देखने की होती है। निन्नी/मृगनयनी का सौन्दर्य देखकर राजा मुग्ध होता है, परन्तु इससे पूर्व वह मृगनयनी की धनुष विद्या का कायल होता है। मृगनयनी के शौर्य, सौन्दर्य और साहसी व्यक्तित्व को देखकर मानसिंह तोमर प्रभावित होताा है। वह तुरंत मृगनयनी से विवाह का निर्णय लेता है। मृगनयनी के सामने प्रस्ताव रखता है और उससे विवाह कर लेता है। यह प्रस्ताव करते हुए यहाँ मानसिंह के चरित्र की विशिष्टता उजागर होती है। वह अपनी और साथ ही साथ मृगनयनी की मर्यादा के अनुरूप व्यवहार करता है। मानसिंह जब विवाह प्रस्ताव रखता है, तब मृगनयनी के साथ समानता के स्तर पर आकर वार्तालाप करता है। यहाँ वर्गभेद, पदभेद, स्तर भेद सब समाप्त हो जाते हैं। मानसिंह स्वयं इस भेद को समाप्त करता है। इस कारण मानसिंह का चरित्र ऊपर उठ जाता है। यही नहीं, वह मृगनयनी के भाई अटल की मर्यादा को भी बनाए रखता है। हालाँकि मानसिंह की इच्छा थी कि उसका और मृगनयनी का विवाह ग्वालियर में हो, परन्तु भाई ने अपने परिवार की परंपरा का जिक्र करके राई में विवाह करने का प्रस्ताव दिया तो मानसिंह ने बिना किसी हिचकिचाहट के इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। विवाह के संदर्भ में सारी व्यवस्था राई में ही कर दी। विवाह की जो दो–तीन शर्तें मृगनयनी ने रखी थी, उन शर्तों को भी मानसिंह ने उदारतापूर्वक स्वीकार कर लिया और उनका पूर्णतः निर्वाह भी किया। मध्यकाल में किसी रानी का यह कहना कि '' मैं ग्वालियर में जाकर परदा नहीं करूँगी'' और इसे मान लेना उस समय भी बहुत बड़ी और महत्वपूर्ण बात थी।

### 13.3.1 शासन–व्यवस्था

विवाह से पूर्व राजा की दिनचर्या का वर्णन करते हुए वृंदावनलाल वर्मा ने उपन्यास में लिखा, ''दोपहरी के समय को छोड़कर दिन में राजा मानसिंह किसी–न–किसी काम में व्यस्त रहता था। लोगों से मिलने का समय नौ बजे से बारह बजे तक। न्याय का शासन तीसरे पहर की अंतिम घड़ियों में। चौथे पहर के आधे भाग में सेना की तैयारी और अश्वारोहण; दिन के पहले पहर की तरह। रात के पहले पहर में भोजन और राज्य–व्यवस्था की चर्चा, दूसरे पहर में संगीत। यह कार्यक्रम गरमी की ऋतु में कुछ घट–बढ़ जाता था।'' इन व्यस्तताओं के साथ–साथ पड़ोसी राज्यों से कूटनीतिक संबंध, सुरक्षा के लिए आवश्यक गुप्तचरों का कार्य आदि सभी कार्य सुचारू रूप से चल रहे थे। प्रजा में किसी को कोई कष्ट तो नहीं है, इस विषय की जानकारी राजा मानसिंह स्वयं लेता था। उदाहरण के लिए एक बार रात में एक गरीब परिवार भूखा और बीमार था। घर में आटा



BHDC-109_4th proof.indd 231 8/6/2021 2:09:12 PM

नहीं था। पीसने की हिम्मत नहीं थी। तब मानसिंह भेष बदलकर वहाँ पहुँच जाता है और उनके लिए गेहूँ पीसने लगता है। इसी क्रम में वह कहता है आप लोग राजा की मुफ्त भोजनशाला 'सदावर्त' में खाना–खाने क्यों नहीं चले जाते ? उसकी इस बात पर वह दम्पति उत्तर देता है कि हम भिखमंगे नहीं है, मजदूर हैं, कमाकर खाते हैं। यहाँ अंततः राजा पहचान में आ जाता है और इस प्रकरण के बाद दवा, खाना, तेल आदि भिजवाता है और घोषणा करता है कि ''मजदूरों के लिए अच्छे मकान बनवाऊँगा, औषधालय खोलूँगा और देखूँगा, कोई भी मजूर भूखा न रहे।'' मजदूर की प्रतिक्रिया है–''सुना था कि महाराज ब्राह्मणों, पंडितों और सेठों के हैं, आज जाना कि मजूरों–किसानों के भी हैं।'' यह मानवीय दृष्टि उसकी प्रजा के सभी समूहों के प्रति रहती है। राई के गरीब किसानों को देखकर उसके मन में प्रश्न उठता है कि क्या मैं इन गरीब किसानों का राजा हूँ। यह उसकी संवेदनशील शासन व्यवस्था का द्योतक है।

### 13.3.2 क्षमाशील प्रवृत्ति

यद्यपि मानसिंह राजा है, शक्तिशाली है, इस के चलते किसी को भी दंडित कर सकता है, लेकिन अनेक अवसरों पर वह अपराधी को क्षमा कर देता है। राई का पंडित बोधन, राजा के आदेश के बावजूद लाखी और अटल का विवाह नहीं करवाता। उसे पता चलता है कि मानसिंह–मृगनयनी के विवाह के बाद इसी पंडित ने लाखी और अटल को पीड़ित किया। इसके बावजूद वह बोधन का कोई नुकसान नहीं करता। मानसिंह वर्ण व्यवस्था और जाति प्रथा की कट्टरता का समर्थक नहीं है। बोधन पंडित इनका कट्टर समर्थक है। तब भी राजा उसे कुछ नहीं कहता, दण्डित नहीं करता, दबाव नहीं डालता और उसे सुरक्षित ग्वालियर से जाने देता है। इसी तरह मानसिंह को पता चलता है कि कला यहाँ ग्वालियर में रहकर राजसिंह के लिए जासूसी करती है। उसने महल के चित्र बना लिए हैं ताकि राजसिंह को किले की जानकारी मिल सके। चित्रकला और संगीत की आड़ में वह सब करती है। एक दिन बैजू के कारण राजा मानसिंह को कला की हकीकत का पता चल जाता है। तब भी वह कला को दंडित नहीं करता। उसे क्षमा कर देता है। इसी क्षमाशील प्रवृत्ति के कारण ''कला ने सोचा, मानसिंह कितना बड़ा है!'' कला की करतूतों के बाद कुछ देर सोच विचार कर मानसिंह बोला, ''तुम अपने घर जाओ। कल ही तुमको रक्षकों के साथ आराम की सवारी से भेज दिया जाएगा। तुमको इतना द्रव्य दे दूँगा कि जीवन पर्यन्त बेखटके रहो। राजसिंह बड़ा शूरवीर है परन्तु शूरवीरी का उपयोग अनुचित करता है। कह देना।'' बस, यह प्रकरण यहीं खत्म हो जाता है। इसकी तुलना उसके समय के तुर्क शासकों से करने पर मानसिंह के व्यक्तित्व की गरिमा का एहसास होता है। उदाहरण के लिए सिकंदर लोदी, अपने सनातनी विचारों के कारण बोधन को मौत के घाट उतार देता है तथा राजा मानसिंह के निहत्थे दूत निहाल सिंह को भी मरवा देता है।

### 13.3.3 परिवार में

राजा मानसिंह के मृगनयनी सहित नौ रानियाँ थीं। इस बहुपत्नी प्रथा के कारण रानियाँ भावनात्मक कष्ट में रहती थीं। ज़ाहिर है कि उनके इस कष्ट के चलते मानसिंह भी कष्ट में रहता था। रानियों के आपसी रिश्तों को सँभालना काफी मुश्किल काम था। मृगनयनी को जब पता चला कि मानसिंह की आठ रानियाँ और हैं, तब वह एक बार तो चिंतित हो गई, परन्तु फिर स्थितियों को स्वीकार कर लिया। हालाँकि उसने अपनी इस पीड़ा को कभी व्यक्त नहीं किया। बड़ी रानी ने मृगनयनी को कभी स्वीकार नहीं किया। इसलिए उनके बीच की खटपट राजा के सामने भी आती थी। रानियों का परस्पर सौतिया–डाह केन्द्रित होकर मृगनयनी के विरुद्ध एकत्रित हो गया। ''मानसिंह को समझने में जरा भी देर नहीं लगी। उसका अभिमान कहता था– इतने बड़े राज्य की व्यवस्था करने वाला क्या आठ स्त्रियों का भी शासन नहीं कर सकेगा ? उसके



BHDC-109_4th proof.indd 232 8/6/2021 2:09:12 PM

विवेक ने बताया, एक स्त्री का शासन ही पुरुष के लिए कठिन काम है, आठ तो आठ ग्वालियर–राजा की समस्या से समान है? फिर क्या करूँ ? करूँ क्या, विनय, शील और मृदुता से काम लो–व्यंग्यशीलता और मृदुलता से काम लो–व्यंग्य, गाली और कटूक्तियाँ सब हँसी के साथ सहो। इसी में कल्याण है–मानसिंह ने सोचा।'' भले ही वह सबसे अधिक प्रेम मृगनयनी से करता था, तब भी बड़ी रानी की मर्यादा का बराबर ध्यान रखता था।

रानियों का आपसी ईर्ष्या–द्वेष कभी भी हिंसक रूप ले सकता था। बड़ी रानी ने दो बार मृगनयनी और लाखी को जहर खिलाकर मारना चाहा था। उसके ये दोनों प्रयास स्वतः विफल हो गए। यद्यपि राजा को इसकी जानकारी नहीं मिली फिर भी, पृष्ठभूमि में पारिवारिक कलह और मतभेद विद्यमान हैं, यह वह जानता और समझता है। बड़ी रानी सुमन मोहिनी राजा के चरित्र को संदेह की दृष्टि से देखती थी। वह कहती है और सोचती है कि राजा जब भी उसके पास आता है, बड़े प्रेम से मिलता है। ''तब लगता है मेरे सिवाय वह और किसी के नहीं। तभी दो–चार कड़खे सुना देती हूँ। न सुनाऊँ तो राजा किसी गाँव से एकाध सुंदरी का संग्रह और कर लाएँ। क्या ठीक है इनका।'' इसी आपसी खटपट के साथ मानसिंह को अपने बाहरी वास्तविक शत्रुओं से भी संघर्ष करना है, कला और संगीत की साधना भी करनी है। इन सभी में वह संतुलन बिठाने के लिए प्रयासरत रहता है।

## 13.4 लाखी और अटल

उपन्यास में लाखी और अटल का आगमन मृगनयनी के साथ ही होता है। दोनों किशोरावस्था की सहेली हैं। उपन्यास पढ़ते हुए कई बार लगता है कि लाखी, निन्नी की छाया है। छाया न भी कहें तो भी वह निन्नी की सहयोगी पात्र है। निन्नी अतीव सुन्दरी है। लाखी भी सुन्दर है, परन्तु निन्नी से थोड़ी–सी कम। लाखी तीरन्दाज है। अच्छा निशाना लगाती है परन्तु निन्नी से थोड़ी सी कम। हर बात में लाखी निन्नी से थोड़ी कम रह जाती है। वह हमेशा निन्नी की सहयोगी बनी रहती है। राजा से जब पहली–पहली बार निन्नी की प्रेम वार्ता हो रही थी, तब लाखी सहयोगी के रूप में वहाँ उपस्थित रहती है और जब उसे उचित लगता है, तभी वह उसमें दखल देती है। आवश्यकता पड़ने पर अलग हट जाती है, आवश्यकता पड़ने पर पुनः आ जाती है। जब दोनों राजमहल में पहुँच जाती हैं, तब लाखी, मृगनयनी के इशारों से चलती है। वह समझदार भी है और संवेदनशील भी। जब उसको लगता है कि प्रेमवश मृगनयनी कुछ गलत करने वाली है, तब वह उसे किसी–न–किसी तरह से रोक देती है।

### 13.4.1 जाति–प्रथा का विरोध

रानी बनकर और ग्वालियर किले में पहुँचकर मृगनयनी का जीवन संघर्ष समाप्त हो जाता है, लेकिन लाखी का संघर्ष बना रहता है और उस संघर्ष में लाखी सफल होती है। किशोरावस्था में ही लाखी अटल को पसन्द करने लगती है। और यह जानते हुए भी पसन्द करती है कि दोनों भिन्न–भिन्न जाति के हैं। उपन्यास में लेखक रेखांकित करते हुए बताता है कि लाखी अहीर है और अटल गूजर है। दोनों का विवाह जाति–व्यवस्था के अनुसार नहीं हो सकता। फिर भी वे दोनों जाति–व्यवस्था से संघर्ष करने का निर्णय लेते हैं।

अन्तर्जातीय विवाह तो मृगनयनी का भी होता है, परन्तु मानसिंह तोमर, राजा है। राजा के सामने जाति–प्रथा और वर्णाश्रम व्यवस्था कमजोर पड़ जाती है, परन्तु अटल सामान्य किसान है। यही कारण है कि उसके लिए कोई छूट नहीं मिलती। इनका सबसे पहले संघर्ष गाँव के पंडित बोधन से होता है। बोधन निर्णय देता है कि शास्त्रों के अनुसार यह अन्तर्जातीय विवाह मान्य नहीं हैं। पिछले युग में भले ही मान्य रहा हो, लेकिन अब



BHDC-109_4th proof.indd 233 8/6/2021 2:09:12 PM

ऐसा विवाह स्वीकार्य नहीं है। गाँव में जब बोधन से सब सहमत नहीं हुए तो यह तर्क आया कि इन्हें (लाखी और अटल को) जाति–बाहर कर देंगे। लाखी के इस गाँव में कोई दूसरा अहीर परिवार नहीं है। तब इन्हें गाँव बाहर करने का और गाँव के पास के अहीरों को सूचना देने का निर्णय लिया जाता है। ऐसा इसलिए कि वे आकर दोनों की हत्या कर देंगे। साथ में मामले को और अधिक तूल देने के लिए यह प्रचार भी किया जाता है कि लाखी के गर्भ ठहर गया है। गाँव के इस आग्रह के कारण तथा बोधन के मना करने के बाद दोनों स्वतः विवाह कर लेते हैं और पति–पत्नी के रूप में रहने लगते हैं। तब भी जाति का दबाव तो है ही। इससे बचने के लिए वे नटों के साथ नरवर चले जाते हैं। नरवर विजय के बाद जब लाखी और अटल ग्वालियर पहुँच जाते हैं, तब भी जाति–प्रथा पीछा नहीं छोड़ती। राजा से कहकर मृगनयनी लाखी–अटल के विवाह का आयोजन करती है। यहाँ पर भी बोधन इन्कार कर देता है। लाखी को राजमहल में भी जातीय देश की इस पीड़ा को झेलना पड़ता है। वह अटल से बहुत प्रेम करती है। अंत में लाखी गढ़ी में अपने अंतिम क्षणों में स्वयं अटल से कहती है कि ''ब्याह कर लेना अपनी जात–पाँत में।''

### 13.4.2 साहसी

लाखी बहुत बहादुर स्त्री थी। मृगनयनी के साथ जब लाखी का अपहरण करने के लिए घुड़सवार आए तब लाखी ने ही एक घुड़सवार की आँख में तीर मारकर उसे गिरा दिया था। नटों के साथ रहते हुए जब लाखी को पता चला कि नट उसे माण्डू के शासक गयासुद्दीन को सौंपना चाहते हैं तब उसने पुनः अपनी वीरता का परिचय दिया और जिस रस्सी से पिल्ली नीचे उतर रही थी और जिस पर लाखी को जाना था, उस रस्सी को लाखी ने अपने छुरे से काट दिया और हल्ला मचाकर नरवर के सैनिकों को आवाज दी। इस तरह नरवर को बचाने का श्रेय लाखी को जाता है। ग्वालियर में रहते हुए लाखी और अटल को राई के पास बनी हुई गढ़ी में भेज दिया गया था। यहाँ पर सिकंदर लोदी का आक्रमण होता है। इनका मुकाबला भी लाखी अकेली करती है। अटल का प्रवेश तो बाद में होता है। इसी संघर्ष में उसकी मृत्यु हो जाती है।

मुकाबले में पहले तो तीर से लाखी उन पर आक्रमण करती है और कई लोगों को मार गिराती है। घायल होने पर एक सैनिक तलवार लेकर उस पर आक्रमण करने आता है तो ''ऊपर आती हुई विपत्ति की उत्तेजना ने उसको बल दिया। तलवार वाली मुट्ठी कस गई। आक्रमणकारी ने जैसे ही उस पर वार किया वह धम्म से बैठ गई। सिर पर आई हुई तलवार की खड़ी नोक आक्रमणकारी के पेट के निचले हिस्से में बैठकर कलेजे तक पहुँच गई।'' यह विवेक, साहस और वीरता लाखी के चरित्र की विशेषता है।

### 13.4.3 स्वाभिमानी

लाखी शुरू से ही स्वाभिमानी रही है। मृगनयनी के साथ रहते हुए उसे जब भी लगता कि उसके स्वाभिमान पर चोट पड़ रही है तो वह मुकाबला करने के लिए तैयार हो जाती है। जब दोनों के बीच कहा–सुनी होती है तब भी वह गर्व और स्वाभिमान से कहती है कि 'अहीर किस बात में गूजरों से कम है।' जब मृगनयनी का राजा से विवाह हो जाता है, तब भी लाखी अपने स्वाभिमान को बनाए रखती है। वह मृगनयनी के साथ ग्वालियर नहीं जाने का निर्णय लेती है। इसका एक पक्ष यह भी है कि इस अवसर पर एक स्त्री ने राजा–रानी से उसके संबंधों को लेकर कटाक्ष कर दिया, जो स्वाभिमानिनी लाखी को चुभ गया और वह अपनी इच्छा से ग्वालियर नहीं गई। स्त्री ने जान–बूझकर किसी और के व्याज से व्यंग्य करते हुए कहा, ''एक कहती थी निपूती कि निन्नी रानी बनकर पान चबाएगी ओर लाखी चेरी बनकर निन्नी की पीक को गदेली पर लेगी। और राजा की सेज को बिछाया–उठाया करेगी। सुन्दर सलोनी है न!'' किसी बात के संदर्भ में लाखी अटल से कहती है, ''कोई मुझको यदि किसी की चेरी कहे, चाहे वह मेरी निज ननद ही क्यों न हो, तो मैं नहीं सह सकूँगी। न यह सह सकूँगी कि तुमको



BHDC-109_4th proof.indd 234 8/6/2021 2:09:13 PM

राजा का दास या रोटियारा कहे। हम लोगों को भगवान ने भुजाओं में बल दिया है और काम करने की लगन। कुछ करके ही ग्वालियर चलेंगे।''

इसी तरह नटों ने उसको गहनों और कपड़ों का लालच दिया, तब भी लाखी ने उनका प्रस्ताव ठुकरा दिया और अटल के साथ रहना तय किया। नरवर विजय के बाद भी वह राजा मानसिंह के पास स्वयं नहीं गई। राजा जब स्वयं आया और उसे हाथी पर बिठाकर ले गया, तब वह पूरे सम्मान सहित राजा के साथ गई। मृगनयनी ने भी पूरे उपन्यास में लाखी के इस स्वाभिमान की रक्षा की। वह कोई भी काम करने के लिए लाखी को नहीं कहती थी। अपने पैरों में सोने के गहने देखकर मृगनयनी ने कहा कि जब तक लाखी के पैरों में सोने के गहने नहीं होंगे, तब तक मैं भी नहीं पहनूँगी। तब लाखी ने ही व्यवस्था का हवाला देकर उसे मनाया और जिद न करने की सलाह दी क्योंकि पैरों में सोना धारण करने का अधिकार केवल रानी को है किसी अन्य सामान्य स्त्री को नहीं।

### 13.4.4 प्रेम

जहाँ तक अटल और लाखी के प्रेम का प्रश्न है, दोनों प्रत्येक क्षण इसमें सफल रहे। जब लाखी को लगने लगा कि उसका अपहरण हो सकता है या वह मारी जा सकती है, तब वह अटल से प्रेम करने वाली स्त्री, पिल्ली से कहती है कि तुम 'कुँवर जी को प्यार देना।' उसे शंका हो गई थी कि पिल्ली के अश्लील इशारों का प्रभाव अटल पर पड़ गया होगा। बाद में पता चला कि ऐसा कुछ था नहीं। अटल पारदर्शी तरीके तथा पूर्ण समर्पण से लाखी से प्यार करता था। एक बार लाखी अटल से पूछ लेती है, ''क्या उस पिल्ली पर कुछ मन चला गया था ?'' इस पर अटल नाराज हो जाता है। आश्वस्त लाखी उसे मनाती हुई उसे कहती है, ''अरे तो बुरा क्यों मान गए ? ऐसा तो होता ही रहता है, पुरुष तो चूक ही जाते हैं।'' इस एक प्रकरण के अलावा दोनों में कभी कोई मन मुटाव नहीं होता। वैसे भी अटल का चरित्र बहुत सपाट है। उसे लेखक ने लाखी के सहयोगी पात्र के रूप में ही रखा है। जब लाखी की माँ की मृत्यु होती है, तब अटल बोलता है, ''चाहे संसार इधर का उधर हो जाए, चाहे मेरी बोटी–बोटी हो जाए, तुमको कभी कष्ट नहीं होने दूँगा लाखी।'' अटल इस प्रण का जीवन भर निर्वाह करता है। सुल्तान के हाथों सौंपे जाने के प्रश्न पर लाखी सोचती है, इससे तो 'जात–पाँत का अपमान भला।'' दोनों का सामाजिक रूप से विवाह होने से पहले भी लाखी, अटल के प्रति एकनिष्ठ बनी रहती है।

**बोध प्रश्न–1**

1. निम्नलिखित कथनों में से सही पर (✓) तथा गलत पर (✗) का निशान लगाइए :
   i) राई गाँव में मृगनयनी का नाम निन्नी था। (सही / गलत)
   ii) निन्नी और लाखी के अपहरण का प्रयास बघर्रा ने किया। (सही / गलत)
   iii) सिकन्दर लोदी ने मानसिंह तोमर को परास्त कर दिया था। (सही / गलत)
2. उचित शब्दों द्वारा रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :
   i) मृगनयनी और लाखी के खाने में .....ने जहर मिला दिया था। (कला / सुमन मोहिनी)
   ii) मानसिंह तोमर की मृगनयनी सहित ..... रानियाँ थीं। (आठ / नौ)
   iii) कला ..... के लिए जासूसी करने के लिए ग्वालियर आई थी। (राजसिंह कच्छवाह / नसीरुद्दीन)



BHDC-109_4th proof.indd 235 8/6/2021 2:09:13 PM

## 13.5 नट

उपन्यास में कुछ आदिवासी पात्र आते हैं, जो जंगल में रहते हैं। घर बसाकर एक स्थान पर रहना उनके धर्म और परंपरा के अनुकूल नहीं है। वे अपने आपको हिन्दू और मुसलमान दोनों कहते हैं। वे दोनों धर्मों को मानते हैं। वे कोई जादू–टोना नहीं जानते परन्तु ''जंगलों के साँप–बिच्छू, नाहर, तैंदुए, को काबू में कर लेते हैं।'' इनके परिवार का मुखिया पोटा है। गयासुद्दीन का चहेता मटरू, पोटा से लाखी और निन्नी को माण्डू या उसके आसपास लिवा लाने के लिए कहता है जिसे वह स्वीकार कर लेता है। उपन्यास में उनकी उपस्थिति इसी काम के लिए होती है।

लेखक ने नटों के बारे में, उनके व्यक्तित्व के बारे में, उनकी कार्य–योजना के बारे में, उस योजना को क्रियान्वित करने के बारे में बहुत विस्तार से लिखा है। हालाँकि यह कथा उनकी मुख्य कथा से थोड़ी सी हटकर है। निन्नी से तो मानसिंह तोमर का विवाह हो जाता है, लेकिन ये लोग लाखी को नरवर तक लाने में सफल हो जाते हैं। उपन्यास में वर्णन के अनुसार नट अत्यंत गरीब हैं। वे जंगल में किसी तरह फल–फूल या जंगली जानवरों को मारकर अपना पेट भरते हैं। घुमंतू जाति होने के कारण सारे भारत में घूमते रहते हैं। उनके लिए राज्यों की सीमा का कोई अर्थ नहीं है। वे नाच–तमाशे दिखाते–दिखाते किसी भी राज्य में आ–जा सकते हैं। इनमें यौन–नैतिकता का अभाव है या उस पर विश्वास नहीं करते। युवा पिल्ली अपनी माँ नायकिन और पिता पोटा के सामने भी अश्लील हरकतें करती रहती है। उसे अटल को लाखी से भटकाने का काम दिया जाता है, जिसे वह बेशर्मी और ईमानदारी से करती है। वह बातचीत में बहुत चतुर है और अपने यौवन का इसमें उपयोग करती है। मटरू ने भी उनकी इस प्रवृत्ति का उपयोग करना चाहा और इसके लिए उन्हें बहुत सा धन और कपड़े–गहने आदि दिए। नटों के जीवन, उनकी आर्थिक विपन्नता, चारित्रिक पतन और शारीरिक पीड़ा से लेखक को कोई सहानुभूति नहीं है। नरवर के किले से बाहर निकलते समय लाखी जब रस्सी काट देती है और पिल्ली मर जाती है, तब भी लेखक को उससे कोई सहानुभूति नहीं होती। सब खुश होते हैं कि यह अच्छा हो गया, लाखी बच गई, नरवर बच गया। पिल्ली मर गई इसका न तो कोई दुःख है और न सहानुभूति। एक जगह पर उपन्यास में टिप्पणी है कि ''नट–बेड़िए तुर्कों से कुछ कम थोड़े ही हैं।'' इसी तरह की टिप्पणियाँ इस प्रकरण के संदर्भ में भरी पड़ी हैं– ''कितनी फूहड़ है, नटनी ही तो ठहरी।'' उपन्यास में इन पात्रों को लेखक की कोई मानवीय सहानुभूति नहीं मिलती। यहाँ तक कि गयासुद्दीन की तरफ से भी उनको प्रताड़ना ही मिलती है।

## 13.6 मुस्लिम सुल्तान

उपन्यास में मुख्यतः तीन मुस्लिम सुल्तानों का चित्रण किंचित विस्तार से किया गया है– दिल्ली का सुल्तान, सिकंदर लोदी; अहमदाबाद का सुल्तान, बघर्रा; माण्डू के सुल्तान गयासुद्दीन खिलजी और नसीरूद्दीन खिलजी। इन सभी सुल्तानों के चरित्र की कुछ सामान्य विशेषताएँ लेखक बताई हैं।

### 13.6.1 निर्दयी और हृदयहीन

पहली विशेषता यह है कि ये सभी क्रूर और हृदयहीन हैं। वे बिना किसी कारण के किसी की भी हत्या कर देते हैं। उपन्यास में सबसे पहला वध माण्डू के उन घुड़सवारों का होता है, जो निन्नी और लाखी का अपहरण करने के लिए राई गाँव आते हैं। इन्हें लाखी और निन्नी मार देती हैं। दो लोग मारे जाते हैं और जो दो घुड़सवार जीवित बचते हैं उन्हें गयासुद्दीन जेल में डाल देता है। यहाँ लेखक हत्या का समर्थन करता है, परन्तु जेल में डालने का विरोध करता है, इसी कारण सभी पात्र तुर्कों का विरोध करते



BHDC-109_4th proof.indd 236 8/6/2021 2:09:13 PM

हैं। माण्डू सुल्तान गयासुद्दीन की हत्या जहर देकर उसका बेटा नसीरुद्दीन कर देता है। जिस दासी के सहयोग से नसीरुद्दीन अपने पिता की हत्या करता है, उसी ख्वासिन को वह मार डालता है। फिर नसीरुद्दीन का बेटा ख्वाजा मटरू की भी हत्या कर देता है। ये हत्याएँ अकारण होती हैं। दिल्ली का सुल्तान सिकंदर लोदी अकारण पंडित बोधन की हत्या करवा देता है। इसी तरह राजा मानसिंह के दूत निहाल सिंह को भी वह मरवा देता है, जबकि दूत अवध्य होता है। उसकी हत्या उचित नहीं मानी जाती। इस तरह ये शासक कभी भी, किसी को भी, बिना किसी कारण के मृत्यु के घाट उतार सकते हैं।

गयासुद्दीन के पुत्र नसीरुद्दीन ने खोज–खोज कर 12000 स्त्रियाँ अपने हरम में जमा कीं। उपन्यास में वर्णित एक घटना में एक दिन उन सबका जल विहार का आयोजन हुआ। इस जल क्रीड़ा में कुछ सुन्दरियाँ डूबने लगीं। बचाओ, बचाओ की आवाज सुनकर कुछ सैनिक अन्दर आए और उन सुन्दरियों को बचा लिया। नसीरुद्दीन ने पूछा कि वे लोग (सैनिक) अन्दर क्यों आए ? और इनको क्यों बचाया ? सैनिकों के इस कृत्य से इतना क्रोधित हुआ कि इस के उपरांत ''नसीर ने आज्ञा दी, 'इनका सिर धड़ से जुदा कर दो जिसकी आँखों से यह सब देखा और हाथ भी काट दो।'' लेकिन इसके कुछ दिनों बाद ही जब सुल्तान नसीरुद्दीन डूबने लगा तो कोई भी उसे बचाने नहीं आया उसके प्रति किसी की कोई सहानुभूति नहीं थी।

### 13.6.2 व्यक्तित्व–वर्णन

उपन्यास में पहली बार जब भी कोई पात्र आता है, तब लेखक उसके चरित्र का परिचय देता है। इस परिचय में उस पात्र के प्रति लेखक की दृष्टि भी शामिल होती है। मुस्लिम शासकों का जब वृंदावनलाल वर्मा उपन्यास में परिचय देते हैं तब उनके भीतरी चरित्र और बाह्य रूप को भी सामने रखते हैं और आम तौर से उनको 'कुरूप' चित्रित करते हैं। सिर्फ दिल्ली के सुल्तान सिकंदर लोदी के अलावा शेष सभी मुस्लिम शासक लेखक द्वारा उपन्यास में कुरूप या अनाकर्षक दर्शाए गए हैं। इसमें सबके अधिक कुरूप गुजरात का शासक बर्घरा है।

''महमूद बघर्रा साढ़े तीन हाथ से अधिक ऊँचाई का था परन्तु चौड़ा उतना था कि बौना मालूम होता था। इस समय आयु उसकी लगभग पैंतालीस वर्ष की थी। मूँछें इतनी लम्बी कि सिर पर उनकी गाँठ बाँधता था और दाढ़ी नाभि के नीचे तक फटकार मारती थी।'' और वह निहायत पेटू भी था– ''डेढ़ सौ पके केले, सेर–भर शहद और सेर–भर मक्खन– यह रोज का कलेवा था।'' ''कलेवा के अलावा बर्घरा दिन–भर एक मन गुजराती वजन का भोजन करता था, जो इस गए–गुजरे जमाने में बीस सेर के बराबर होता है।'' इसके अलावा उसकी मानसिक स्थिति का भी लेखक ने वर्णन किया है। उसे मनुष्यों से लड़ने–भिड़ने की भी भूख लगी रहती थी। ''यदि उसको मनुष्य लड़ने को न मिलता तो वह हवा, पहाड़, पेड़, पत्थर किसी से भी लड़ता–भिड़ता रहता है।''

माण्डू के सुल्तान गयासुद्दीन का वर्णन करते हुए वृंदावनलाल वर्मा लिखते हैं कि उसकी उम्र उस समय चवालीस–पैंतालीस साल की थी। ''उसका स्वभाव अधीर, उद्धत, कामुक और कपटप्रिय था। मदिरा पीने पर वह सहज स्वाभाविक मानव–सा हो जाता था। मदिरा का सेवन अधिक नहीं करता था, परन्तु उसकी मानवीयता उपेक्षणा और हास्य प्रियता तथा कामुकता बढ़ जाती थी। हिन्दुओं के साथ वह अत्याचार नहीं करता था। शराब पीने पर वह कट्टरता का मजाक उड़ाया करता था, इसलिए मुल्लावर्ग उससे रुष्ठ रहता था। कामुकता के अंधेपन में वह पुरुष और स्त्री की पहचान नहीं रखता था और खाई–खड्डों की परवाह नहीं करता था।''

### 13.6.3 स्त्री–लोलुप और विलासी

नसीरुद्दीन का आरंभिक परिचय स्त्री लोलुप व्यक्ति के रूप में होता है। इसी कारण वह अपने पिता की हत्या कर देता है। राज्य पाने के बाद वह सुन्दर स्त्रियों की खोज में



BHDC-109_4th proof.indd 237 8/6/2021 2:09:13 PM

रहने लगा। जहाँ भी उसने सुन्दर युवती की खबर पाई वहीं उसने अपने दूत भिजवाए। ''सुल्तान ने सुंदरियों की ढूंढ़ खोज के लिए एक मुहकमा खोला है। मालवे भर में उसके आदमी नए–नए रूपों की पकड़–धकड़ के लिए घूमते रहते हैं।''

उपन्यास के लगभग सारे मुस्लिम शासक स्त्री–लोलुप और विलासी हैं। बघर्रा और गयासुद्दीन ने लाखी और निन्नी को हासिल करने के लिए नरवर पर युद्ध थोप दिया। यह बहुत बड़ा निर्णय हुआ। अंत में बघर्रा को कुछ और कार्य जरूरी आया, इसलिए वह बीच में ही चला गया, परन्तु गयासुद्दीन इसी काम में लगा रहा। उसका पुत्र नसीरुद्दीन उससे भी अधिक विलासी था। वृंदावनलाल वर्मा ने विस्तार से उनके इन दुर्गुणों की चर्चा की है। उसने सुल्तान बनने के बाद 15000 सुन्दरियों को इकट्ठा करने की योजना बनाई, जो कड़ी मेहनत के बाद पूरी हुई। उसके बाद वह इन सब परियों–सुन्दरियों को स्नान करवाने के लिए एक तालाब पर ले गया। उसे यह भी सन्देह हो गया था कि कुछ लड़के, लड़कियों के वेश में अन्दर आ गए है। अतः इन सुन्दरियों की गणना जरूरी है। इस स्नान का अयोजन एक बार पहले भी किया था। इस बात का वर्णन करते हुए लेखक लिखा, ''बड़े नखरों के साथ नाच–गाना हुआ। ऐसा कि अश्लीलता भी शरमा गई होगी। नाच–गान की समाप्ति होते–होते नसीर तकिए के सहारे पड़कर सो गया। अश्लीलता के इतने आकार–प्रकार उसके अनुभव में आ चुके थे कि अब कोई अश्लीलता उसको देर तक आकर्षण नहीं दे सकती थी।'' फिर इसी आयोजन में नसीरुद्दीन की मृत्यु भी पानी में डूबने से हो जाती है। लेकिन इन सबसे नसीरुद्दीन के पुत्र को अत्यंत शर्म और ग्लानि हुई। सुल्तान बनते ही उसने सबसे पहले इस परीस्तान के प्रेरक–संयोजक मटरू का वध कर दिया और फिर इस परीस्तान को तितर–बितर कर दिया।

### 13.6.4 धार्मिक–साम्प्रदायिक दृष्टि

उपन्यास में लेखक ने वर्णन किया है कि सभी मुस्लिम शासक इस्लाम के धर्म गुरुओं के प्रभाव में थे, हालाँकि मन ही मन वे उनसे चिढ़ते थे। वे हिन्दुओं की कला और साहित्य की मन ही मन तारीफ करते थे, तब भी मंदिरों को तोड़ते थे। इस अन्तर्विरोध का वर्णन मृगनयनी में स्थान–स्थान पर हुआ है। बघर्रा जैसा शासक भी कहता है, ''उन मंदिरों को मैंने देखा था, बुतों को भी। कुछ भी हो, मंदिर थे खूबसूरत। बुतों को तोड़ डालते, काफी था। पत्थर को जान देने के फन में हिन्दुओं ने जिस कमाल को हासिल किया है, ताज्जुब होता है। हमारे मुसलमान तो वैसी कारीगरी नहीं कर सकते। उस कारीगरी को जबान में भी अदा नहीं कर सकते, वैसा करतब कर दिखलाना तो बहुत दूर की बात है।'' उसकी बात दरबारी सिर झुकाए हुए चुप रहे। बघर्रा ने मन में कहा ''पहाड़ों, पेड़ों फूल पत्तियों, कोयल की कूकों और परियों की लोच–लचकों के जैसे एक साथ इन मंदिरा के बनाव–सिंगार में टाँकी और हथौड़े से मचल–मचल कर उतार दिया हो। मैं तो देखकर ठगा–सा खड़ा रह गया था। और बुत भी बेपनाह खूबसूरती के।'' यही मनोवृत्ति गयासुद्दीन की भी है। वह भी हिन्दू कारीगरी की प्रशंसा करता है।

इसी तरह सारे सुल्तान मुल्लाओं से चिढ़ते रहते हैं। उपन्यास में वे कहते हैं कि 'जब चाहे तब फतवे जारी करते रहते हैं।' दिक्कत यह है कि ''इनके फतवे के सामने सिर को झुकाना पड़ता है।'' ख्वाजा मटरू नसीरुद्दीन को सलाह देते हुए कहता है, जो सभी मुस्लिम शासकों पर लागू होती है– ''जो कोई भी हिन्दुस्तान में सल्तनत कायम करना चाहे या कायम रखना चाहे उसको मुल्लों की दुआ अपने साथ रखनी होगी।'' पर साथ भी उसका यह भी कहना है कि 'सुल्तान गयासुद्दीन हमेशा इन मुल्लों को गालियाँ' दिया करता था।' अर्थात् न चाहते हुए भी उनकी बात मानने को विवश था।



BHDC-109_4th proof.indd 238 8/6/2021 2:09:13 PM

**बोध प्रश्न–2**

3. सही विकल्प का चुनाव कीजिए :

   क) अपने राज्य में किस शासक ने परीस्तान बनाया था ?
   (नसीरुद्दीन / गयासुद्दीन)

   ख) अटल पर कौन डोरे डाल रही थी ? (नायकिन / पिल्ली)

   ग) बोधन की हत्या किसने करवाई ? (मानसिंह तोमर / सिकन्दर लोदी)

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच पंक्तियों में दीजिए :

   क) 'मृगनयनी' उपन्यास के आधार पर नटों की विशेषताएँ बताइए।

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

   ख) उपन्यास को दृष्टि में रखते हुए मुस्लिम सुल्तान के चरित्र की दो विशेषताएँ बताइए।

   .....

   .....

   .....

## 13.7 सारांश

मृगनयनी इस उपन्यास की नायिका है। यह उपन्यास मृगनयनी की कहानी कहता है, जो राई गाँव की गूजर बालिका है। वह अतीव सौन्दर्य और अदम्य साहस की धनी है। उसके सौंदर्य और साहस की कीर्ति उस काल में पूरे उत्तर भारत में फैल गई। अनेक शासक उसे पाना चाहते थे लेकिन असफल हुए । अन्ततः मृगनयनी का विवाह ग्वालियर के महाराजा मानसिंह तोमर से हो जाता है।

मानसिंह तोमर कुशल प्रशासक और वीर योद्धा था। इसके साथ–साथ वह संगीत, नृत्य और भवन निर्माण कला का प्रशंसक था। उसने ग्वालियर में अनेक महल बनवाए, जो आज भी मौजूद हैं। उसके दरबार में बैजू बावरा जैसा विख्यात संगीतकार रहता था। मानसिंह तोमर क्षमाशील और न्यायप्रिय राजा था तथा प्रजा के दुःख–सुख की चिंता किया करता था। उपन्यास की महत्वपूर्ण पात्र लाखी है जो मृगनयनी की सहेली है। इसका विवाह मृगनयनी के भाई अटल से होता है। लेखक ने यह रेखांकित करते हुए बताया है कि लाखी अहीर और अटल गूजर है। उपन्यास में इस अन्तर्जातीय विवाह की समस्याओं की विस्तार से चर्चा की गई है। गाँव का पंडित बोधन, मानसिंह के कहने के बावजूद उनका विवाह–संस्कार नहीं करवाता। इस विवाद के कारण लाखी और अटल नटों के साथ चल पड़ते हैं। नट लाखी को सुल्तान गयासुद्दीन को सौंपना चाहते हैं। अपने साहस और बुद्धिमत्ता से वह नटों की योजना को पलट देती है। नरवर की सुरक्षा के लिए वह संघर्ष करती है। उपन्यास के अंत में राई के पास की गढ़ी में वह और अटल दोनों मारे जाते हैं।



BHDC-109_4th proof.indd 239 8/6/2021 2:09:13 PM

उपन्यास में आए हुए सभी मुस्लिम शासक निर्दयी और क्रूर हैं। इसके अलावा लेखक ने उनके व्यक्तित्व का विवरण देते हुए उन्हें कुरूप भी बताया है जिसमें गुजरात का सुल्तान बघर्रा सबसे प्रमुख है। दिल्ली के सिकन्दर लोदी के अलावा सभी शासक स्त्री लोलुप और विलासी है। वे सभी लाखी और मृगनयनी का अपहरण करना चाहते हैं, परन्तु वे सफल नहीं हो पाते। हिन्दू कला और स्थापत्य की वे मन ही मन तारीफ करते हैं तब भी मुल्लाओं के प्रभाव में हिंदू मंदिरों को तोड़ते हैं।

## 13.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. i) ✓; i) ✗; i) ✗
2. i) सही ii) नौ; iii) राजसिंह कच्छवाह।
3. क) नसीरुद्दीन ; ख) पिल्ली ; ग) सिकंदर लोदी।
4. क) के उत्तर के लिए इकाई का भाग 13.5 देखिए।
   ख) के उत्तर के लिए इकाई का भाग 13.6 देखिए।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY



BHDC-109_4th proof.indd 240 8/6/2021 2:09:13 PM

# इकाई 14 'मृगनयनी' का परिवेश और संरचना–शिल्प

**इकाई की रूपरेखा**


14.0 उद्देश्य

14.1 प्रस्तावना

14.2 'मृगनयनी' का परिवेश

14.2.1 ऐतिहासिक परिवेश

14.2.2 प्राकृतिक परिवेश

14.2.3 ग्वालियर का नव–निर्माण

14.2.4 सामाजिक–पारिवारिक परिवेश

14.3 शिल्प संरचना

14.3.1 विवरण प्रधानता

14.3.2 लेखक केन्द्रित

14.3.3 इतिहास का विवेक

14.3.4 ऐतिहासिकता का दबाव

14.3.5 इतिहास और कल्पना का अन्तर्द्वन्द्व

14.3.6 भाषा

14.3.7 शैली

14.4 सारांश

14.5 बोध प्रश्नों के उत्तर


## 14.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के उपरांत आप :

- 'मृगनयनी' के ऐतिहासिक परिवेश की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे;
- 'मृगनयनी' के भौगोलिक परिवेश की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे;
- 'मृगनयनी' के शिल्प की विशेषताओं से अवगत हो सकेंगे; और
- 'मृगनयनी' की संरचना और कला की विशेषताएँ समझा सकेंगे।

## 14.1 प्रस्तावना

'मृगनयनी' वृंदावनलाल वर्मा का ऐतिहासिक उपन्यास है। इस उपन्यास में ग्वालियर के राजा मानसिंह तोमर और एक ग्रामीण गूजर कन्या मृगनयनी की प्रेम कहानी का वर्णन किया गया है। मानसिंह सन् 1486 से 1516 तक ग्वालियर का राजा रहा। इस दौर के ऐतिहासिक परिवेश में मृगनयनी और मानसिंह का प्रेम हुआ। यह नायिका प्रधान उपन्यास है, हालाँकि नायक के व्यक्तित्व को भी लेखक ने राजकीय गरिमा से प्रस्तुत किया है। सन् 1950 में यह उपन्यास प्रकाशित हुआ। बहलोल लोदी के आक्रमण के बाद की परिस्थितियों से इस उपन्यास का प्रारंभ होता है। यहीं पर होली के अवसर पर पहली बार निन्नी उर्फ मृगनयनी से पाठकों का परिचय होता है।

उपन्यास में परिवेश का चित्रण बहुत महत्वपूर्ण होता है। उपन्यास के पात्र, घटनाएँ और कथा–सब एक निश्चित परिवेश में हमें दिखाई देते हैं। परिवेश, कथा और पात्रों को

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

विश्वसनीय बनाते हैं। उपन्यास के पात्र परिवेश के अंग के रूप में हमारे सामने आते हैं। एक विशेष परिवेश से बाहर निकल कर वे नए परिवेश में पहुँच जाते हैं। इसलिए सजग लेखक को परिवेश का चित्रण करते समय बहुत सावधानी बरतने की आवश्यकता होती है। पात्र और परिवेश में यदि विसंगति उत्पन्न हो जाती है तो पात्र की और कथा की विश्वसनीयता संदेहास्पद हो जाती है। इसलिए लेखक धैर्यपूर्वक परिवेश का चित्रण करता है। हालाँकि 'मृगनयनी' उपन्यास में कई बार परिवेश का, विशेष रूप से भौगोलिक परिवेश का विस्तृत वर्णन हमें नीरस और उबाऊ लगता है, तब भी लेखक उसका वर्णन उत्साह पूर्वक करता जाता है।

## 14.2 'मृगनयनी' का परिवेश

### 14.2.1 ऐतिहासिक परिवेश

मृगनयनी की कथा का संबंध मध्यकालीन भारतीय इतिहास से है, जब भारत पर तुर्कों का शासन था। ग्वालियर पर हालाँकि तुर्कों को विजय नहीं मिली थी, परन्तु ग्वालियर को सारे समय उनसे युद्ध करते रहना और युद्ध की तैयारी करते रहना होता था। उस समय दिल्ली में बहलोल लोदी और सिकन्दर लोदी का शासन था। दोनों पिता–पुत्र ने ग्वालियर पर आक्रमण किया, परन्तु दोनों को पराजय का सामना करना पड़ा। उनके पड़ोस में माण्डू का शासक गयासुद्दीन और बाद में उसके पुत्र नसीरुद्दीन का शासन था। इसी तरह गुजरात का बादशाह महमूद बघर्रा था। ये तीनों बारी–बारी से ग्वालियर पर आक्रमण करने की येाजना बनाते रहते थे। राजा मानसिंह इनसे निपटने की तैयारी करता रहता था। इसके अलावा मेवाड़ और अन्य राजपूत राजाओं का भी उपन्यास में जिक्र आता है। वृंदावनलाल वर्मा उनके बारे में भी बारीक जानकारियाँ देते चलते हैं।

उपन्यास के परिचय में वृंदावनलाल वर्मा ने कथा के ऐतिहासिक परिवेश का वर्णन इस तरह से किया है, ''उत्तर में सिकंदर लोदी और उसके सहयोगियों के परस्पर युद्ध तथा दोनों द्वारा घोर जन पीड़न; राजस्थान में राणा कुंभा का अपने बेटे के ही हाथ से विष द्वारा वध और उसके उपरांत वहाँ की अराजकता; गुजरात में महमूद बघर्रा के अगणित विजन और रक्तपात; मालवा में गयासुद्दीन खिलजी और उसके उत्तराधिकारी नसीरुद्दीन की अत्याचार–प्रियता और ऐय्याशी; दक्षिण में बहमनी सल्तनत और विजयनगर राज्य के युद्ध और बहमनी सल्तनत का पाँच सल्तनतों में बिखर जाना; जौनपुर, बिहार और बंगाल में पठान सरदारों की निरंतर नोच–खसोट और इन सबके लगभग बीच में ग्वालियर।'' ऐसे संकट में, ऐसे दौर के ग्वालियर में मानसिंह का शासन रहा और वह हर बार अपराजेय प्रमाणित हुआ।

उस दौर के देशी शासकों की मनःस्थिति का वर्णन करते हुए वृंदावनलाल वर्मा ने लिखा, ''तैमूर के प्रलयंकर विनाश ने दिल्ली की सल्तनत को उतना निर्बल नहीं किया था, जितना राजस्थान के राजपूत और अन्तर्वेद के पठानों के निरंतर अनवरत भयंकर युद्धों और उत्पातों ने। दिल्ली के शासकों ने अन्तर्वेद से लेकर बंगाल तक के प्रदेश को छोटे–छोटे पठान जागीरदारों में बाँट दिया था। इन सबके पास, चार–चार, छः–छः हजार से लेकर पैंतालीस हजार तक की संख्या में सेना रहती थी। अन्तर्वेद में अकेले एक जागीरदार के हाथ में पैंतालीस हजार पठान और सात सौ हाथी थे। दिल्ली शासक की कमर जरा ढीली पड़ी कि ये स्वतंत्र हो जाने के ताव पर आ जाते थे। मार–काट करते रहना और जनता को सोखते रखना और उस शोषण के सहारे ऐश–आराम करना ही इनमें से अधिकांश का उद्देश्य रहता था।'' वर्मा जी ने इतिहास की जानकारी के आधार पर तथ्य जुटाकर किया वर्णन किया। इधर राजपूत राजाओं में आपसी ईर्ष्या–द्वेष इस काल में चरम पर था। वे सामूहिकता में विश्वास नहीं करते थे। उनकी मानसिकता थी कि जब मैं अकेला ही शत्रु को परास्त कर सकता हूँ, तो दूसरे राजपूत की मदद



BHDC-109_4th proof.indd 242 8/6/2021 2:09:13 PM

क्यों लूँ ? फिर इतिहास का अपना दंश था, जिसे उस युग के चारण–भाट गा–गा कर समझाया करते थे। उपन्यास में भाट राजसिंह से बराबर कहता रहता था कि ''वीर सिंह देव तोमर ने आपके पुरखों से नरवर को छीना था। अभी सौ बरस ही हुए हैं, जैसे कल की बात हो। पुरखों के अपमान का बदला चुकाओ और नरवर को वापिस लो; नरवर कछवाहों का है, तोमरों का नहीं।'' इसलिए नरवर के लिए राजसिंह एक बार मालवा के बादशाह का पक्ष लेता है और अंततः दिल्ली सुलतान का साथ देता है। वह मानसिंह तोमर के साथ नहीं रहता।

इधर मुस्लिम शासकों की अपनी दुविधा थी। वहाँ मुल्ले और मौलवी उन्हें हमेशा भड़काया करते थे। उनकी मानसिकता पर विस्तृत टिप्पणी करते हुए लेखक ने लिखा– ''स्वर्ण संचय की कामना, मारकाट की आकांक्षा, स्त्रियों के अपहरण की वासना, राज्य स्थापित करने का लोभ, किसी भी प्रकार अपने मजहब के विस्तार के मोह को लेकर पठान और तुर्क आक्रामक भारत में घुसे थे। इन सबका एक सामूहिक नाम था उनका बहिश्त। इस बहिश्त की तलाश में शेरशाह के पहले भारत में जगह–जगह सल्तनतें कायम हुईं– दिल्ली, मालवा, गुजरात, जौनपुर, गोलकुंडा, बंगाल इत्यादि में। सल्तनतें कायम होने पर, बाप ने बेटे को, बेटे ने बाप को, सल्तनत के तख्त और मुकुट को मार्ग कंटक समझकर जहर के जरिए या किसी और सुलभ उपाय से अलग किया। उस बहिश्त की प्राप्ति ने सुल्तानों को और इनके सरदारों तथा सिपाहियों को निर्बल और कमजोर बना दिया। यदि हिन्दू परलोकमय, निराशावाद और आपसी लड़ाइयों के कारण दुर्बल न पड़ गये होते तो या तो वह स्वर्ग उनको मिलता ही नहीं और यदि मिल ही जाता तो धर्मराज उनको बहुत समय तक उसमें रहने न देते।'' लेखक ने उपन्यास में यह अंकित किया है कि इस मानसिकता पर मुल्ले टिप्पणी किया करते थे, जिन्हें राजकीय लाभ की दृष्टि से शासकों द्वारा दरकिनार कर दिया जाता। तब भी उन्हें नाराज करना उचित न जानकर शासक उन्हें भी सान्त्वना देते रहते। वे जिहाद के लिए उकसाने का काम करते थे और यह जिहाद भी उसी स्वर्ग की कामना तक पहुँचता था। यह मध्यवर्गीय राजाओं और सुल्तानों की सबसे बड़ी कमजोरी थी। ऐसे भी भारत में पुर्तगाली आने लगे थे। वृंदावनलाल वर्मा ने उनकी उपस्थिति का केवल सांकेतिक वर्णन इस उपन्यास में किया है।

### 14.2.2 प्राकृतिक परिवेश

उपन्यास का प्रारंभ ग्वालियर पर बहलोल लोदी के आक्रमण के बाद के वातावरण से होता है, जहाँ 'दूर–दूर तक गाँव उजड़' चुके हैं। फसलें नष्ट हो चुकी हैं। बहुत से निवासी मारे जा चुके हैं। इसके बाद भी होली की उमंग का वर्णन है, जहाँ हमें पहली बार निन्नी उर्फ मृगनयनी और उसकी सहेली लाखी दिखाई देती हैं। गरीबी और उमंग का अद्‌भुत मेल है। यहाँ उपन्यास के प्रमुख सहायक पात्र लाखी और अटल के प्रेम का प्रारंभ होता है। यहीं मृगनयनी अरना भैंसे और जंगली सुअर का शिकार करती है। उसकी यह ख्याति बाद में दूर–दूर तक फैल जाती है। यहाँ जंगल ही जंगल है। कहीं कोई सड़क या रास्ता नहीं है। गाँव में केवल एक पुजारी ही शिक्षित है। इसी परिवेश में मानसिंह तोमर पहली बार मृगनयनी को देखता है। यहीं वह उसे विवाह का प्रस्ताव देता है और दोनों का विधिवत विवाह सम्पन्न होता है।

यहाँ का वर्णन करते हुए वृंदावनलाल वर्मा ने लिखा, ''लू के झकोरों से भूमि के बारीक कंकड़ और बिखरे हुए पत्ते उड़–उड़कर निन्नी के तपे हुए गोरे और लाखी के साँवले गालों पर पड़–पड़ जा रहे थे। उन दानों ने ओढ़नी को सिर से लपेट रखा था। घुटनों तक मोटे लहँगे का कच्छा। उरोज कंचुकी से ढके हुए, पीठ से लगे हुए पेट उघाड़े। गले में मूंगी और काँच के छोटे–बड़े दानों की माला। कलाइयों पर काँच की दो मोटी–मोटी चूड़ियाँ। पैरों में काँसे या पीतल तक का कड़ा नहीं। शरीर का पसीना



BHDC-109_4th proof.indd 243 8/6/2021 2:09:13 PM

पिंडलियों की धूल पर मोटी–मोटी पतली रेखाएँ बनाता हुआ जा रहा था।'' इस तरह यहाँ परिवेश और पात्र घुलमिल गए हैं। इस ज़मीनी परिवेश के बिना हम ग्रामीण बाला मृगनयनी के चरित्र के विकास और परिवर्तन को समझ ही नहीं सकते। इस ग्रामीण परिवेश से उठकर मृगनयनी ग्वालियर के राजमहल में पहुँचती है। और कई तरह के कष्ट झेलकर लाखी भी वहाँ रानी की सहेली के रूप में किले में रहती है। इस तरह हम कह सकते हैं कि परिवेश निर्जीव तथ्य कथन मात्र नहीं होता अपितु आगे की कथा की आधारभूमि भी बनता है। आगे चलकर लाखी जब नटों के साथ नरवर किले तक जाती है तब यही भौगोलिक परिवेश साथ–साथ चलता है। इसके उपरांत मृगनयनी का परिवेश बदल जाता है। जीवन बदलने के साथ–साथ उनका सामाजिक परिवेश भी बदल जाता है। मृगनयनी की तुलना में लाखी का सामाजिक–पारिवारिक परिवेश अधिक बदलता है। नरवर के किले को बचाने में लाखी की बड़ी भूमिका होती है। यहाँ लेखक नरवर के किले का वर्णन करते हैं। नरवर के किले के ''पश्चिमी और दक्षिणी दिशाओं में लंबे और ऊँचे पहाड़, विशाल जंगल और बड़ी–बड़ी घाटियाँ थीं। नरवर गढ़ का एक ही फाटक–जंगलपोल–दक्षिण की दिशा में था। नरवर की बस्ती परकोटे से घिरी हुई, किले के नीचे, पूर्व से जंगल पोल नामक दक्षिणी फाटक तक फैली हुई थी। किले को ले लेना टेढ़ी खीर था परन्तु नगर को मिटाने में कम बाधा थी।

नरवर के दक्षिण–पश्चिम में बहती हुई सिंध नदी उत्तर को करवट लेती हुई पूर्व की ओर चली गई। नगर और किलों को सिंध ने घेर रखा है।'' मध्यकाल में राजा इस तरह के किले के भीतर रहता था। राजा–रानी आवश्यकता पड़ने पर ही इस किले से बाहर जाते थे। राजा तो युद्ध और संधि के अवसर पर कभी–कभी बाहर निकलता था, परन्तु रानियाँ तो जैसी इसी किले में कैद रहती थीं। किले में रहने वाली रानियों के परिवेश और चरित्र पर टिप्पणी करती हुई मृगनयनी सोचती है, ''राजा लोग अपने थोड़े से भाई बंधुओं को किसी गढ़ में बंद करके लड़ते–लड़ते मर जाते हैं और उनकी स्त्रियाँ चिता में जलकर भस्म हो जाती हैं। क्या ये स्त्रियाँ तीर–कमान चलाना नहीं जानती होंगी ? क्या इनके खेत नहीं होते होंगे, जिनकी रखवाली करने के लिए उनको मचान पर तीर–कमान और तलवार लेकर बैठना पड़ता हो ? उनके खेत नहीं होंगे, क्योंकि रानियाँ तो परदे में मुँह छिपाये बैठी रहती है। सुनती तो यही आई हूँ परन्तु क्या उनके हाथ–पैर इतने निकम्मे होंगे कि अपने ऊपर आँख और हाथ डालने वाले पुरुषों को घूँसे से धरती सुँघा सकें ? कैसी स्त्रियाँ होंगी ये ? खाने को इतना और ऐसा अच्छा मिलते हुए भी मन कितने मरियल!! चिता में जलकर मरे स्त्रियों पर हाथ डालने वाले !!! मैं तो कभी इस तरह नहीं मरने की।''

मानसिंह के शासन में राजा के पास और बादशाहों के पास तलवार, भाला, छुरी और तीर–कमान ही हुआ करते थे। वे इन्हीं से निशाना साधते थे तथा एक दूसरे की सेनाओं से युद्ध करते थे। सारी सेना पैदल, घोड़े या हाथी पर बैठकर युद्ध करती थे। यह वह समय था जब भारत में बन्दूक का प्रवेश नहीं हुआ था। इसलिए मृगनयनी ने भी तीर–कमान से ही जंगली जानवरों का शिकार किया था और राजा मानसिंह भी इन्हीं हथियारों का उपयोग करता था। मोटर, गाड़ी, सड़क आदि का आविष्कार तब तक नहीं हुआ था। इसलिए मृगनयनी पगडंडियों के सहारे पहाड़ पर आती जाती थी।

उस दौर में संचार के साधन बहुत सीमित थे, तब भी मृगनयनी के सौन्दर्य और वीरता की चर्चा सभी राज्यों में पहुँच गई। संचार के साधनों को स्पष्ट करते हुए 'मृगनयनी' में उल्लिखित है कि भारत में तीर्थ यात्रा का प्रचलन शुरू से ही रहा है। ''बड़े समाचारों और किसी विशेष मत की व्याख्या को एक सिरे से दूसरे सिरे तक पहुँचने में पन्द्रह दिन लग जाएँ तो बहुत समय लग गया। कभी–कभी कश्मीर का कोई बड़ा महत्वपूर्ण समाचार तो रामेश्वर दस दिन में ही पहुँच जाता था। इस मुँह से उस मुँह, इस गाँव से



BHDC-109_4th proof.indd 244 8/6/2021 2:09:13 PM

उस गाँव और नगर।'' निन्नी द्वारा सुअरों को मारना, सुअर को उठाकर अपने घर ले जाना, यह खबर सब जगह पहुँच गई साथ ही उसके सौंदर्य और लावण्य की भी चर्चा होने लगी –''खबर मालवा की राजधानी माण्डू, मेवाड़ की राजधानी चित्तौड़, गुजरात की राजधानी अहमदाबाद पहुँची। और अन्य स्थानों पर भी पहुँची। साथ ही प्रसिद्ध हुआ, उन दोनों युवतियों का अप्रतिम, अद्वितीय, असाधारण सौन्दर्य और लावण्य भी।'' इसी चर्चा के कारण कुछ घुड़सवार माण्डू से उनका अपहरण करने के लिए आए और निन्नी और लाखी के हाथों मारे गए। इस घटना की चर्चा ग्वालियर तक भी जा पहुँची। अभिभूत मानसिंह राई आया। और उसने मृगनयनी से विवाह कर लिया। यह समाचार के प्रभाव का ही नमूना है।

### 14.2.3 ग्वालियर का नव–निर्माण

मृगनयनी और मानसिंह जब ग्वालियर आ जाते हैं तब ग्वालियर के किले का नव–निर्माण होने लगता है। इस नव निर्माण में दक्षिण के विजय जंगम की भूमिका महत्वपूर्ण है जो 'तिलंगाना या कर्नाटक' के हैं। राजा पर उनका बड़ा प्रभाव है। इस कारण इस किले के निर्माण पर दक्षिण का प्रभाव है। इसी तरह मृगनयनी के स्वप्न भी इस किले में साकार होते हैं– ''एक रात मेरे मन में चाह उठी कि चाँदनी में चमकती नदी की दमक को समेटकर आँचल में बाँध लूँ, खेत की ऊँघती हुई बालों और पहाड़ की उस ऊँचाई को एक ही ठौर पर इकट्ठा कर लूँ, बड़े–बड़े पेड़ों के बंदनवार बनाऊँ और डालियों, पत्तों के झरोखे सजोऊँ, उन झरोखों से होकर मोतियों की हार–सी पहने हुए नदी की लहरों को गीत सुनाऊँ और फिर एक ऐसा घर बनाऊँ जिसमें यह सब आ जाए।'' इस स्वप्न को साकार करने के लिए ग्वालियर के महल का निर्माण करवाया गया। राजा मानसिंह भी इस कवितामय कल्पना को आगे विस्तार देते हुए सोचते हैं, ''भवन को सौन्दर्य, लालित्य और आस्था का मंदिर बनाऊँगा। कोमल भावनाओं का सदन, तुम्हारी चाह, शक्ति और बड़प्पन का प्रतीक! तुम्हारी कल्पना के बंदनवार, ऊँचे वृक्ष, पल्लवों के झरोखे, नदी की दमकती हुई लहरें–सबको उसमें सँजो दूँगा। उस मंदिर की प्रबल मंजुलता आधी रात की चाँदनी में आकाश से गाकर कहेगी– जाग परी मैं पिया के जगाए।'' ग्वालियर में एक मान महल है और एक 'गूजरी महल' बना है। इसी में मृगनयनी का निवास था। ''ऊपर के कोट से इसके कोट का संबंध जोड़ दिया गया। नीचे वाले कोट के नीचे से राई गाँव वाली साँक नदी की कटी हुई नहर गूजरी महल के नीचे वाले खंड में आ गई और उसके पानी के निकास का भी प्रबंध हो गया। गूजरी महल लगभग डेढ़ सौ हाथ लंबा और सवा सौ हाथ चौड़ा। दो खंड ऊपर, दो खंड नीचे। नीचे के खंड के बीचों बीच साँक नदी के नहर के जल के लिए हौज और चारों ओर दो खड़ी दालानें। ऊपर के खंडों के बीच में विस्तृत आँगन, चारों ओर सुरम्य अटारियाँ और छतें। बाहर और भीतर से मृगनयनी के रूप–सरूप का प्रतिबिंब–प्रबल, सीधा, सलौना और छबीला। कक्षों के द्वार, विवाह–मंडप के लता–वितान और बंदनवारों के द्योतक। पूरे भवन में वैसी गोखें, मड़ियाँ और साज जैसे थोड़े और सुंदर आभूषण पहनती थी। पूरा भवन थोड़े से अलंकारों से सजाया हुआ।''

'मृगनयनी' उपन्यास में राजा–महाराजा और सुल्तान आपस में युद्ध करते रहते हैं। किसी का भी दूसरे राजा के साथ विश्वसनीय रिश्ता नहीं है। कोई भी, किसी पर भी और कभी भी नाजुक मौके पर आक्रमण कर सकता है इसलिए सबको आपस में, एक दूसरे से सतर्क रहना पड़ता है। इसके साथ ही उन्हें शत्रु पक्षों के जासूसों से भी निपटना पड़ता है। यह कार्य हानि रहित माने जाने वाले कलाकार, नट–बेड़िए आदि कोई भी कर सकता है। लाखी को माण्डू पहुँचाने का दायित्व नटों को सौंपा गया था। इसके लिए उन्हें पर्याप्त धन और सामान दिया गया था। एक बार तो वे नरवर गढ़ में प्रवेश लेने ही वाले थे, जिससे नरवर पर माण्डू का आधिपत्य हो जाता है। इसी तरह 'मृगनयनी' में बैजू बावरा और उसकी सहयोगी कला का उल्लेख मिलता है। आपसी ईर्ष्या–द्वेष के



BHDC-109_4th proof.indd 245 8/6/2021 2:09:13 PM

कारण मृगनयनी की हत्या हेतु मानसिंह की बड़ी रानी, कला को एक विष की पुड़िया देती है ताकि वह उस पुड़िया को मृगनयनी को खिला दे। कला की मनःस्थिति का वर्णन करते हुए लेखक ने लिखा है–''निस्संतान करने की औषध नहीं हो सकती यह। बहुत करके विष होगा। मृगनयनी को मार देने में लाभ नहीं। यदि कहीं बात उघड़ गई तो व्यर्थ ही मारी जाऊँगी। मानसिंह को क्यों न किसी तरह खिला दूँ। यदि विष ही हुआ तो राजसिंह का काम बन जाएगा और न हुआ तो कोई बात ही नहीं। परन्तु यदि वह प्राणनाशक विष है ही नहीं तो व्यर्थ के जंजाल में क्यों पड़ूँ? किले के चित्रों को तैयार कर लिया है, राजसिंह के काम में आ सकते हैं। देर–सवेर ग्वालियर का घेरा पड़नेवाला है, अब ग्वालियर में और अधिक रुकना निरर्थक है। परन्तु यदि वह औषध विष ही हुई तो मानसिंह को समाप्त क्यों न कर दूँ। राजसिंह को वचन देकर आई थी। और यदि यह विष न हुआ तो कई बार प्रयत्न, सफल न हो पाई । अबकी बार यदि किले के चित्रों से काम बन जाए, तो अब इस प्रयोग के लिए और अधिक न ठहरूँ। मानसिंह वैसे ही मारा जाएगा। मैं क्यों यहाँ और अधिक टिकी रहूँ? निहाल सिंह होता तो इन सबकी आपस में खटकवा देती। कौन जाने लौटेगा भी या नहीं। लौटा और घेरे के भीतर मैं भी पड़ गई तो अभी तक का किया–कराया सब यों ही रह जाएगा।

कला सोच रही थी।

उसने एकांत में जाकर सफेद चूर्ण फेंक दिया।''

चित्र बनाने वाली एक कलाकार भी राजसिंह की जासूस निकलती है। अर्थात किसी पर भी कभी भी संकट आ सकता है। कोई भी कभी भी मारा जा सकता है। लेकिन यहाँ मानसिंह बाल–बाल बच जाता है।

### 14.2.4 सामाजिक– पारिवारिक परिवेश

राजा मानसिंह की पहले से ही आठ रानियाँ थीं। मृगनयनी उसकी नौंवी रानी बनी। इन रानियों के आपसी संबंध बहुत कटु थे। मृगनयनी को इस तथ्य की जानकारी नहीं थी। राजा मानसिंह की बड़ी रानी सुमन मोहिनी सोचती है कि राजा जब मेरे पास आते हैं, तब बहुत प्रेम से मिलते हैं। तब भी मैं ''दो– चार कड़खे सुना देती हूँ। न सुनाऊँ तो राजा किसी गाँव से एकाध सुंदरी का संग्रह और कर लाएँ। क्या ठीक है इनका।'' इधर मानसिंह की मानसिकता अलग है। उसका मानना है कि बड़ी रानी के अलावा शेष सात ने परिस्थितियों से समझौता कर लिया। यद्यपि वास्तविकता यह थी कि सौतिया डाह सबके ही मन में था। जब मृगनयनी रानी बनकर ग्वालियर आई तब ''उन आठ का परस्पर डाह एक धारा में प्रवाहित होकर मृगनयनी से जा टकराया। डाह का नेतृत्व सुमन मोहिनी के प्रचंड स्वभाव को अपने आप में प्राप्त हो गया। मानसिंह को समझने में जरा भी देर नहीं लगी। उसका अभिमान कहता था–इतने बड़े राज्य की व्यवस्था करने वाला क्या आठ स्त्रियों का भी शासन नहीं कर सकेगा। उसके विवेक ने बताया, एक स्त्री का शासन ही पुरुष के लिए कठिन काम है, आठ तो आठ ग्वालियर राज्य की समस्या के समान हैं फिर क्या करूँ ? करूँ क्या, विनयशील और मृदुलता से काम लो– व्यंग्य, गाली कटूक्ति सब हँसी के साथ सहो। इसी में कल्याण है– मानसिंह ने सोचा।''

सुमन मोहिनी ने दो–तीन बार मृगनयनी को विष देकर मारने की कोशिश की। किन्तु हर बार वह असफल हुई। लाखी के विवाह के अवसर पर सुमन मोहिनी ने भोज दिया। भोज में मृगनयनी और लाखी की थाली में विष डाल दिया। परन्तु दोनों ने वह खाना नहीं खाया। ''कुत्तों ने खाया सो वे तड़प–तड़प कर मर गए।'' बाद में किसी दिन सुमन मोहिनी ने दोनों के लिए पान भिजवाए। दासी ने पान न खाने का इशारा किया जिससे मृगनयनी और लाखी बच गईं। तीसरी बार कला के साथ पुड़िया भिजवाई किन्तु कला ने मानसिक द्वंद्व के चलते चूर्ण फेंक दिया। इसी तरह ग्वालियर के उत्तराधिकारी का प्रश्न भी षड्यंत्र का हिस्सा हो सकता है। इस पर मृगनयनी ने निर्णय लेकर अपने पुत्रों को नहीं अपितु सुमन मोहिनी के बेटे को उत्तराधिकारी बनाने का प्रस्ताव दे दिया।



BHDC-109_4th proof.indd 246 8/6/2021 2:09:13 PM

हिन्दू राजाओं में भी एक पत्नी का प्रचलन नहीं था। राजा के भी बहुविवाह होते थे लेकिन दूसरी ओर मुस्लिम शासक स्त्री–लोलुप थे। नसीरुद्दीन ने 12000 रानियाँ इकट्ठी कर ली थीं। वह 15000 रानियाँ एकत्रित करना चाहता था। उसने माण्डू के शासक और अपने पिता को जहर देकर मार दिया ताकि वह आराम से विलास कर सके और कोई भी उसके इस कार्य में बाधा न बने। इस तरह सभी राजाओं, बादशाहों और सामन्तों की पारिवारिक–सामाजिक स्थिति विषाक्त थी।

**बोध प्रश्न 1**

1. सही विकल्प का चुनाव कीजिए।
   - क) उपन्यास का आरंभ किसके आक्रमण के बाद के ग्वालियर राजा का वर्णन है। (बहलोल लोदी / गयासुद्दीन)
   - ख) लाखी किस जाति की कन्या थी ? (गूजर / अहीर)
   - ग) मृगनयनी के रहने के लिए जो महल बनाया गया था, उसका नाम क्या था ? (मानमहल / गूजरी महल)
2. रिक्त स्थान की पूर्ति करें।
   - क) मानसिंह की सबसे बड़ी रानी ..... थी। (सुमन मोहिनी / मृगनयनी)
   - ख) मृगनयनी ..... प्रधान उपन्यास है। (विवरण / आत्मकथात्मक)
   - ग) मानसिंह और मृगनयनी के विवाह में मृगनयनी की तरफ से पंडित का दायित्व .....ने निभाया। (बोधन / विजय जंगम)
3. सही / गलत पर निशान लगाइए।
   - क) विजय जंगम मूलतः मालवा का निवासी था। (सही / गलत)
   - ख) मृगनयनी उपन्यास में एक बार भूकंप आता है। (सही / गलत)
   - ग) महमूद बघर्रा गुजरात का शासक था। (सही / गलत)

## 14.3 शिल्प संरचना

'मृगनयनी' उपन्यास के केन्द्र में मृगनयनी और मानसिंह का जीवन है। वृंदावनलाल वर्मा ने प्रमुखता से इन दोनों के जीवन का वर्णन किया है। इसमें इन मुख्य चरित्रों के अलावा कई अन्य पात्रों के जीवन की कथा भी मिलती है। इसलिए उपन्यास में मूल कथा बार–बार टूट जाती है और लेखक बीच में अन्य पात्रों की कहानी भी कहता जाता है। हालाँकि उन अन्य पात्रों के जीवन का संबंध मुख्य कथा से बराबर बना रहता है। इन सहायक कथाओं से एक तो उपन्यास का कलेवर बढ़ जाता है, दूसरे इससे मध्यकाल के भारत की समग्र तस्वीर बनाने में सुविधा हो जाती है। हालाँकि सहायक कथाओं का वर्णन करते–करते लेखक कई बार उसमें रम जाता है। पढ़ते समय कई बार लगता है कि इनका वर्णन अतिरिक्त बोझिलता की सृष्टि करता है। उदाहरण के लिए नटों का जीवन तथा उनके क्रियाकलापों को अनावश्यक रूप से विस्तार दिया गया है। इसी प्रकार गुजरात के बादशाह का वर्णन करते हुए उसके अतिरिक्त भोजन पर लेखक लम्बी टिप्पणी करता है। ऐसे कई प्रकरण उपन्यास में उपलब्ध हैं। इन प्रकरणों के कारण उपन्यास का कथा–शिल्प कई बार ढीला–ढाला हो जाता है।

### 14.3.1 विवरण प्रधानता

वृंदावनलाल वर्मा ने उपन्यास की कथा का परिचय देते हुए स्वयं लिखा है कि ''1949 के अंत में एक सम्मानित पाठिका ने मुझसे मृगनयनी और मानसिंह तोमर के ऐतिहासिक



BHDC-109_4th proof.indd 247 8/6/2021 2:09:13 PM

रूमानी कथानक पर उपन्यास लिखने का अनुरोध किया।'' फिर ''अवसर पाते ही मैंने उस कथानक की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन आरंभ कर दिया। जिन स्थानों का संबंध उपन्यास की मुख्य कथा से है, उनका भ्रमण भी किया।'' फिर साल–डेढ़ साल बाद उन्होंने इस उपन्यास की रचना की।

लेखक के इस वक्तव्य से उपन्यास के शिल्प और संरचना के संदर्भ में हमें महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है। इनमें से पहली बात यह कि इस कथा को उन्होंने अपनी अन्तः प्रेरणा से उपन्यास का रूप नहीं दिया, अपितु बाह्य अनुरोध से यह कार्य किया। अन्तः प्रेरणा के अभाव के कारण यह उपन्यास बाह्य विवरणों पर आधारित हो गया। लेखक के अपने अनुभव, अपना जीवन विवेक और अपनी मनोभूमि उपन्यास में नहीं आ सकी। लेखक को जो जानकारी मिली या मिलती गई, उसे उन्होंने उपन्यास की कथा में शामिल कर लिया। हिंदी में इस तरह के कई उपन्यास लिखे गए हैं, जिनमें इतिहास के ज्ञात या अज्ञात विवरण मिलते हैं। आचार्य चतुर सेन शास्त्री, रांगेय राघव, भगवती चरण वर्मा आदि लेखकों की रचना विधि इस प्रक्रिया के अंतर्गत आती है। इसके विपरीत हजारी प्रसाद के ऐतिहासिक उपन्यासों में लेखक का अपना चिंतन, भाव–संसार और स्वानुभूति के दर्शन होते हैं। इसलिए कला की दृष्टि से द्विवेदी जी के उपन्यास अधिक प्रभावशाली हैं। वृंदावनलाल वर्मा के उपन्यासों की इस कमी की ओर कई आलोचकों ने ध्यान दिया और टिप्पणी की है। हालाँकि उपन्यास में आए कई सामाजिक प्रश्नों पर वर्मा जी भी भाव–विह्वल हुए हैं। उदाहरण के लिए जाति के प्रश्न पर, अन्तर्जातीय विवाह के प्रश्न पर उन्होंने नए ढंग से सोचा, समझा और अभिव्यक्ति दी है। इस कारण लाखी के जीवन की गति और उसकी पीड़ा आधुनिक पाठकों को आकर्षित करती है। वृंदावनलाल वर्मा अन्तर्जातीय विवाह को गलत नहीं मानते, इसलिए लाखी और अटल की पीड़ा का उन्होंने सहानुभूति पूर्ण चित्रण किया है।

### 14.3.2 लेखक केन्द्रित

उपन्यास के सिद्धांतकारों का मत है कि विवरण प्रधान उपन्यासों में आम तौर से उपन्यास लेखक केन्द्रित होता है। लेखक ही अपनी इच्छा या समझ से कथा को मोड़ देता है। जब चाहता है, तब वह कथा को रोक देता है। जब चाहता है तब कोई नई कथा कहने लग जाता है। उस पर किसी अन्य का अर्थात परिस्थिति या पात्र का नियंत्रण नहीं होता। लेखक सभी स्थानों पर उपस्थित रहता है। सभी पात्रों के व्यक्तित्व पर वह टिप्पणी कर सकता है। उनके भीतरी मनोभावों की जानकारी देता है। इस तरह उपन्यास का लेखक ही कथा को निश्चित अर्थ देता है। पाठक को लेखक के इस अर्थ से सहमत होना होता है।

'मृगनयनी' उपन्यास में इस संरचना का इस्तेमाल किया गया है। उपन्यास की यह संरचना लेखक के लिए सुविधाजनक होती है। आत्मकथात्मक उपन्यासों में कथा के सूत्र पात्र के पाले में होते हैं। अतः पात्र की गति और मनःस्थिति के विकास के साथ उपन्यास की कथा को आगे बढ़ाना होता है। 'मृगनयनी' उपन्यास में लेखक ही यह जानकारी देता है कि निन्नी के मन में मानसिंह तोमर के प्रति प्रेमभाव पनप रहा है, लेकिन लाखी के मन में मानसिंह के प्रति कोई प्रेम भाव नहीं है। लाखी मानसिंह के प्रति तटस्थ रहती है। बल्कि उसे यह जानकर और देखकर अच्छा लगता है कि निन्नी और मानसिंह स्नेह–सूत्र में बँधने वाले हैं। इसी तरह लाखी के सुन्दरी होते हुए भी मानसिंह लाखी के प्रति आकर्षित नहीं होता। वह मानसिंह के लिए निन्नी की सहेली मात्र है। इसी तरह लेखक ने निन्नी के शिकार कौशल को लाखी से बेहतर साबित किया है, ताकि मानसिंह यह निश्चय करने में असमंजस की स्थिति में न रहे कि मृगनयनी सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी और बहादुर है। पात्रों की विशेषताओं के इस प्रकार के चित्रण लेखक की योजना के अन्तर्गत किए गए हैं। इसी तरह बघर्रा का वर्णन करते



BHDC-109_4th proof.indd 248 8/6/2021 2:09:13 PM

हुए, मानसिंह की मनःस्थिति का वर्णन करते हुए या नटों के छल–प्रपंच की जानकारी देते हुए भी लेखक सर्वज्ञ बना रहता है। हम चीजों, घटनाओं और पात्रों को लेखक की दृष्टि से देखते हैं। इसलिए उपन्यास के किसी पात्र में कहीं कोई अन्तर्द्वन्द्व नहीं होता। वह एक ही भाव या मनःस्थिति में रहता है। पंडित बोधन हो या मटरू, मानसिंह की अन्य पत्नियाँ हों या मृगनयनी–सभी की मानसिकता में प्रारंभ से अंत तक कोई परिवर्तन दृष्टिगत नहीं होता। अपनी–अपनी योजना में सब निश्चित हैं। सौतियाडाह के चलते सुमन मोहिनी मृगनयनी से ईर्ष्या करती है और उससे छुटकारा पाना चाहती है। इसके लिए वह षड्यंत्र करके गुप्त नीति से मृगनयनी को मारना चाहती है। लेकिन लेखक को इतिहास के तथ्यों की रक्षा के लिए मृगनयनी को बचाना है। अतः सुमन मोहिनी के षड्यंत्र हर बार अपूर्ण रह जाते हैं, लेकिन वह कभी पीछे नहीं हटती। पात्रों का यह इकहरापन उपन्यास के लेखक केन्द्रित होने के कारण संभव हुआ है।

### 14.3.3 इतिहास का विवेक

इस उपन्यास में इतिहास पृष्ठभूमि में रहता है। इतिहास की यह पृष्ठभूमि विवरणों, सूचनाओं और तथ्यों से भरी हुई है। लेखक सबकी जानकारी देते हुए भी इतिहास की नई व्याख्या करने का प्रयत्न भी करता चलता है। इसलिए वृंदावनलाल वर्मा उपन्यास में सिर्फ इतिहास को प्रस्तुत ही नहीं करते, वरन् उसकी नई व्याख्या भी प्रस्तुत करते चलते हैं। कई बार इतिहास में परस्पर विरोधी तथ्य मिलते हैं। उनमें से लेखक को किसी एक तथ्य का चयन करना होता है। चयन की दृष्टि और स्वतत्रंता लेखक की अपनी होती है। इसे हम इतिहास का विवेक कह सकते हैं।

इसमें से कुछ प्रकरणों का उल्लेख उपन्यास के आरंभ से पहले परिचय में दिया हुआ है। मृगनयनी और मानसिंह का मिलन कैसे हुआ इस प्रश्न के संदर्भ में लेखक ने लिखा– ''परंपरा में तो उसके विषय में यहाँ तक कहा गया है कि राजा मानसिंह राई गाँव के जंगल में शिकार खेलने गए तो देखा कि मृगनयनी उपन्यास के आरंभ की निन्नी, ने जंगली भैंसे को सींग पकड़कर मोड़ दिया! एक साहब ने परम विश्वास के साथ मुझको बताया कि राजा मानसिंह अपने महल में बैठे हुए थे। नीचे देखा कि जंगली भैंसे के सींग पकड़कर मृगनयनी मरोड़ रही है और उसको मोड़ रही है!! ग्वालियर किले के भीतर जंगली भैंसा पहुँच गया और राई गाँव से, जो ग्वालियर से पश्चिम–दक्षिण में ग्यारह मील है। मृगनयनी जंगली भैंसे को मोड़ने–मरोड़ने के लिए आ गई।

मैंने पहली परंपरा को ही मान्यता दी है। ग्वालियर गजीटियर में उसी का उल्लेख है।''

इस तरह की बहुत सी जानकारियाँ परस्पर विरोधी रूप में उपलब्ध हैं।

वृंदावनलाल वर्मा कई स्थानों पर इतिहास के दुरुपयोग का भी उल्लेख करते हैं। दिल्ली का बादशाह सिकंदर लोदी जब ग्वालियर के दूत निहाल सिंह से चर्चा करता है तब सिकंदर उसको कहता है कि ग्वालियर के राजा पर हमारा अस्सी लाख टके बकाया है। ''अस्सी लाख टके तो उस वक्त का निकलता है जब पहले बादशाह ने ग्वालियर पर चढ़ाई की। उसके बाद मैंने चढ़ाई की। चार साल पीछे रकम दुगुनी हो गई। फिर अब की बार वसूली के लिए मुझको खुद आना पड़ा। इसका खर्च अलग है।'' इतिहास की इस व्याख्या से निहाल सिंह सहमत नहीं होता। उसके अपने तर्क हैं, ''पहली बार हमारे राजा के समय में जब बादशाह बहलोल ने चढ़ाई की तब वह हारकर लौटे। दूसरी बार जब आपने हमला किया तब आप भी हारकर वापिस आए। अबकी बार कौन जीता कौन हारा, इसका निर्णय होने को अवश्य बाकी है।'' इस तरह लेखक रेखांकित करता जाता है कि इतिहास में दर्ज सारी बातें विवाद से परे नहीं हैं।

इसी तरह शिलालेख की प्रामाणिकता भी सन्देह से परे नहीं है। गयासुद्दीन ने नरवर पर आक्रमण किया, परन्तु उसे विजय नहीं मिली। फिर भी उसने ''अपने अख



BHDC-109_4th proof.indd 249 8/6/2021 2:09:13 PM

बार–नवीस–दैनिकी या इतिहास–लेखक को आज्ञा दी–सुल्तान गयासुद्दीन खिलजी ने मानसिंह तोमर को नरवर के मैदान में हराया और उसे ग्वालियर की ओर खदेड़कर खुद माण्डू चला आया।'' इधर राजा मानसिंह ने ''ग्वालियर जाने से पहले उसने नरवर नगर के कोट के बाहर जयति खंभ की शिला पर माण्डू के सुल्तान की पराजय की बात खुदवा दी।'' कहने का अर्थ यह है कि इतिहास के बारे में प्राप्त सूचनाएँ पूर्णतः सत्य तथा निर्विवाद नहीं हैं।

### 14.3.4 ऐतिहासिकता का दबाव

ऐतिहासिक उपन्यासों में कथा का, पात्रों का, उनके चरित्र का विकास निश्चित रहता है। जो घटना घटित हो गई है, उसमें कोई परिवर्तन नहीं किया जा सकता लेकिन उसकी नई व्याख्या कर सकते हैं। कथा का नया अर्थ ऐतिहासिक रचनाकार भी कर सकता है। लेखक उस मूल इतिहास कथा को यथावत रूप में स्वीकार करके आगे बढ़ता है। यहाँ तक कि पात्रों का चरित्र भी यथावत ही बनाए रखता है। इतिहास से छेड़छाड़ को कभी अच्छा नहीं माना जाता। इस मर्यादा का निर्वाह वृंदावनलाल वर्मा ने भी 'मृगनयनी' में किया है। मानसिंह तोमर वीर पुरुष थे। अपराजेय योद्धा थे, लेकिन उन्होंने किसी पर आक्रमण नहीं किया। किसी को जीतने की लड़ाइयाँ उन्होंने नहीं लड़ीं। उन्होंने केवल अपने आपको बचाने की लड़ाइयाँ लड़ीं और इसमें वे सफल हुए। यही तथ्य इस उपन्यास में प्रस्तुत किया गया है। इसी तरह वृंदावनलाल वर्मा ने यूरोपीय ताकतों की उपस्थिति का संकेत भी दिया है। गुजरात की सीमा पर पुर्तगालियों की सैनिक उपस्थिति का उल्लेख कर दिया गया है। यद्यपि उनसे गुजरात के शासक ने युद्ध नहीं किया।

कला की दृष्टि से ऐतिहासिक उपन्यासकारों को पता होता है कि उपन्यास की कथा की गति कहाँ तक पहुँचेगी । इसी के साथ पात्रों का विकास और भविष्य भी अनिश्चित नहीं रहता। लेखक अंतिम निष्कर्ष जान–समझकर उसकी संगति में पूर्व कथा का वर्णन करता है। लेखक को इस तथ्य की जानकारी है कि मृगनयनी को ग्वालियर की रानी बनना है, अतः उसके चरित्र का प्रारंभ और विकास उसी दिशा की ओर बढ़ता है। लेखक धीरे–धीरे उपन्यास की कथा को उस दिशा में ले जाता है। उपन्यास की इस ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर पात्र अपनी भूमिका निभाने आते रहते हैं। इस निश्चित परिधि के बन जाने के बाद लेखक कल्पना का सहारा लेता है। तब उपन्यास में इतिहास और कल्पना का सामंजस्य बिठाने की कोशिश होती है। इतिहास जहाँ पर मौन है, वहाँ लेखक की कल्पना सक्रिय होती है। तब लेखक इतिहास के मौन में रंग भरने लगता है। यहीं उपन्यास की कला की परीक्षा भी होती है। उदाहरण के लिए मानसिंह और मृगनयनी का विवाह निश्चित है। तब भी जब दोनों पहली–पहली बार मिले होंगे, तब उनके मनोभाव क्या रहे होंगे ? किसने प्रस्ताव रखा होगा ? कैसे रखा होगा ? उस अल्पकाल में क्या घटित हुआ होगा, इसकी लेखक को कल्पना करनी होती है क्योंकि इतिहास में यह दर्ज़ नहीं है। इस उपन्यास में उन सभी मधुर क्षणों का वर्णन मिलता है। इन्हीं वर्णनों में लेखक की कल्पनाशीलता की परीक्षा होती है। उपन्यास में लाखी का जीवन बचेगा, वह माण्डू जाने से बच जाएगी, नरवर को बचाकर ग्वालियर पहुँच जाएगी– यह सब ऐतिहासिक अनिवार्यता पाठक को निश्चिंत रखती है। बोधन इतना जिद्दी पंडित है कि वह लाखी और अटल का विवाह कार्यक्रम सम्पन्न नहीं कराएगा। बाद में मुस्लिम शासकों द्वारा मारा जाएगा, तब भी लाखी और अटल का विवाह होगा– घटनाओं का यह मोड़ भी पूर्व निर्धारित है। उसमें लेखक फेर बदल नहीं कर सकता। इसी तरह इतिहास द्वारा पात्रों का ढाँचा भी लगभग पूर्व निर्धारित है। मानसिंह कुशल राजा है ,राज्य की रक्षा करता है। गरीब, कमजोर वर्ग का ध्यान रखता है। जबर्दस्ती मृगनयनी को उठाकर नहीं लाता जैसा माण्डू के बादशाह गयासुद्दीन और उसका बेटा



BHDC-109_4th proof.indd 250 8/6/2021 2:09:13 PM

करता है। गयासुद्दीन और उसका बेटा ऐय्याश और विलासी है। उनके चरित्र के साथ कोई छेड़छाड़ नहीं होती। बोधन ने जब मानसिंह के आदेश का पालन नहीं किया, लाखी और अटल का विवाह नहीं करवाया तब भी मानसिंह ने उसको दंड नहीं दिया। लखनऊ में मुस्लिम शासकों द्वारा यह उदारता नहीं दिखाई गई। इसी तरह 'मृगनयनी' भी राजमहल में अपने चरित्र की गरिमा के साथ रहती है। सारे पात्र इतिहास द्वारा दिए गए अपने दायित्वों के अनुसार उपन्यास में कर्म करते हुए दृष्टिगत होते हैं।

हालाँकि उपन्यास में दो एक खटकने वाली बातें भी हैं। एक जगह उपन्यास में दिल्ली में मुगल शासकों का जिक्र किया गया है। उपन्यास में मृगनयनी का परिचय निन्नी के रूप में होता है। आगे चलकर हमें पता चलता है कि निन्नी का नाम मृगनयनी है। मृगनयनी के नाम का उल्लेख पहली बार गयासुद्दीन को उसका मुँहलगा ख्वाजा बताता है– ''गाँव में जिसको निन्नी कहते हैं उसकी असली नाम मृगनयनी है और दूसरी जिसको लाखी कहते हैं, असल में लाखा रानी है।''

नाम का यह संस्कृतिकरण–गाँव में संभव होना थोड़ा कठिन लगता है। दूसरी घटना भूकम्प से संबंध रखती है। जब भूकम्प आया तो किसी को समझ में नहीं आया कि क्या हो रहा है, यह तो संभव है। ऐसे समय में ''मृगनयनी ने उत्तर दिया– 'भूकंप'। हम सबके कर्तव्य का स्मरण दिलाने आया था।'' इस समय यह प्रश्न उठता है कि मृगनयनी ने भूकम्प को भूकम्प के रूप में कैसे पहचाना ? क्या मध्यकाल में भूकम्प को भूकम्प के रूप में पहचानने का ज्ञान विकसित हो गया था ? फिर जो बात मानसिंह को मालूम नहीं थी, उसकी जानकारी मृगनयनी को कैसे हो गई ? तब तो भूकम्प या धरती हिलने की घटना को ईश्वर का कोप ही माना जाता रहा होगा।

### 14.3.5 इतिहास और कल्पना का अन्तर्द्वन्द्व

'मृगनयनी' में इतिहास और कल्पना का द्वंद्व देखने को मिलता है। हिंदी में अधिकांश लेखकों की भाँति वृंदावनलाल वर्मा भी प्रेम का अर्थ छायावादी प्रेम से ही लेते हैं। पन्द्रह–सोलह वर्ष की उम्र में किसी को पहली–पहली बार देखा और प्रेम हो गया। मृगनयनी उस समय पन्द्रह–सोलह वर्ष की थी। लाखी भी उसकी समवयस्क थी। दोनों को ही प्रेम हुआ। मानसिंह और अटल ने प्रेम निवेदन किया और यह देखकर आश्चर्य होता है कि दोनों के प्रेम प्रस्ताव का तरीका लगभग समान है। यहाँ लेखक के पास कल्पना के उड़ान की संभावना थी, लेकिन यहाँ लेखक चूक गया। मृगनयनी–मानसिंह के प्रेम का वर्णन करते हुए लेखक को लगता है कि उसे तो ऐतिहासिक उपन्यास लिखना था। और तब लेखक इस प्रकरण को छोड़कर फिर इतिहास पुरुषों के लड़ाई–झगड़ों का वर्णन करने लग जाता है। इसलिए कई बार लगता है कि उपन्यास में इतिहास और कल्पना अलग–अलग हैं। दोनों का समन्वय नहीं हो पाया। प्रेम करते हुए नायक–नायिका आधुनिक हो जाते हैं, शेष प्रकरण वे मध्ययुगीन बने रहते हैं। मध्यकाल के व्यक्ति का व्यवहार आधुनिक व्यक्ति से अलग होता है या होना चाहिए, लेकिन उपन्यास में यह फाँक दिखाई देती है। यह फाँक हमें हजारी प्रसाद द्विवेदी के ऐतिहासिक उपन्यासों में दिखाई नहीं देती। अतः ऐतिहासिक उपन्यासों के शिल्प की दृष्टि से इसे बड़ी कमजोरी माना जाएगा।

उपन्यास का अंत बहुत शांतिपूर्ण तरीके से कर दिया गया है। अंत में कोई तनाव नहीं है। उत्तराधिकार का प्रश्न मृगनयनी ने हल कर दिया है। बाकी ''महमूद बघर्रा उसके दो वर्ष पीछे भोजन, ब्यालू और रक्तपात करते–करते मर गया। दक्षिण में कृष्णदेव राय ने विजयनगर को समृद्ध किया। सिकंदर लोदी को उसके भाई जलाल ने परेशान किया।'' मृगनयनी और मानसिंह का प्रेम यथावत जीवनपर्यन्त बना रहा। उन्होंने 'कला' और 'कर्तव्य' का समन्वय कर लिया। उपन्यास का अंत होते– होते दोनों खुश हैं और संतुष्ट हैं। इसी संतुष्टि में उपन्यास समाप्त हो जाता है।



BHDC-109_4th proof.indd 251 8/6/2021 2:09:13 PM

### 14.3.6 भाषा

'मृगनयनी' उपन्यास की भाषा प्रौढ़ और गम्भीर है। वृंदावनलाल वर्मा ने खड़ी बोली हिंदी के शिष्ट सामान्य रूप का प्रयोग किया है। चूँकि उपन्यास का शिल्प मध्यकालीन भारतीय इतिहास है, जिसमें भारत में मुस्लिम शासन की उपस्थिति भी एक तथ्य है। यही कारण है कि उस काल में उनके मध्य कुछ अरबी, फ़रसी और तुर्की के शब्द भी सहज रूप से आ गए थे, अतः लेखक मुस्लिम शासकों और दरबारों की चर्चा करते हुए भाषा के उसी लहजे को उसी रूप में पाठकों के सामने रखता है। उनके लिए राजा, सम्राट जैसे शब्दों का प्रयोग न करके बादशाह, खिलजी आदि का प्रयोग करता है। उसी तरह से उनके नाम भी विदेशी भाषाओं के अनुरूप हैं। अपने चिंतन, व्यवहार और राजकाज में वे स्तरीय खड़ी बोली का ही उपयोग करते हैं–''दिल्ली की सल्तनत को अखण्ड बनाने में दो बड़ी–बड़ी बाधायें और भी थीं– एक ग्वालियर, दूसरा मेवाड़। मेवाड़ कुछ दूर पड़ता था परन्तु ग्वालियर तो छाती का काँटा था। दिल्ली से ग्वालियर आक्रमण करने के लिए आना बहुत समय ले जाता था इसलिए आगरे को बसाने, बनाने और उसको एक बड़ी छावनी का रूप देने का सिकन्दर ने संकल्प किया।'' तर्क–वितर्क और विश्लेषण–मूल्यांकन में उनकी भाषा गंभीर और गरिष्ठ रहती है।

चूँकि मृगनयनी का प्रमुख केन्द्र ग्वालियर है, अतः उनमें स्थानीय भाषा, बुंदेलखंडी का असर साफ–साफ देखा जा सकता है। हालाँकि लेखक ने आंचलिक शब्दों का प्रयोग बहुत कम किया है, फिर भी 'अरना भैंसा' जैसे शब्द उसमें आ ही जाते हैं। निन्नी और लाखी के आपसी संवाद की भाषा स्थानीय, चुटीली और अर्थव्यंजक है। राजा मानसिंह और उनकी रानियों की भाषा तत्सम बहुल हिंदी है। मृगनयनी को वे गँवार समझती हैं। हालाँकि मृगनयनी प्रयास पूर्वक इस गंभीर भाषा को सीखती है और उसी का व्यवहार करने का प्रयास है।

इतिहास के वर्णन की भाषा विवरण प्रधान है तथा पात्रों के आत्मीय संवाद की भाषा सहज, चुटीली और व्यंग्य प्रधान है। इसी तरह नटों की भाषा थोड़ी–सी अलग है, तब भी वे मुख्यत खड़ी बोली का ही प्रयोग करते हैं।

### 14.3.7 शैली

'मृगनयनी' वर्णनात्मक शैली में लिखा गया उपन्यास है। लेखक तटस्थ रहकर इतिहास में घटित घटनाओं का वर्णन करता है। इतिहास की इस घटना को रुचिकर और पठनीय बनाने के लिए वह कुछ नाटकीयता की सृष्टि करता है, जिससे पाठक आगे आने वाली घटनाओं को जानने के लिए रोमांचित और उत्कंठित हो जाता है। लाखी द्वारा नरवर को बचाने की घटना का वर्णन इस दृष्टि से उल्लेखनीय है। लेखक अन्य पात्रों के माध्यम से इन घटनाओं पर टिप्पणी भी करता जाता है। आम तौर से ऐतिहासिक रचनकार तथ्यों पर अपना ध्यान केन्द्रित रखता है, परन्तु वृंदावनलाल वर्मा इन तथ्यों की ऐतिहासिकता पर भी प्रश्न उठाते हैं। उनके अनुसार शिलालेखों की प्रामाणिकता की भी जाँच –परख अवश्य कर लेनी चाहिए। लेखन की यह शैली तार्किकता को प्रमुख मानकर चलती है। इसलिए वृंदावनलाल वर्मा इतिहास की घटनाओं की तार्किक व्याख्या करते जाते हैं। इस तरह लेखक, इतिहास का वर्णन करते–करते इतिहास समझाने भी लगता है।

वृंदावनलाल वर्मा ने कहीं–कहीं आत्मकथात्मक शैली का भी सहारा लेते हैं। जहाँ पात्र अपने आप से संवाद करने की स्थिति में होता है। कला के जीवन का वर्णन करते हुए लेखक इस शैली का उपयोग करता है। कला, स्थापत्य और चित्रकला, संगीत का वर्णन करते हुए लेखक विश्लेषणात्मक शैली का उपयोग करता है। शेष उपन्यास वर्णनात्मक शैली में ही चलता है। जंगल, पहाड़ घाटियों और युद्धों का वर्णन करते हुए वर्मा जी विस्तार देते चले जाते हैं। पाठक इस वर्णन में डूब जाता है। इस शैली में लेखक की



BHDC-109_4th proof.indd 252 8/6/2021 2:09:13 PM

सर्वज्ञता स्वीकृत होती जाती है। निन्नी और लाखी के काल्पनिक जीवन के वर्णन में लेखक हास्य और परिहास का इस्तेमाल करता है। देखा जाए तो सानान्यतः मृगनयनी में ऐसे प्रकरण कम ही मिलते हैं।

**बोध प्रश्न–2**

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग आठ–आठ पंक्तियों में दीजिए :

   क) 'मृगनयनी' उपन्यास के एतिहासिक परिवेश का परिचय दीजिए।

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

   ख) 'मृगनयनी' की शिल्प–संरचना पर विचार कीजिए।

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

## 14.4 सारांश

- मृगनयनी का परिवेश ऐतिहासिक है। उपन्यास के केन्द्र में ग्वालियर है लेकिन दिल्ली, माण्डू, मेवाड़ और नरवर का वर्णन भी उपन्यास में मिलता है।
- उपन्यास में मध्य प्रदेश के प्राकृतिक परिवेश का भी विस्तृत वर्णन किया गया है। उपन्यास की नायिका निन्नी उर्फ मृगनयनी राई गाँव की निवासी है। वहाँ वह खेती तथा पशुपालन करती है। राई गाँव की प्रवृत्ति उपन्यास में दिखाई गई है। इसी तरह उपन्यास में कुछ नट पात्र आते हैं जो जंगल में ही रहते हैं। वे जब नरवर की तरफ जाते हैं, तब लेखक रास्ते के पहाड़ों, नदी–नालों का वर्णन करता है।
- मृगनयनी, राई से ग्वालियर आती है तब उसका परिवेश बदल जाता है। इस कारण उसके व्यक्तित्व में राजकीय गरिमा आ जाती है। राज महल के परिवेश में रानियों के आपसी संबंधों और तनावों का वर्णन किया गया है।
- लेखक ने ग्वालियर के महलों और मंदिरों की स्थापत्य कला का बारीकी से चित्रण किया है। ये भवन दक्षिण और उत्तर भारत की संस्कृति में समन्वय स्थापित करते हैं।



BHDC-109_4th proof.indd 253 8/6/2021 2:09:13 PM

- शिल्प की दृष्टि से यह बृहद उपन्यास है। इसमें इतिहास और कल्पना का सामंजस्य है। इसी तरह युद्ध और प्रेम जैसे परस्पर विरोधी भावों का वर्णन भी यथानुसार किया गया है।
- उपन्यास में मूल कथा के साथ अनेक सहायक कथाओं का वर्णन किया गया है। इससे उस दौर के प्रासंगिक पात्र भी उपन्यास में आ जाते हैं।
- उपन्यास विवरण प्रधान है तथा घटनाओं का वर्णन लेखक केन्द्रित है।
- उपन्यास का अंत शांतिपूर्वक वातावरण में होता है।

## 14.5 बोध प्रश्नों के उत्तर

**बोध प्रश्न–1**

1. क) बहलोल लोदी, ख) अहीर, ग) गूजरी महल।
2. क) सुमनमोहिनी, ख) विवरण, ग) बोधन।
3. क) गलत, ख) सही, ग) सही।

**बोध प्रश्न–2**

4. क) के उत्तर के लिए देखिए 14.2.1
   ख) के उत्तर के लिए देखिए 14.3



BHDC-109_4th proof.indd 254 8/6/2021 2:09:14 PM

# इकाई 15 मन्नू भंडारी के उपन्यास और 'आपका बंटी'

**इकाई की रूपरेखा**


15.0 उद्देश्य

15.1 प्रस्तावना

15.2 मन्नू भंडारी का जीवन परिचय

15.2.1 मन्नू भंडारी का साहित्यिक परिचय

15.2.2 मन्नू भंडारी के कहानी–संग्रह

15.2.3 मन्नू भंडारी के उपन्यास

15.3 उपन्यास का कथ्य / कथा–सार

15.4 उपन्यास का शीर्षक

15.5 उपन्यास की अतंर्वस्तु

15.5.1 एकाकी परिवारों में अलगाव के परिणाम

15.5.2 उपन्यास की मुख्य घटनाएँ

15.5.3 पीड़ा का आख्यान

15.6 सारांश

15.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

15.8 संदर्भ सहित व्याख्या

15.9 उपयोगी पुस्तकों की सूची


## 15.0 उद्देश्य

इस इकाई में आप कथाकार मन्नू भंडारी का साहित्यिक परिचय जान सकेंगे। एक समृद्ध कथाकार के रूप में उनके संपूर्ण साहित्य का संक्षिप्त परिचय आपको यहाँ मिलेगा। उनके कथा–संसार से परिचय के अंतर्गत आप उनकी कहानियों और उपन्यासों का परिचय प्राप्त करेंगे। उनके द्वारा रचित उपन्यास 'आपका बंटी' का कथा–सार पढ़ेंगे। पाठ में उपन्यास की अंतर्वस्तु संबंधी विस्तृत जानकारी आपको मिलेगी। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- कथाकार के साहित्यिक व्यक्तित्व से परिचित हो सकेंगे;
- कथाकार की चुनिंदा कहानियों की विषय–वस्तु जान पाएँगे;
- कथाकार के उपन्यासों के कथावृत्त का संक्षिप्त रूप आप जानेंगे;
- 'आपका बंटी' उपन्यास की कथा का सार जान सकेंगे;
- उपन्यास के शीर्षक का औचित्य समझ सकेंगे; और
- उपन्यास की अंतर्वस्तु और इसके वैशिष्ट्य को बता पाएँगे।

## 15.1 प्रस्तावना

साहित्य समाज सापेक्ष विधा है। अपने समय की चुनौतियों का वहन करती यह कला कभी समय–समाज निरपेक्ष नहीं रह सकती। लेखक समाज से अपनी आधारभूत सामग्री लेकर, उसका परिष्कार और संवर्द्धन करके उसे नए रूप में रचकर, अभिव्यक्ति

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

कौशल से सम्पन्न कर दोबारा समाज को लौटाता है। इसे ही मुक्तिबोध ने 'कला का तीसरा क्षण' कहा है। कथाकार मन्नू भंडारी का रचना–संसार भी इसकी पुष्टि करता है। उनकी साहित्यिक कृतियाँ इसका प्रमाण हैं। सतत् सक्रिय रचनाकार मन्नू भंडारी ने कथा के क्षेत्र में अनेक महत्त्वपूर्ण कहानियाँ और उपन्यास अपने पाठकों को दिए हैं। उनका रचनात्मक व्यक्तित्व किन उपलब्धियों से समृद्ध है, इस पाठ में आप इसके विषय में जानकारी प्राप्त करेंगे। रचनाकार के लेखन के मूल सरोकार उसकी रचना में किस तरह अभिव्यक्त होते हैं–'आपका बंटी' उपन्यास के संदर्भ में इस पर विचार किया जाएगा। आधुनिक कथा के आयतन में सामाजिक और निजी यथार्थ बहुत महत्वपूर्ण धरातल है। 'आपका बंटी' निजी यथार्थ को गहरी संवेदनशीलता के साथ पाठक के समक्ष प्रस्तुत करता है।

## 15.2 मन्नू भंडारी का जीवन परिचय

मन्नू भंडारी का जन्म 3 अप्रैल, सन् 1931 को मध्यप्रदेश के भानपुर में हुआ था। सन् 1949 में कलकत्ता विश्वविद्यालय से उन्होंने स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण की और सन् 1952 में वाराणसी के बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से आपने परास्नातक की परीक्षा उत्तीर्ण की। उच्च शिक्षा के बाद मन्नू भंडारी कुछ समय के लिए कलकत्ता के रानी बिड़ला कॉलेज में प्राध्यापिका रहीं और बाद में सन् 1964 से दिल्ली विश्वविद्यालय के मिरांडा हाउस कॉलेज में हिंदी की प्राध्यापिका के रूप में कार्यरत रहीं। सन् 1991 में वह सेवानिवृत्त हुईं।

लेखन के संस्कार उन्हें अपने पिता श्री सुखसम्पतराय से मिले। बाद में कथाकार और प्रतिष्ठित साहित्यिक पत्रिका 'हंस' के संपादक राजेंद्र यादव से उनका परिचय हुआ। यह परिचय आगे चलकर अंतर्जातीय विवाह में बदला। दोनों ने मिलकर एक साझा उपन्यास भी लिखा जो साहित्य के क्षेत्र में एक नव्य प्रयोग रहा।

### 15.2.1 मन्नू भंडारी का साहित्यिक परिचय

हिंदी में नयी कहानी के समय मन्नू भंडारी ने लेखन के क्षेत्र में कदम रखा। 'मैं हार गई' उनकी पहली कहानी थी। मन्नू जी के लेखन का मुख्य क्षेत्र गद्य है। इसमें भी कथा–लेखन केंद्र में है। उनके बारह कहानी–संग्रह हैं–'एक प्लेट सैलाब', 'मैं हार गई', 'तीन निगाहों की एक तस्वीर', 'यही सच है', 'त्रिशंकु' 'सम्पूर्ण कहानियां' आदि।

मन्नू जी के चार उपन्यास हैं–'एक इंच मुस्कान','आपका बंटी', 'महाभोज' और 'स्वामी'। विषयगत विविधता मन्नू भंडारी के कथा–लेखन की विशेषता है। नाटक–एकांकी में 'महाभोज', 'बिना दीवारों के घर', 'उजली नगरी चतुर राजा', बाल साहित्य में 'आसमाता' (उपन्यास), 'आंखों देखा झूठ', और 'कलवा' उल्लेखनीय हैं। कथा के अतिरिक्त कथेतर जगत से संबंधित उनकी रचनाओं में संस्मरण 'कितने कमलेश्वर' उल्लेखनीय है। इसके अतिरिक्त 'संकल्प का सौंदर्यशास्त्र' शीर्षक से उनकी एक संपादित किताब भी है। उनकी कहानी 'यही सच है' पर सन् 1974 में बासु चटर्जी के निर्देशन में 'रजनीगंधा' नाम से बनी फिल्म चर्चित और प्रशंसित रही। बाद में सन् 1977 में मन्नू भंडारी के उपन्यास 'स्वामी' पर निर्देशक बासु चटर्जी ने फिल्म बनाई जिसके संवाद भी उन्होंने ही लिखे। यह फिल्म भी 'रजनीगंधा' की तरह बहुचर्चित और लोकप्रिय हुई। फिल्म में प्रमुख स्त्री किरदार का चरित्र निभाने के लिए अभिनेत्री शबाना आज़मी को सन् 1978 में फिल्मफेयर का सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का पुरस्कार भी प्राप्त हुआ।

'एक कहानी यह भी' शीर्षक से उनकी आत्मकथा भी अत्यधिक चर्चित रही है। वरिष्ठ कथाकार और मन्नू जी के साहित्य की गंभीर अध्येता सुधा अरोड़ा ने इस आत्मकथा के संदर्भ में आलोचनात्मक प्रतिक्रिया दी है–'' मन्नू जी कहती जरूर हैं ''पुरुषों की सामंती और दंभी मनोवृत्ति को उघाड़ना चाहिए।''...यह मन्नू जी का कथन है पर दूसरों



BHDC-109_4th proof.indd 256 8/6/2021 2:09:14 PM

के लिए। दूसरी महिलाएँ खुलकर लिखें और ऐसे पुरुषों के व्यवहार पर अंकुश लगाएँ। पर मन्नू जी यह नहीं करेंगी। दरअसल वे अपने निजी प्रसंगों को एक तटस्थ नजरिए से देख नहीं पाईं, न अपनी निजी पीड़ा के विश्लेषण में सामाजिक सरोकार ढूंढ़ पाईं, इसलिए अपने जीवन के त्रासद प्रसंगों का खुलकर ब्यौरा नहीं दिया। उन्होंने अपनी शालीनता, गरिमा, संभ्रांतता को गहनों की तरह पहन रखा है। आत्मकथा आप तभी लिख सकते हैं जब आप यह मानकर चलें कि आपके पास खोने के लिए कुछ नहीं बचा–जैसे बेबी हालदार, बेबी कांबले, चंद्रकिरण सौनरेक्सा ने लिखी है। जैसे मल्लिका अमरशेख, सुनीता देशपांडे, उर्मिला पवार ने लिखी है।''

(स्त्री–समय–संवाद : सुधा अरोड़ा से साक्षात्कार, पृ.117)

मन्नू भंडारी की रचनाओं को अनेक पुरस्कार–सम्मान प्राप्त हुए हैं। 'महाभोज' के लिए उन्हें उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, उत्तर प्रदेश का पुरस्कार मिला। 'महाभोज' को भारतीय भाषा परिषद कोलकाता का पुरस्कार भी मिला। मन्नू भंडारी को बिहार राज्य भाषा परिषद का पुरस्कार, भारतेंदु हरिश्चंद्र एवार्ड और पीपल्स एवार्ड भी मिला है। इसके अतिरिक्त राजस्थान संगीत नाटक अकादमी, हिंदी अकादमी दिल्ली के शलाका सम्मान, व्यास सम्मान आदि से मन्नू जी सम्मानित रही हैं।

### 15.2.2 मन्नू भंडारी के कहानी–संग्रह

कथाकार मन्नू भंडारी के बारह कहानी–संग्रह प्रकाशित हैं। 'मैं हार गयी', 'तीन निगाहों की तस्वीर', 'यही सच है', 'एक प्लेट सैलाब', 'त्रिशंकु', 'आंखें देखा झूठ', 'मन्नू भंडारी की श्रेष्ठ कहानियां', 'मेरी प्रिय कहानियां', 'प्रतिनिधि कहानियां', 'दस प्रतिनिधि कहानियां', 'नायक खलनायक विदूषक' और 'कथा–पटकथा' शीर्षक से उनके संग्रह प्रकाशित हैं।

**'मैं हार गयी'** मन्नू भंडारी की पहली कहानी है और यही उनके पहले कहानी–संग्रह की शीर्षक कहानी भी है। यह कहानी भैरवप्रसाद गुप्त के संपादन में निकलने वाली महत्त्वपूर्ण पत्रिका 'कहानी' में प्रकाशित हुई थी। कहानी आजादी के बाद के मोहभंग की सूरत को नेताओं की कथनी और करनी के द्वैत में उभारती है। कहानी अपने कथ्य में ही नहीं शिल्प में भी विशिष्ट है। कहानी के भीतर एक कहानी निर्मित होती है और कहानी की रचना–प्रक्रिया और दो भिन्न वर्ग की पृष्ठभूमियों (विपन्न और सम्पन्न) में दो नेताओं के महान बनने से रह जाने की स्थितियों को यह कहानी बड़े कौशल, व्यंग्य और जीवतंता के साथ सामने लाती है। वर्तमान में एक भी सर्वगुण सम्पन्न नेता का निर्माण न कर पाने की स्थिति का विवश लेखकीय स्वीकार है–'मैं हार गयी'। इसी संग्रह की एक अन्य सशक्त कहानी है–**'एक कमजोर लड़की की कहानी'**। इस कहानी का केंद्रीय चरित्र 'रूप' नाम की एक लड़की है। बचपन से ही सामाजिक अनुकूलन का शिकार रही रूप, समाज, नैतिकता, शुचिता के दबावों के चलते अपने जीवन की इच्छाओं को पूरा नहीं कर पाती। पढ़ाई के विषयों का चयन करने के लिए भी वह परनिर्भर है और जीवनसाथी के चयन के विषय में भी। रूप का चरित्र उन अनेक विवश लड़कियों की गाथा है जिनमें निर्णय की क्षमता का अभाव उन्हें लगातार कमज़ोर और परनिर्भर बनाता जाता है।

**'यही सच है'** कहानी प्रेम की पृष्ठभूमि पर रची गई कहानी है जिसके केंद्र में दीपा नाम की युवती है। दीपा अपने जीवन के पहले प्रेम को खो अवश्य चुकी है पर अतीत उसके वर्तमान को लगातार प्रभावित करता है। दीपा का वर्तमान उसके प्रति समर्पित प्रेमी से जुड़ा है। एक द्वंद्व में झूलती दीपा दोनों प्रेमियों में तुलना करती है। उसके मनोविज्ञान को यह कहानी खूबसूरती से सामने लाती है। द्वंद्व के बाद दीपा एक ठोस निणर्यात्मक भूमि पर पहुँचती है और विगत के स्थान पर वर्तमान का चयन करती है।



BHDC-109_4th proof.indd 257 8/6/2021 2:09:14 PM

इस प्रकार 'एक कमजोर लड़की की कहानी' से भिन्न यह एक सकारात्मक कहानी भी बनती है। उनकी **'कील और कसक'** कहानी जहाँ पति की पत्नी के प्रति उदासीनता को सामने लाती है वहाँ **'नई नौकरी'** कहानी पति की आज्ञापरायणता और उसकी सफलता के लिए पत्नी के अस्तित्व उसकी नौकरी से इस्तीफे की घटना को प्रस्तुत करती है। पति की सफलता के मार्ग में पत्नी के अस्तित्व की विलीनता को यह कहानी प्रकट करती है। इस प्रकार कथाकार की अधिकांश कहानियाँ स्त्री संसार को केंद्र में रखकर रची गयी हैं।

### 15.2.3 मन्नू भंडारी के उपन्यास

#### एक इंच मुस्कान

जिए–भोगे सत्य और प्रामाणिक अनुभव की आवाज उठाने वाले नई कहानी आंदोलन की महत्त्वपूर्ण कथाकार मन्नू भंडारी का पहला उपन्यास 'एक इंच मुस्कान' नई कहानी के अगुआ कथाकार और उनके जीवन साथी राजेंद्र यादव के साथ संयुक्त रूप से लिखा गया एक प्रयोगधर्मी उपन्यास है। यह सन् 1961 में प्रकाशित हुआ। 'ज्ञानोदय' पत्रिका में यह उपन्यास धारावाहिक किश्तों के रूप में प्रकाशित होता था। यह आधुनिक जीवन में घटित एक दुखद प्रेम कहानी है। अमर, रंजना और अमला तीन चरित्रों के माध्यम से यह कहानी कही गई है। भले ही यह उपन्यास एक रचनाकार दम्पति का साझा प्रयास रहा फिर भी पत्रिका में प्रकाशित होने पर राजेंद्र जी की अपेक्षा मन्नू जी के लिखे अंशों पर पाठक अधिक रीझते थे। अपनी आत्मकथा 'एक कहानी यह भी' में मन्नू जी ने बताया है कि ज्ञानोदय के संपादक शरद देवड़ा बताते थे– ''...राजेंद्र जी के अध्याय पर तो कोई पत्र आए ही नहीं...अब देखिए मन्नू जी के अध्याय पर कितने प्रशंसात्मक पत्र आए हैं।''

#### आपका बंटी

सन् 1971 में प्रकाशित 'आपका बंटी' मन्नू जी का सर्वाधिक चर्चित उपन्यास है। अपने लेखन वर्ष से लेकर आज तक इसकी चर्चा लगातार बनी हुई है। यह उपन्यास आधुनिक जीवन के एकाकी परिवारों में तलाकशुदा माता–पिता की अपनी स्थिति, उनके जीवन में टूटती पुरानी स्थिति और नयी बनती स्थिति से पैदा होती विसंगतियों का दंश झेलते बच्चे की पीड़ादायक स्थिति का आख्यान है। बंटी के अवचेतन की पर्तों को उघाड़ने के साथ यह उपन्यास उसके माता–पिता के अकेलेपन और पीड़ा से भी साक्षात्कार कराता है।

#### महाभोज

सन् 1979 में प्रकाशित 'महाभोज' मन्नू भंडारी का राजनीतिक उपन्यास है जिसमें स्वातंत्र्योत्तर काल की राजनीति में आई मूल्यहीनता और विसंगतियों की कहानी कही गई है। भ्रष्ट नेताओं का चरित्र, उनकी अमानवीयता, गुंडागर्दी, चुनाव जीतने के सारे हथकंडे और पुलिस–प्रशासन से उनकी सांठ–गांठ का इसमें चित्रण है। यह संयोग ही है कि मन्नू भंडारी की पहली कहानी–' मैं हार गयी' भी राजनीति और वर्तमान नेताओं के कर्म और चरित्र के द्वैत का मूल्यांकन करती है। 'महाभोज' उपन्यास स्वतंत्रता से उपजे मोहभंग ,भ्रष्टाचार, अनैतिकता, दलितों पर अत्याचार, सामाजिक न्याय के लिए आवाज उठाना, जनता की बेचारगी के साथ जनतंत्र की विडम्बनामयी तस्वीर को पाठक के समक्ष रखता है। पूँजीवादी लोकतंत्र का घिनौना और अमानवीय रूप किस कदर आम आदमी के जीवन को प्रभावित करता है इसकी अभिव्यक्ति यह उपन्यास करता है। इस उपन्यास का तेवर विद्रोही है। 'महाभोज' अपने समय के यथार्थ को काल्पनिक कथा के रूप में व्यक्त करता है। बाद में इस उपन्यास का नाट्य रूपांतरण हुआ और इसकी अनेक नाट्य प्रस्तुतियाँ भी हुईं।



BHDC-109_4th proof.indd 258 8/6/2021 2:09:14 PM

## स्वामी

मन्नू भंडारी का 'एक इंच मुस्कान' अपने सहयात्री राजेंद्र यादव के साथ मिलकर लिखा गया उपन्यास है तो 'स्वामी' उपन्यास को मन्नू जी का रूपांतरित उपन्यास कहा जा सकता है। 'शरतचंद्र से क्षमा याचना सहित' उपन्यास की भूमिका में उन्होंने यह स्वीकार किया है। यह उपन्यास शरतचंद्र की कहानी 'स्वामी' का विस्तार है। उपन्यास की कहानी मिनी नाम के चरित्र के प्रेम और विवाह के पक्षों में गहरे अंतर्द्वंद्व की कहानी है। विवाहित होने पर भी अपने प्रेमी को न भूल पाने और विवाह के बाद घटित संयोग से प्रेमी से मुलाकात और उसके संग भाग चलने का निर्णय ले लेनी वाली मिनी स्थितियों का पुनर्मूल्यांकन करती है। पति से विरक्ति धीरे–धीरे उसके स्वभाव के प्रति मिनी की सहानुभूति में परिवर्तित होती है और फिर आस्था में। द्वंद्व से गुजरकर मिनी अपने निर्णय को बदलती है और अपने पति के साथ जीवन बिताने का संकल्प लेती है।

### बोध प्रश्न–1

1. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए–
   1. मन्नू भंडारी हिंदी कहानी की ..... धारा से जुड़ी कहानीकार रहीं।
   2. ..... और ..... ये दो मन्नू भंडारी के कहानी–संग्रह हैं।
   3. उपन्यास 'आपका बंटी' का प्रकाशन वर्ष ..... है।
   4. ..... मन्नू भंडारी की पहली कहानी है और यही उनके पहले संग्रह की शीर्षक कहानी भी है।
2. इनमें से कौन–सा मन्नू भंडारी का उपन्यास नहीं है। कोष्ठक में सही का निशान का लगाइए।
   1. महाभोज ( )
   2. आपका बंटी ( )
   3. गोदान ( )
   4. एक इंच मुस्कान ( )
3. पाँच पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

   क) कथाकार मन्नू भंडारी का संक्षिप्त साहित्यिक परिचय दीजिए।

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

   ख) मन्नू भंडारी की कहानियों पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....



BHDC-109_4th proof.indd 259 8/6/2021 2:09:14 PM

## 15.3 आपका बंटी का कथ्य/कथा–सार

'आपका बंटी' उपन्यास का केंद्र बंटी उर्फ अरूप बत्रा नामक नौ वर्षीय, चौथी कथा में पढ़ने वाला लड़का है। उपन्यास की घटनाओं का केंद्र भी बंटी है और घटनाओं की प्रतिक्रियाओं का भोक्ता भी वही है। यह उपन्यास बाल–मनोविज्ञान की अनेक परतों को पाठकों के समक्ष खोलता है। बंटी का जीवन उसके हमउम्र अन्य बच्चों की तरह सामान्य नहीं है। वह भले ही एक सम्पन्न घर का इकलौता लड़का है पर उसके माँ और पिता कुछ वर्षों से अलग रहते हैं। उसके बालमन पर इस दुख की गहरी छायाएँ विद्यमान हैं। माँ–पिता का गृहस्थ जीवन टूटने की कगार पर है। सात साल के गृहस्थ जीवन में बंटी के पापा अजय और ममी शकुन के बीच अपनत्व विकसित न हो सका। जिसका पूरा असर बंटी के जीवन पर दिखाई देता है। बंटी की ममी शकुन एक पढ़ी–लिखी, संभ्रांत, आत्मनिर्भर महिला हैं जो एक प्रतिष्ठित कॉलेज में प्रिंसीपल हैं। उसके पिता अलग होकर दूसरे शहर कलकत्ता में रहते हैं और वहाँ किसी कंपनी में मैनेजिंग डॉयरेक्टर हैं। बंटी, ममी के साथ कॉलेज के आवासीय परिसर में रहता है।

घर की देखभाल करने वाली फूफी, बंटी के बहुत निकट हैं। बंटी के अकेले जीवन में उसके ममी–पापा के अतिरिक्त स्नेह के भरे–पूरे क्षण फूफी के कारण ही हैं। फूफी के परी–लोक के किस्सों में बंटी की जान बसती है। फूफी के अतिरिक्त पड़ोस में रहने वाला उसका हमउम्र दोस्त टीटू है। टीटू के साथ बंटी खूब खेलता है, लड़ता–झगड़ता भी है। उसकी अम्माँ को बंटी पसंद नहीं है। कुछ स्कूली दोस्त भी बंटी के जीवन में हैं। बंटी की दुनिया बहुत छोटी–सी है। इस छोटी–सी दुनिया में अकेलापन, अभाव और माता–पिता के साथ के लिए बंटी तरसता है। उसकी इच्छा है कि ममी–पापा की लड़ाई किसी भी सूरत में दोस्ती में बदल जाए। घर में अधिक रहने के कारण वह ममी पर पूरी तरह निर्भर है। उसकी तमाम हरकतें कई लोगों को लड़कियों जैसी भावुक लगा करती हैं।

शकुन चाहती है कि उसका परिवार सुखी परिवार बने। उसका बेटा बंटी खुश रहे। शकुन के जीवन का अकेलापन उस पर हावी होता जाता है। बंटी उसका एकमात्र आसरा है। बंटी के पापा द्वारा भेजे गए वकील चाचा के घर आने से पता चलता है कि बंटी के ममी–पापा के रिश्ते का आखिरी तंतु भी नष्ट होकर तलाक की भेंट चढ़ने वाला है। पापा का संबंध मीरा नाम की एक अन्य स्त्री से है। वह गर्भवती है इसलिए तलाक लेकर विवाह करना अब पापा के लिए अनिवार्य हो गया है। शकुन जीवन की एक गहरी त्रासदी से गुजरती है। उसके दुख का साथी बंटी है। घर के हालात बंटी को असमय बड़ा बना देते हैं। पापा से प्यार करते हुए और उनके लाए खिलौने से खेलने का इच्छुक होते हुए भी वह अपनी इन इच्छाओं को ममी की खातिर त्याग देता है। पापा की एकमात्र तस्वीर को भी अल्मारी में रख देता है जिससे ममी को कोई दुख न पहुँचे। ममी को खुश करने के लिए वह सभी उपाय करता है।

बंटी अच्छा चित्रकार है। पढ़ाई–लिखाई में होशियार है। फूफी से जादूनगरी के किस्से सुनने का उसे बहुत शौक है। किस्से सुनकर भाँति–भाँति की कल्पनाएँ किया करता है। यही नहीं छोटी उम्र में एक बगीचा भी उसने लगाया है। उसे बागवानी की गहरी जानकारी है। ममी–पापा के तलाक के कुछ दिन बाद वह ममी के व्यवहार में एक बड़ा परिवर्तन देखता है। वह खुश रहती हैं। बनाव–शृंगार में उनकी दिलचस्पी बढ़ी है। बंटी के बिना बाहर घूमने भी जाने लगी हैं। बंटी अपनी ममी का स्पर्श, बातचीत और समय सबके लिए तरसता है। ममी का अधिकांश समय कॉलेज और उसके बाद डॉ. जोशी के साथ गुजरने लगता है। बंटी को यह नया परिवर्तन बिल्कुल रास नहीं आता। उसे



BHDC-109_4th proof.indd 260 8/6/2021 2:09:14 PM

लगता है ममी उससे दूर होती जा रही हैं। ममी के जीवन पर बंटी का एकाधिकार जैसे समाप्त होने लगता है। असहाय स्थिति में बंटी न सिर्फ घर में उत्पात मचाता है बल्कि घर आए डॉ. जोशी का भी अपमान करता है। वह ममी से लड़ता है। गुस्से में तोड़–फोड़ करता है। शकुन में आया यह नया परिवर्तन फूफी को भी रास नहीं आता। हमेशा शकुन की हमदर्द रही फूफी, बंटी के भविष्य को देखते हुए डॉ. जोशी से शकुन की बढ़ती नजदीकियों को सही नहीं मानतीं।

कुछ दिन बाद शकुन का विवाह डॉ. जोशी से हो जाता है। फूफी हरिद्वार चली जाती हैं। डॉ. जोशी एक बड़ी कोठी में अपनी लड़की जोत, लड़के अमित और नौकर के साथ रहते हैं। यह उनका भी दूसरा विवाह है। इस नए परिवेश में आने पर बंटी को परायापन महसूस होता है जैसे किसी चीज पर उसका कोई अधिकार ही नहीं। यहाँ न टीटू है, न फूफी न बंटी का बगीचा। ममी हैं पर पराई–सी लगती हैं। शकुन का जीवन भी दो हिस्सों में बँट–सा गया है। यहाँ आकर बंटी का गुस्सा उग्र होता चला जाता है। ममी और डॉ. जोशी की नजदीकियाँ उसे बिल्कुल पसंद नहीं आतीं। वह ममी से बदला लेने पर उतारू हो जाता है। डॉ. जोशी के लड़के से हाथापाई करता है। शकुन को परेशान करता है। पापा के पास जाने का मन बनाता है तो दो हिस्सों में बँटी विवश शकुन भी इंकार नहीं करती।

पापा के साथ बंटी कलकत्ता आ जाता है। इस नए जीवन में डॉ. जोशी की जगह मीरा ले लेती है। मीरा यानी बंटी के पापा की दूसरी पत्नी। अमित की जगह उसका नया भाई चीनू ले लेता है। उसे लगता है पापा भी जैसे ममी की भूमिका में उतर आए हैं। यहाँ मीरा और पापा के बीच बंटी को लेकर अक्सर बहस होती रहती है। पापा, बंटी के उचित विकास की दृष्टि से हॉस्टल में उसका दाखिला करवाना चाहते हैं। बंटी यह नहीं चाहता लेकिन अब किसी भी बात का विरोध करना उसने छोड़ दिया है। बंटी के जीवन में अब न क्रोध है, न रुचियाँ, न दोस्त, न ममी। पापा के साथ रहकर भी वह नितांत अकेला है। हालात उसे अंतर्मुखी बनाते जाते हैं। कक्षा में अव्वल आने वाला बंटी पढ़ाई में भी पिछड़ जाता है। कलकत्ता आकर बंटी का क्रोध, उसकी समस्त इच्छाएँ समाप्त हो जाती हैं। दयनीय स्थिति में उसकी कारुणिक दशा अनेक घटनाओं से व्यक्त होती है। बंटी में आया यह परिवर्तन एक बच्चे के जीवन की भीषण यातनाओं का खाका खींचता है। उसके हॉस्टल जाने की तैयारी पूरी होती है। पापा उसके विकास का यही रास्ता चुनते हैं। किसी से अपने मन की बात कहे बिना बंटी के अधूरे–एकाकी जीवन की एक और यात्रा यहाँ से आरंभ होती है, न जाने कौन–से बिंदु पर विश्राम लेने के लिए। यही उपन्यास का अंत है।

## 15.4 उपन्यास का शीर्षक

किसी भी उपन्यास का शीर्षक उसकी कथा के केंद्रीय विचार, भाव, चरित्र, युग, समस्या और परिवेश आदि को व्यक्त करने वाला होता है। प्रेमचंद का उपन्यास 'गोदान' कृषक समाज के आर्थिक अभाव और जीवन में होरी नाम के किसान की एक साधारण–सी इच्छा के पूरे न होने को प्रतीकित करता है। प्रेमचंद रचित 'निर्मला', जैनेंद्र के उपन्यास 'सुनीता', मैत्रेयी पुष्पा के 'अल्मा कबूतरी' आदि उपन्यासों के शीर्षक कथा के केंद्रीय चरित्रों के नाम पर आधारित हैं। इसी तरह रेणु का 'मैला आंचल', श्रीलाल शुक्ल का 'रागदरबारी', यशपाल का 'झूठा–सच', भीष्म साहनी का 'तमस' क्रमशः परिवेश, युगीन समस्याओं और प्रवृत्तियों को उभारने वाले शीर्षक हैं जिनका कथा की आधारभूमि से गहरा तादात्म्य है।

'आपका बंटी' उपन्यास का शीर्षक दो धरातलों पर पाठक का ध्यान आकर्षित करता है। इस उपन्यास से गुजरते हुए पाठक अनुभव करता है कि कथा में घटित घटनाओं का



BHDC-109_4th proof.indd 261 8/6/2021 2:09:14 PM

बंटी नाम के बच्चे पर क्या और कितना गहरा असर पड़ रहा है। उसका जीवन इनसे प्रभावित होकर लगातार उसे अपने ममी–पापा से दूर अकेलेपन की ओर धकेल रहा है। दूसरे, इस शीर्षक में 'आपका' भी विशिष्ट है। उपन्यास की भूमिका में उपन्यासकार ने स्पष्ट किया है कि यह बंटी केवल अजय और शकुन की उपेक्षित संतान ही नहीं है बल्कि यह कहानी आधुनिक जीवन में उन सभी तलाकशुदा परिवारों की कहानी बन जाती है जहाँ बच्चों को बंटी की तरह जीवन की विपरीत परिस्थितियों का शिकार होकर जीना पड़ता है। उपन्यासकार के मंतव्य और इस उपन्यास के शीर्षक के विषय में आलोचक निर्मला जैन का कहना है–''आठवें दशक में मन्नू भंडारी के उपन्यास 'आपका बंटी' का प्रकाशन साहित्य जगत में एक बड़ी घटना थी। इसका कारण यह था कि तलाकशुदा दम्पति के बच्चों की समस्या को पूरे विस्तार से परखने का यह पहला मौलिक और उल्लेखनीय प्रयास था। उपन्यास का शीर्षक तो इसके कथ्य की ओर संकेत करता ही था, उसका अंत भी जिस बिंदु पर ले जाकर किया गया है, उससे भी इस बात की पुष्टि होती है कि समाज की यह ऐसी समस्या है जिसका निश्चित हल किसी के पास नहीं है। हो सकता है कि लेखिका का मंतव्य कुछ ऐसा रहा हो।'' निर्मला जैन अपनी आलोचना में इस उपन्यास को बंटी की माँ शकुन के नजरिए और उससे सहानुभूति की कहानी अधिक मानती हैं। शकुन से सहानुभूति रखने के बावजूद इस उपन्यास में स्थितियों से संघर्षरत बंटी की कथा पाठक को विचलित करती है। बंटी की जिज्ञासाएँ, उसकी चंचलता, माँ के प्रति गहरा अनुराग और चिंता, फूफी और दोस्त टीटू संग उसके लड़ाई–झगड़े, पिता से उसका प्रेम, डॉ. जोशी से उसकी नफरत, माँ के प्रति बदला दृष्टिकोण–सभी घटनाओं के केंद्र में बंटी ही है और वही इन घटनाओं का भोक्ता भी है। घटनाएँ चाहे किसी भी पात्र के साथ घटित हों पाठक की दृष्टि बंटी पर केंद्रित रहती है। अंत की दृष्टि से भी देखें तो बंटी के हॉस्टल जाने का प्रसंग बेहद मार्मिक है। इस तरह उपन्यास का शीर्षक एक ओर बंटी के चरित्र को केंद्र में रखता है तो दूसरी ओर लेखिका आधुनिक एकाकी परिवारों में जीवन बिता रहे अनेक 'बंटियों' की ओर भी इशारा करती हैं।

## 15.5 उपन्यास की अतंर्वस्तु

'आपका बंटी' उपन्यास की अंतर्वस्तु व्यक्ति के सामाजिक और निजी यथार्थ का गहन अंकन है। परिवार, विवाह, अलगाव, तलाक, पुनर्विवाह और ऐसे असामान्य परिवारों में छोटी उम्र के बच्चों की स्थिति का विश्लेषण यह उपन्यास करता है। उपन्यास एक परिवार की कहानी है जिसके तीन पात्र हैं–शकुन, अजय और बंटी। देखा जाए तो यह परिवार की इकाई दिखते हैं पर वास्तव में हैं नहीं। जीवन में आई प्रतिकूल परिस्थितियों के शिकार ये तीनों ही आपस में विलग हैं। सबसे महत्त्वपूर्ण है कि उपन्यासकार ने स्थितियों, घटनाओं के परिप्रेक्ष्य में किरदारों को रचा है। यही कारण है कि इस उपन्यास को पढ़ते हुए पाठक किसी भी किरदार पर सीधा दोषारोपण करने में असमर्थ रहता है। इस बात को उपन्यास के आरंभ में उपन्यासकार मन्नू भंडारी अपने वक्तव्य में पहले ही स्पष्ट कर देती हैं –''...इस त्रिकोण की किसी एक भुजा को न अस्वीकार कर सकी, न गलत सिद्ध कर सकी। पात्र अपनी–अपनी दृष्टि, संवेदना की सीमाओं में एक–दूसरे को गलत–सही कहते रह सकते हैं, लेकिन देखना यह जरूरी होता है कि लेखकीय समझ किसी के प्रति पक्षपात तो नहीं कर रही? गलत और सही अगर कोई हो सकते हैं तो वे अजय, शकुन और बंटी के आपसी संबंध।'' (आपका बंटी : मन्नू भंडारी, वक्तव्य से)

कथा की अंतर्वस्तु को यदि हम कहानी के आदि, मध्य और अंत की दृष्टि से देखें तो 'आपका बंटी' उपन्यास के आरंभ में शकुन और उसके इकलौते बेटे बंटी पर पाठक का ध्यान केंद्रित होता है। नौ वर्षीय इस लड़के के पिता साथ नहीं रहते और उसकी माँ



BHDC-109_4th proof.indd 262 8/6/2021 2:09:14 PM

को उम्मीद है कि उसका पति और बंटी का पिता शायद फिर परिवार में लौट आएगा। पिता का अभाव और दुखी माँ की स्थिति के बीच बड़ा होने वाला बंटी असमय परिपक्व भी होता है और अकेला भी। पिता से माँ का तलाक होता है और पिता की दूसरी शादी सम्पन्न होती है। उपन्यास का मध्य भाग माँ के जीवन में उतरे प्रेम और डॉ. जोशी से विवाह तक फैला है। बंटी की स्थिति बद से बद्तर होती जाती है। वह इस नयी स्थिति से सामंजस्य नहीं बिठा पाता। पुराना घर, फूफी, दोस्त, बगीचा सब उससे छूट जाते हैं। ममी से भी उसकी नाराज़गी अब बदले की कार्यवाही तक पहुँच जाती है। कहानी का अंतिम भाग बंटी को माँ से दूर, शहर से दूर कलकत्ता पिता के पास ले जाता है। हताश, एकाकी, आहत बंटी अपना मूल स्वभाव और बालसुलभ चंचलता बिल्कुल खो बैठता है। वह अपनी इच्छाओं को अभिव्यक्त नहीं कर पाता। ममी–पापा उसके लिए पराए–से हो जाते हैं। परिस्थितियों का विवश स्वीकार ही उसके लिए अंतिम रास्ता बचता है। बंटी बिना प्रतिवाद किए, न चाहते हुए भी पिता की इच्छा पर हॉस्टल चला जाता है। आरंभ में उसके हॉस्टल जाने का विरोध करने वाली माँ भी इस पर कोई आपत्ति नहीं दर्ज करती। तलाकशुदा जोड़ों की संतान के गहन दुख की कहानी है–'आपका बंटी'।

बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध यानी सन् 1971 में लिखे गए इस उपन्यास की अंतर्वस्तु को हम अनेक रूपों में परख सकते हैं।

### 15.5.1 एकाकी परिवारों में अलगाव के परिणाम

महानगरों की जीवन–शैली में आर्थिक सम्पन्नता, स्वनिर्णय की क्षमता, आत्मनिर्भरता और निजी स्पेस की आकांक्षा ने संयुक्त की जगह एकाकी परिवारों को जन्म दिया। यह परिवारों की अपनी निजता के मद्देनज़र उचित भी था। उपन्यासकार ने पूरे उपन्यास में एक भी स्थान पर संयुक्त परिवार को महिमामंडित करने और उनकी तुलना में एकाकी परिवारों को कमतर दिखाने का प्रयत्न नहीं किया है। यह उपन्यासकार का उद्देश्य भी नहीं रहा है। उसका उद्देश्य परिवार की इकाई में अलगाव के कारण बिखर और टूट रही जिंदगियों का चित्रण करना है। एक तथ्य यह भी है कि उपन्यास में शकुन और अजय के परिवारों के रिश्तेदारों का कोई दखल भी नहीं है जो इस संबंध को बनाए रखने की भूमिका निभा सके। उपन्यास में दिखाए गए परिवार में केवल बच्चे की जिंदगी ही प्रभावित नहीं होती बल्कि उसके माता–पिता की जिंदगी भी प्रभावित रहती है। पति भले ही पत्नी से मुक्त हो जाए पर बेटे के लिए उसका प्यार बना रहता है। पत्नी के मन में पहले पति से जुड़ा अतृप्त कोना दूसरे विवाह और उपन्यास के अंत तक भरता दिखाई नहीं देता। पूरे उपन्यास में अलगाव की सघन छायाएँ हैं। अजय से तलाक के बाद भी शकुन सोचती है– ''और तब एक अजीब–सी भावना मन में आई–बंटी केवल उसका बेटा ही नहीं है, वह हथियार भी है, जिससे वह अजय को टारचर कर सकती है, करेगी।'' तलाक के तुरंत बाद शकुन का बंटी से अजय के साथ बिताए वक्त और बातों के विषय में पूछना, अतीत की छायाओं से मुक्त न होना, डॉ. जोशी के जीवन में आने पर उनकी अजय से तुलना और बार–बार बंटी के बदले व्यवहार में अपने पूर्व पति को देखकर दोनों के व्यवहारों की समता करना–ऐसी अनेक बातें शकुन के मन के अतृप्त कोने की साक्षी हैं। वह बेटे–पहले पति और नई जिंदगी में बँटी हुई अपनी दोहरी जिंदगी जीने को विवश है। बंटी की विवशता इन दोनों से ज्यादा गहन है। माता–पिता दोनों के पुनर्विवाह और दोनों ही जगह परिवार की नई संरचनाओं में बंटी स्वयं को अवांछित/गैरजरूरी पाता है। एक जीवन में वह तीन परिवारों को जीता है पर कोई भी परिवार उसकी रिक्तताओं को भरने में असमर्थ रहता है। पहला परिवार–जहाँ वह फूफी और ममी के साथ है, वहाँ पापा नहीं हैं। दूसरा, डॉ. जोशी का परिवार जहाँ पापा भी नहीं और ममी भी पराई हो गईं हैं। तीसरा–पापा और उनकी दूसरी पत्नी का परिवार जहाँ न ममी हैं और पापा भी पूरे नहीं हैं। इसीलिए लेखिका ने अपने वक्तव्य में कहा–''बंटी ही इस ट्रैजेडी के त्रास को सबसे ज्यादा झेलता है।''



BHDC-109_4th proof.indd 263 8/6/2021 2:09:14 PM

## 15.5.2 उपन्यास की मुख्य घटनाएँ

'आपका बंटी' उपन्यास में यों तो रोजमर्रा की अनेक घटनाएँ मौजूद हैं परंतु कुछ घटनाएँ ऐसी हैं जो उपन्यास की चली आ रही दिशा में बदलाव लाती हैं। कुछ टर्निंग पॉइंट के रूप में घटित होती हैं। कुछ चरम सीमा के रूप में। अजय–शकुन–बंटी के संबंध को प्रभावित करने वाली पहली मुख्य घटना है अजय–शकुन का तलाक। इस तलाक के बाद शकुन की चुप्पी, फूफी की अजय के प्रति नफरत और घर की हवा में आया परिवर्तन बंटी को असमय समझदार बना देता है। वह अचानक ही ममी के प्रति अतिरिक्त रूप से चिंतित हो जाता है। दूसरी घटना डॉ. जोशी से शकुन की बढ़ती नजदीकी है। अब तक ममी के प्रति चिंतित बंटी इसे देखकर अचानक विद्रोही और गुस्सैल बन जाता है। वह अपनी माँ पर पूरा अधिकार चाहता है पर डॉक्टर के आने से यह अधिकार खंडित होता है। तीसरी मुख्य घटना शकुन का दूसरा विवाह और उसका पुराना घर छोड़ना है। बंटी के लिए यह पुराना घर एक बसा–बसाया पूर्ण संसार था। फूफी, टीटू, बगीचा,उसकी अपनी ममी सब पुराने घर में ही छूट जाते हैं। यहीं से कहानी अपने चरम की ओर बढ़ती है। नई स्थिति से कदमताल कर पाने में असमर्थ, अपनी जड़ों से उखड़ा हुआ बंटी जीवन में न कहीं पूरी तरह न जम पाता है न ही बस पाता है। चौथी घटना बंटी का पापा के पास कलकत्ता जाना है। उपन्यास के अंत तक आकर यह घटना खानाबदोश की जिंदगी जीते बंटी की मार्मिक कथा बनकर रह जाती है।

## 13.5.3 पीड़ा का आख्यान

उपन्यास के केंद्र में बंटी अवश्य है पर उपन्यासकार ने आरंभ में ही स्पष्ट किया है–''मुझे लगा कि बंटी किन्हीं दो–एक घरों में नहीं, आज के अनेक परिवारों में सांस ले रहा है–अलग–अलग संदर्भों में, अलग–अलग स्थितियों में।'' (जन्मपत्री बंटी की–मन्नू भंडारी का वक्तव्य) उपन्यास बंटी के माध्यम से आधुनिक जीवन के तनावग्रस्त परिवारों में असहाय, विवश और अकेले बंटियों की पीड़ा की कहानी है। लेखिका की दृष्टि इस विषम सामाजिक समस्या की ओर गई। इस समस्या की गहराई में जाकर उन्होंने पड़ताल की है। इस क्रम में लेखिका ने बंटी की असहायता से अधिक उसके जीवन में घटित घटनाओं और उनसे आने वाले परिवर्तनों से बनने वाली उसकी जीवन–यात्रा पर अधिक बल दिया है। इसीलिए यह उपन्यास केवल बंटी की ही नहीं बल्कि शकुन, अजय और फूफी की जिंदगी को भी संवेदनशील दृष्टि के साथ पाठक को दिखाता है। यही कारण है कि इसके अंत तक पाठक घटनाओं को द्वंद्वात्मक दृष्टि से देखने के चलते न शकुन को सीधा दोष दे सकता है, न अजय को। उपन्यास बंटी के साथ शकुन और अजय की पीड़ा से भी सहानुभूति रखता है। इसीलिए आलोचक बच्चन सिंह ने लिखा है–

''यह शरतचंद्रीय भावुकता पैदा नहीं करता। यह पाठक को संवेदना के स्तर पर क्षुब्ध करता है। मध्यवर्गीय अहंग्रस्त समाज की दुखती रग पर उंगली रख देता है। पश्चिम के समाज में तलाकशुदा पति–पत्नी में अंतर्द्वंद्व नहीं मिलेगा, किंतु भारतीय समाज में एक परिस्थिति विशेष का तलाक एक बेहद उलझी व्यथापूर्ण कथा के लिए शब्द छोटे पड़ जाते हैं इसलिए लेखिका ने मौन का सहारा लिया है। इस प्रकार की स्थिति में बंटी की नियति यही हो सकती थी, हॉस्टल में निर्वासन।''

**बोध प्रश्न–2**

1. 'आपका बंटी' उपन्यास का कथा–सार लिखिए।

.....

.....



BHDC-109_4th proof.indd 264 8/6/2021 2:09:14 PM

.....

.....

.....

.....

.....

2. 'आपका बंटी' उपन्यास का शीर्षक के औचित्य पर विचार कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3. 'आपका बंटी' उपन्यास की अंतर्वस्तु को स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

4. 'आपका बंटी' उपन्यास की मूल समस्या पर विचार कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

## 15.6 सारांश

इस इकाई में उपन्यासकार मन्नू भंडारी के साहित्यिक जीवन का विस्तृत परिचय दिया गया है। उनकी प्रमुख रचनाओं के परिचय के साथ उनकी कथा–यात्रा के महत्त्वपूर्ण सोपानों को उनके कहानी–संग्रहों और उपन्यासों के माध्यम से सामने लाया गया है। उनकी कुछ कहानियों के जरिए उनकी कहानियों की विषय–वस्तु पर प्रकाश डाला गया है और उनके चार उपन्यासों की कथा को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया गया है। रचनाकार के साहित्यिक परिचय के साथ इस इकाई में 'आपका बंटी' उपन्यास की अंतर्वस्तु का आपने विस्तारपूर्वक अध्ययन किया है। अंतर्वस्तु के अंतर्गत उपन्यास के सार, उपन्यास के शीर्षक की सार्थकता के साथ उन मुख्य घटनाओं का उल्लेख किया गया है जो उपन्यास की कथा को गति देती हैं। इन घटनाओं से उपन्यास के पात्र और उनका जीवन किस रूप में प्रभावित होता है, यह पक्ष भी सामने आता है।



BHDC-109_4th proof.indd 265 8/6/2021 2:09:14 PM

## 15.7 संदर्भ सहित व्याख्या

**उद्धरण 1**

**''जवानी यों ही अंधी होती है बहूजी, फिर बुढ़ापे में उठी हुई जवानी। महासत्यानाशी! साहब ने जो किया तो आपकी मट्टी–पलीद हुई और अब आप जो कर रही हैं, इस बच्चे की मट्टी–पलीद होगी। चेहरा देखा है बच्चे का? कैसा निकल आया है, जैसे रात–दिन घुलता रहता हो भीतर ही भीतर।''**

**संदर्भ**

प्रस्तुत कथांश हिंदी की महत्त्वपूर्ण और वरिष्ठ कथाकार मन्नू भंडारी के बहुचर्चित उपन्यास 'आपका बंटी' से उद्धृत है। माता–पिता के बीच पैदा हुई अलगाव की स्थिति में जीते बालक बंटी की माँ शकुन की डॉक्टर जोशी के प्रति मैत्री और आसक्ति बढ़ने लगती है। ऐसे में उपेक्षा का शिकार हो रहे बंटी का पक्ष लेते हुए गृहसेविका फूफी पूरे अधिकार से शकुन से अपनी बात कहती है। वह शकुन को बंटी की स्थिति के प्रति सावधान करती है।

**व्याख्या**

शकुन के घर में फूफी परिवार के सदस्य के रूप में रहती हैं। कहने को वह शकुन की गृह सहायिका हैं पर वास्तव में वह बंटी की मित्र और संरक्षक दोनों हैं। शकुन की अनुपस्थिति और अजय के परिवार से दूरी बना लेने, दूसरा विवाह कर लेने के बाद अकेले होते जा रहे बंटी के लिए फूफी बहुत बड़ा सहारा हैं। दोनों आपस में लड़ते–झगड़ते भी हैं परंतु मन से दोनों एक–दूसरे से गहरे जुड़े हुए हैं। अजय के दूसरे विवाह के कुछ समय बाद शकुन की डॉक्टर जोशी से बढ़ती दोस्ती में उपेक्षित हो रहे बंटी का दुख फूफी से देखा नहीं जाता। बंटी पहले प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं करता पर जब डॉक्टर जोशी और उनके परिवार का आना–जाना घर में बढ़ने लगता है और बात मित्रता से आगे विवाह संबंध तक पहुँचने लगती है तब बंटी के व्यक्तित्व में क्रोध, हिंसा, विवशता, अकेलापन और पीड़ा की मिली–जुली अनुभूति आकार लेकर उसकी बातों और व्यवहार में झलकने लगती है। फूफी, बंटी के इस दुख में उसका साथ देती है। वह परंपरागत स्त्री की भाँति शकुन से स्पष्ट कहती है कि वह स्वयं पर संयम रखे। अपनी आयु का लिहाज करे। अधेड़ होती उम्र का नेह–नाता विनाश की ओर ले जाने वाला है। फूफी, शकुन को अच्छी माँ बनने के दायित्व के प्रति सावधान भी करती है और पिता द्वारा अकेले छोड़ दिए बंटी का पक्ष लेते हुए कहती है कि उसके डॉक्टर जोशी से जुड़ने पर बंटी की वही स्थिति होगी जो अजय द्वारा छोड़े जाने पर शकुन की हुई थी। अपनी बात में चेतावनी घोलकर फूफी शकुन की पूर्व पीड़ादायक स्थिति से बंटी के वर्तमान का संबंध जोड़ देती हैं। ऐसा करके वह शकुन को दूसरे विवाह के लिए रोकने और बंटी पर पूरा ध्यान केंद्रित करने के लिए जोर देती है।

**भाषिक वैशिष्ट्य**

'आपका बंटी' की फूफी एक विशिष्ट चरित्र है। वह परंपरागत होते हुए भी स्नेह से भरपूर है। गृह सेविका होते हुए भी परिवार की सदस्य है। अकेली होते हुए भी निडर और अपनी अभिव्यक्ति में निर्भीक है। स्वतंत्रचेता शकुन के निजी जीवन निर्णयों में वह अकंप लौ की तरह जगमगाती है। उसकी देशज अभिव्यक्ति तंज और स्पष्टवादिता के रंग से सजी है। 'बुढ़ापे में उठी जवानी' के सत्यानाशी होने की उपमा शकुन के निर्णय पर करारा व्यंग्य है, जिसमें एक ओर बंटी और शकुन के भावी जीवन की विसंगतियों को देखने वाली अनुभवी आंख है और दूसरे स्वयं फूफी का आहत मन भी है जो बंटी के प्रति करुणा से भरा है।



BHDC-109_4th proof.indd 266 8/6/2021 2:09:14 PM

**उद्धरण 2**

**''बंटी अपने घर में घूम रहा है। पर अपने घर जैसा कुछ भी तो नहीं लगा रहा उसे। सर्दी के दिनों में सांझ से ही तो चारों ओर अँधेरा घुसने लगता है। और जैसे–जैसे अँधेरा घुलता जा रहा है, सब कुछ और ज्यादा–ज्यादा अपरिचित होता जा रहा है। यहां तो आसमान भी पहचाना हुआ नहीं लगता, हवा भी पहचानी हुई नहीं लगती। अपने घर का आसमान और अपने घर की हवा कहीं ऐसी होती है?''**

**संदर्भ**

प्रस्तुत कथांश हिंदी की महत्त्वपूर्ण और वरिष्ठ कथाकार मन्नू भंडारी के बहुचर्चित उपन्यास 'आपका बंटी' से उद्धृत है। तलाकशुदा माता–पिता की इकलौती संतान बंटी, डॉक्टर जोशी से ममी के दूसरे विवाह के बाद अपना पुराना घर छोड़कर जब नए घर में पहुँचता है तो पराएपन की त्रासद भावना से घिर जाता है। इस नए परिवेश में पहुँचकर नौ वर्षीय बंटी का अकेलापन और अधिक बढ़ जाता है। बंटी की पीड़ा को उपन्यासकार ने इस अंश में प्रतीकों के माध्यम से स्पष्ट किया है।

**व्याख्या**

उपन्यास का केंद्रीय चरित्र बंटी नौ वर्षीय बेहद संवेदनशील बालक है। परिस्थितियों और मनुष्यों में आए परिवर्तनों को बंटी गहराई से अनुभव करता है। बच्चे के जीवन में माता–पिता के साथ के अभाव ने उसे असमय प्रौढ़ भी किया और उसकी बाल–सुलभ चंचलता को क्षति पहुँचाकर उसके सहज विकास को अवरुद्ध किया। पिता के अभाव में ममी के साथ अपने बचपन के घर से बंटी का गहरा और आत्मिक लगाव है। यहाँ पापा का अभाव तो था पर बंटी की ममी का पूरा ध्यान और प्यार बंटी को मिलता था। उसकी जिज्ञासाओं का अंत करने वाली और कहानियों के संसार में काल्पनिक विचरण कराने वाली उसकी दोस्त फूफी का साथ था। बचपन के झगड़े, दोस्ती और प्रतियोगिताओं के लिए पड़ोस का दोस्त टीटू दिन–रात साथ था। उसके घर बंटी का आना–जाना लगा रहता था। इसके साथ ही पुराने घर में उसकी रुचि और श्रम से पनपाया उसका अपना बगीचा भी था। इस बगीचे में बंटी को कड़ी धूप भी शीतलता और स्नेह देती थी। इसका एक–एक पौधा बंटी ने अपने हाथ से रोपा था। जिस प्रकार किसी बच्चे का पालन–पोषण किया जाता है बंटी के लिए भी यह सारे पौधे, बच्चे की ही तरह थे।

अपनत्व और प्रेम के इस घरौंदे से बिछड़कर डॉक्टर जोशी के घर में आना बंटी को रास नहीं आता। ममी उसे इस नए घर को अपना घर मानने की बात कहती हैं पर बंटी को आश्चर्य होता है कि इस घर को वह किस प्रकार अपना कहे? यहाँ न टीटू है, न फूफी की कहानियों का संसार, न सुकून देने वाला बगीचा और न ही जिंदगी की सहजता। इस नए घर की हर चीज, हर व्यक्ति, कमरा यहाँ तक कि उसकी माँ भी उसे पराई लगने लगती हैं। सर्दी की शाम का अँधेरा बंटी को अपने मन में उतरता अनुभव होता है। यह अपरिचय का अँधेरा है। यह पराएपन का अँधेरा है। यह स्नेह के अभाव का अँधेरा है। बाहर का अँधेरा बंटी के मन के अंधेरे से जुड़ जाता है और जिस प्रकार अँधेरा दृश्य संसार को ओझल करके व्यक्ति के समक्ष अपरिचय और भय का ताना–बाना रचता है वैसा ही बंटी के साथ भी घटित होने लगता है। यह अंश बंटी के मनोविज्ञान को सामने लाता है।

किसी भी व्यक्ति के लिए घर वह स्थान है जहाँ वह दुनिया के तमाम अनुशासनों, सख्तियों से मुक्त होता है। घर एक अनौपचारिक–उन्मुक्त–आत्मीय–सुरक्षित स्थान होता है परंतु इस नए घर में आकर बंटी ऐसा नहीं पाता। वह स्वयं को घर का सदस्य नहीं मान पाता और न ही डॉक्टर जोशी को अपने पिता का दर्जा दे पाता है। इस



BHDC-109_4th proof.indd 267 8/6/2021 2:09:14 PM

घर को वह जोत और अमित का घर मानते हुए स्वयं को अवांछित महसूस करता है। यहाँ न आत्मीयता का आकाश है न उन्मुक्त हवा। नन्हा बंटी दोनों घरों में अंतर करते हुए पाता है कि उसके घर की हवा में एक उन्मुक्तता, आत्मीयता, सुरक्षा घुली थी जो उसे सहज बनाए रखती थी। जहाँ एक अधिकार भावना से वह अपने काम कर सकता था जबकि नए घर को वह घर मान ही नहीं पाता। इसीलिए बंटी इस नए माहौल को भाँपकर अकेलेपन और पराएपन की चरम अनुभूति में स्वयं से प्रश्न करता है कि अपना कहे जाने वाले किसी घर की हवा न सांस घोंटती है न उसका आकाश मन में परायापन जगाता है।

### भाषिक वैशिष्ट्य

कथांश में साँझ के अंधेरे को बंटी के मन के अँधेरे और अपरिचय से उपजे भय से जोड़कर उपन्यासकार ने एक तादात्म्य स्थापित किया है। बंटी की आंतरिक मनःस्थिति को बाह्य प्रकृति से जोड़ा गया है। यहाँ अँधेरा एक प्रतीक की तरह प्रयुक्त हुआ है। साथ ही हवा और आसमान भी बंटी की मनःस्थिति के प्रतीक हैं। पुराने घर में यह प्रतीक सुरक्षा और उन्मुक्तता देते हैं जबकि नए परिवेश में यह प्रतीक असुरक्षा, भय और परायापन का अर्थ देने लगते हैं। भाषा में काव्यात्मकता दिखाई देती है।

## 15.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

### बोध प्रश्न–1

1. रिक्त स्थान–

   1. नयी कहानी ;  2. एक प्लेट सैलाब, त्रिशंकु;  3. सन् 1971;  4. यही सच है

2. सही का निशान गोदान पर।
3. उत्तर के लिए देखें–15.3
4. उत्तर के लिए देखें–15.3

### बोध प्रश्न–2

प्रश्न 1 के उत्तर के लिए 15.3 देखें।

प्रश्न 2 के उत्तर के लिए 15.4 देखें।

शेष उत्तरों के लिए देखें 15.5

## 15.9 उपयोगी पुस्तकों की सूची


1. साहित्य का उद्देश्य : प्रेमचंद, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद।
2. उपन्यास की संरचना : गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
3. एक कहानी यह भी : मन्नू भंडारी, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
4. कहानी की समाजशास्त्रीय समीक्षा : रमेश उपाध्याय, नमन प्रकाशन, दिल्ली।
5. कथा समय में तीन हमसफर : निर्मला जैन, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।




BHDC-109_4th proof.indd 268 8/6/2021 2:09:14 PM

# इकाई 16 'आपका बंटी' के चरित्र

**इकाई की रूपरेखा**

16.0 उद्देश्य

16.1 प्रस्तावना

16.2 उपन्यास के चरित्र

16.2.1 मुख्य चरित्र

16..2.2 सहायक चरित्र

16..2.3 अन्य चरित्र

16.3 सारांश

16.4 बोध प्रश्नों के उत्तर

## 16.0 उद्देश्य

पिछली इकाई में आपने मन्नू भंडारी के उपन्यास 'आपका बंटी' की अंतर्वस्तु और रूप से संबंधित विस्तृत जानकारी प्राप्त की थी। इस इकाई में आप इस उपन्यास के विभिन्न चरित्रों के विषय में अध्ययन कर सकेंगे। इस इकाई को पढ़ने के उपरांत आप

- उपन्यास में शामिल चरित्रों की विविध श्रेणियों को समझ सकेंगे;
- उपन्यास के चरित्रों की विशेषताओं और उनके आपसी संबंधों को जान सकेंगे;
- चरित्रों के आंतरिक और बाह्य व्यक्तित्व के विषय में बता सकेंगे; और
- चरित्रों के आंतरिक द्वंद्व और अकेलेपन को भी समझ पाएँगे।

## 16.1 प्रस्तावना

उपन्यासकार के समय की चिंताएँ, समस्याएँ, उसके अपने संचित अनुभव और जीवन निष्कर्ष कथा में चरित्रों के माध्यम से पाठक के समक्ष अभिव्यक्त होते हैं। समय और समाज को विविध दृष्टियों से यही चरित्र विश्लेषित और व्याख्यायित करते हैं। एक मनुष्य की अपने समय से मुठभेड़, उसकी जिजीविषा, उसके द्वंद्व, उसकी उपलब्धियाँ और उसकी नाकामियाँ उसके व्यक्तित्व को आकार देती हैं। इस पाठ में हम 'आपका बंटी' उपन्यास के मुख्य, सहायक और अन्य चरित्रों का विस्तारपूर्वक अध्ययन करेंगे। इस अध्ययन में चरित्रों के सबल पक्ष के साथ उनके दुर्बल पक्षों को जानकर हम चरित्र का संपूर्ण मूल्यांकन करेंगे। इन चरित्रों का व्यवहार, बाहरी समाज से इनके संबंध, आपस में एक–दूसरे चरित्रों से संबंध के विषय में जानकर हम कथा में इनके चरित्र के विकास का ग्राफ देख पाएँगे। हम जान पाएँगे कि उपन्यास में कौन–सा चरित्र मुख्य भूमिका में है, कौन–सा सहायक भूमिका में है।

## 16.2 उपन्यास के चरित्र

सन् 1960 से नयी कहानी का आरंभ माना जाता है। इस कहानी–धारा में नयापन रचनाकार के जिए–भोगे अनुभवों की प्रामाणिकता का रहा। इसीलिए कथा का आधार भी ये अनुभव रहे और चरित्र भी उसी अनुभव को प्रकट करने का सशक्त माध्यम बने। कथा आलोचक नामवर सिंह ने अपनी पुस्तक 'कहानी : नयी कहानी' में लिखा है– ''नयी कहानी में वातावरण अलंकरण–मात्र नहीं है बल्कि अंतःकरण है।'' वास्तव में जिस अंतःकरण की बात यहाँ आलोचक नामवर सिंह ने उठाई है वह इस नयी कथा–धारा का

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

नयापन ही है। यह अंतःकरण चरित्र का वह आंतरिक पक्ष है जिससे उसके अच्छे–बुरे का विवेक परिभाषित होता है। यह अंतःकरण कथा में चरित्र के अनुभव संसार, उसके संकल्प, उसकी वैचारिकता, इच्छा, विकल्प–चयन की क्षमता आदि से सीधे तौर पर जुड़ा है। कथाकार मन्नू भंडारी के उपन्यास 'आपका बंटी' के विषय में नामवर जी का कथन एकदम उचित प्रतीत होता है। नयी कहानी की प्रामाणिक अनुभव वाली धारा ने प्रेमचंद की यथार्थवादी दृष्टि के विपरीत चीजों को देखा। प्रेमचंद की यथार्थवादी दृष्टि समाज से व्यक्ति तक आती है जबकि इस नयी कथा–धारा की दृष्टि व्यक्ति से समाज तक जाती है। 'आपका बंटी' भी इसका अपवाद नहीं है।

यह उपन्यास चरित्रों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण भी करता है। वह उनके अकेलेपन, कुंठा, अपराध बोध, ग्लानि, संशय, द्वंद्व आदि को सामने लाता है। अपनी पुस्तक 'हिंदी उपन्यास का इतिहास' में गोपाल राय ने लिखा है– ''मूल संवेदना तो बंटी की पीड़ा ही है जो अपने माता–पिता के संबंध विच्छेद और उनके नये सिरे से दाम्पत्य संबंध शुरु करने के कारण अनचाहे अस्तित्व में परिणत हो गया है, पर तलाकशुदा पति–पत्नी के नये संबंधों की मांग और संतान के प्रति संवेदनशीलता के तनाव का अंकन भी गहरी मनोवैज्ञानिक समझ के साथ किया गया है।''

## 16.2.1 मुख्य चरित्र

'आपका बंटी' उपन्यास में मुख्य चरित्र बंटी (अरूप बत्रा), शकुन और फूफी हैं। उपन्यास में इनकी भूमिका महत्त्वपूर्ण और केंद्रीय है। एक–एक करके हम इन तीनों के चारित्रिक वैशिष्ट्य को जानेंगे।

### बंटी का चरित्र

सर्वप्रथम बंटी के चरित्र की विशेषताओं पर विचार करेंगे।

#### तीक्ष्ण बुद्धि

चौथी कक्षा में पढ़ने वाला बंटी अपने परिवार की प्रतिकूल स्थितियों में पलते हुए भी अपनी उम्र के औसत बच्चों से कहीं अधिक संवेदनशील और कुशाग्र है। पढ़ने–लिखने में वह अच्छा है। कक्षा में उसका स्थान दूसरा रहता है और वह हर विषय में अव्वल है। एक विशेषता जो उसे उसके हमउम्र बच्चों से अलगाती है वह है उसकी कल्पनाशीलता। देखे गए दृश्यों को उसका दिमाग विस्तार देकर एक नया लोक रच देता है। अपने अकेलेपन में वह अनेक बातें सोचता है। कभी न देखे गए लोगों, दृश्यों और जगहों की कल्पना करना उसे प्रिय है। इसीसे वह अपने उदास और एकाकी जीवन मे रंग भरता है। उपन्यास के आरंभ में ही उपन्यासकार ने उसकी कल्पनाशक्ति का परिचय कुछ इस प्रकार दिया है–

''उसके बाद आंखों के सामने वे बड़े–बड़े मैदान तैर गए जो स्कूल जाते समय बस में से दूर–दूर दिखाई देते हैं। मैदान के दूसरे सिरे पर बनी हुईं पहाड़ियां, जिनके पीछे सूरज निकल–डूबकर दिन और रात करता है। कौन जाने उन पहाड़ियों की तलहटी में कोई साधू बैठा हो जिसके पास जादू की खड़ाऊं हों, जादू का कमंडल हो। एक बार जाकर जरूर देखना चाहिए।''

यही नहीं जीवन में पढ़ी और सुनी गई कहानियों के माध्यम से भी वह अपने लिए वैसा ही संसार रचने की कल्पना करता है। 'अलादीन का चिराग' कहानी का चिराग पाने की ललक उसमें पैदा होती है। उदाहरण के तौर पर यह अंश देखिए–

''उसके पास भी जादू का लैंप होता तो घिसकर जिन्न बुलाता और सब पूछ लेता। कैसे मिल सकता है जादू का लैंप!

और फिर धीरे–धीरे कहानियों का जादुई माहौल उसकी पलकों पर उतरने लगा और वह सो गया।''



BHDC-109_4th proof.indd 270 8/6/2021 2:09:14 PM

किस्से–कहानियों में गहरी दिलचस्पी उसकी कल्पना शक्ति को और अधिक उर्वर करती है। उसे ममी और फूफी से किस्से–कहानियाँ सुनना बेहद पसंद है। उसने एक ओर धार्मिक–पौराणिक कहानियाँ सुनी हैं तो दूसरी ओर परियों और जादुई लोक की कहानियाँ। एक ओर बालक ध्रुव की कहानी की तरह वह भी तपस्या करने के लिए प्रेरित होता है। अपने ममी–पापा की लड़ाई को दोस्ती में बदलने के लिए वह किसी साधक की तरह तपस्या करना चाहता है।

''मन को मारना भी तपस्या करना हो सकता है क्या? मन तो आजकल वह भी कितना मारता है अपना, तो क्या वह भी तपस्या कर रहा है? एक अजीब–सी पुलक उसके मन में जागी। एक अजीब–सा आत्मविश्वास। कौन खुश होगा उसकी इस तपस्या से? भगवान...पापा.... ।''

फूफी जो न जाने कितने समय से बंटी के परिवार की सेवा करती आई हैं, उनसे बंटी को गहरा प्रेम है। इस प्रेम का एक कारण फूफी का बंटी को दिया गया पर्याप्त समय भी है और उस समय में बंटी को सुनाई गई कई कहानियाँ भी हैं। बंटी की जिद पर वह काम के साथ–साथ बंटी को जादुई और तिलिस्मी कहानियाँ सुनाती हैं। सोनल रानी की कहानी बंटी को विशेष रूप से पसंद आती है। सोनल रानी डायन बनकर अपने ही सौतेले बच्चों को खा जाती है। इधर ममी उसे 'सात भाई चम्पा के' नामक कहानी सुनाती हैं जिसमें सौतेली माँ सातों लड़को को मरवाकर गड़वा देती है।

बंटी की मासूम उम्र कभी कहानियों को जीवन से जोड़कर देखने लगती है तो कभी–कभी कहानी के अतार्किक लगने पर ढेर सारे सवाल भी पूछती है। उसका कल्पनाशील मन इन कहानियों को सुनकर कहानी–सी जादुई दुनिया अपने लिए बनाने लगता है।

''जब तक आंखें खुली हैं, नजर कमरे की दीवारों में कैद है, पर आंख बंद करते ही जैसे सारी सीमाएं टूट जाती हैं और न जाने कहां–कहां के जंगल, पहाड़ और समुद्र तैर आते हैं आंखों के सामने। परीलोक की परियां और पाताललोक की नाग कन्याएं तैरती हुईं उसके सामने से निकल जाती हैं।

अच्छा, अगर कोई उसे जादू के पंख या उड़नेवाला घोड़ा दे दे तो वह क्या करे? एकदम पापा के पास चला जाए और उन्हें चौंका दे।''

इस प्रकार बंटी की कल्पनाशीलता उसके अकेलेपन में रचनात्मक भूमिका निभाती है।

### स्थितियों और मनुष्यों को परखने वाली गहरी–संवेदनशील दृष्टि

बंटी का बचपन अपने सहपाठियों और अपने दोस्त टीटू के जीवन की तरह सामान्य नहीं है। जीवन में ममी–पापा का अलगाव, तलाक और उनके दूसरे विवाह की स्थितियों से उपजी निराशाओं ने बंटी को असमय बड़ा बना दिया है। वह घर के माहौल को भाँप लेता है। ममी के स्वर और मुख–मुद्रा से उसे स्थितियों का ज्ञान हो जाता है। फूफी के स्वर से वह घर में हो रहे परिवर्तनों का पता लगा लेता है। ममी–पापा के तलाक के बाद ममी के दुखी रहने पर वह स्थितियों को समझते हुए पापा के लाए खिलौने अल्मारी में छिपा देता है। वह जानता है इनसे ममी को दुख होगा। ममी की असहाय और दुखी स्थिति जानकर वह स्वयं उनके लिए शिकंजी बनाकर लाता है। वह अचानक समझदार हो जाता है। बात–बात पर गुस्सा नहीं करता बल्कि ममी को अपनी ओर से निश्चिंत करता है–''ममी जाओ, मैं पीछे पढ़ूँगा। फूफी से खाना लेकर खा लूंगा। बिल्कुल भी तंग नहीं करूंगा।'' यही नहीं फूफी की तकलीफ में वह उनकी सेवा करने को भी तत्पर रहता है। इस तरह बंटी रिश्तों और स्थितियों को सूक्ष्म निगाह से परखने वाला संवेदनशील लड़का है।

बंटी लोगों के चतुर स्वभाव को भी बखूबी समझता है। अपने दोस्त टीटू की अम्माँ के तंज को वह महसूस करता है और ममी के कॉलेज की चापलूस शिक्षिकाओं की



BHDC-109_4th proof.indd 271 8/6/2021 2:09:14 PM

वास्तविकता भी जानता है। कॉलेज स्टाफ के साथ घर आकर बंटी की तारीफ करने वाली मिसेज सक्सेना के भीतरी सच को जानकर उसका मन कहता है– ''हूँ मक्खनबाज़ कहीं की। वह जानता है कोई उसकी तारीफ नहीं कर रहीं, सब ममी को मक्खन लगा रही हैं।...प्रिंसीपल का लड़का है सो कोई कुछ कहता नहीं–मोटी चापलूस कहीं की।''

ममी के स्टाफ की पूरी खातिर करने वाला बंटी अपनी प्रिय दीपा आंटी से गाना सुनना चाहता है पर ममी जरूरी काम से उसे बाहर भेज देती हैं। अपमानित अनुभव करने वाला बंटी कुछ समय बाद ममी की व्यस्तताओं को समझते हुए अपने मन पर अपमान को हावी नहीं होने देता। यही नहीं परिस्थितिवश कलकत्ता पहुँचकर हॉस्टल न जाने का उसका मन भीतर ही भीतर बुरी तरह छटपटाता है। वह प्रत्यक्ष रूप से कुछ नहीं कह पाता। पापा के साथ कलकत्ता के परिवेश को नजदीक से देखता हुआ वह मन में विचार करता है–

''यह कम्युनिस्टों का जुलूस है। कलकत्ता जुलूसों का शहर है।'' पापा बता रहे हैं।

बंटी रोज़ जुलूस देखता है और लोगों के साथ–साथ खुद भी चिल्लाता है। उसने चॉलबे ना, हॉबे ना सीख लिया है। पर बस मन ही मन में। रोज सोचता कि वह भी जोर से चिल्लाएगा, हवा में मुट्ठी उछालकर...चॉलबे ना...चॉलबे ना। पर एक दिन भी चिल्ला नहीं पाया।'' अपने जीवन की विडम्बना पर बंटी के भीतर की छटपटाहट मौन रहकर भी बहुत कुछ कहती है।

### बंटी की कलात्मक अभिरुचियाँ

अपने हमउम्र बच्चों की तरह नए–नए खिलौने बंटी को बहुत आकर्षित करते हैं। पापा के द्वारा वकील चाचा के हाथ भिजवाए गए नए खिलौनों से वह अपने स्कूल के दोस्तों और टीटू के बीच शान मारता है। एक सामान्य बच्चे की तरह वह रूठता भी है। गुस्से में घर का सामान भी फेंकता है। एक तरफ उसमें यह आदतें हैं तो दूसरी तरफ वह बहुत धैर्य से चित्र बनाता है। उसके बनाए चित्र ममी ने फ्रेम करवाकर घर में लगवाए हैं। वकील चाचा और पापा भी उसकी कला के प्रशंसक हैं। बंटी अपने स्कूल में आर्ट क्लब का चीफ भी है। कई लोगों को लगता है बंटी बड़ा होकर कलाकार बनेगा। अपने जीवन की सामान्य परिस्थितियों में बंटी चित्र बनाकर प्रसन्न होता है पर जब स्थितियाँ विपरीत हो जाती हैं तब बंटी के जीवन से रंग और कला भी दूर चले जाते हैं।

चित्रकला की तरह ही बागवानी में बंटी के प्राण बसते हैं। उसने अपने घर में एक बगीचा लगाया है। छोटी–सी उम्र में उसे मालूम है कि पौधे कैसे रोपे जाते हैं, सींचे जाते हैं। यहाँ तक कि उसे अपने बगीचे के सारे पौधों का नाम याद हैं। ममी, पापा, दीपा आंटी, जोत जिससे भी बंटी प्यार करता है उसे अपने बगीचे के फूल भेंट करता है। अपने बगीचे में घूमना उसे बहुत प्रिय है। तेज गर्मी में उसे बगीचे में तपिश महसूस नहीं होती। छुट्टियों में उसका सबसे अच्छा समय बगीचे में बीतता है।

''अब छुट्टी के दिन समझ ही नहीं आता, वह क्या करे? एक बार यों ही बगीचे का चक्कर लगाया। मोगरे खूब महके हुए थे। एक–एक पौधे को उसने खूब प्यार से छुआ। फिर गिनकर देखा, कितनी नई कलियां खिली हैं। हर एक पौधे की फूल–पत्तियों का हिसाब–किताब उसके पास है। एक–दो पौधे की पत्तियां गंदी लगीं तो जल्दी से पाइप लेकर उनको धोया। कुछ इस ढंग से जैसे ममी सवेरे–सवेरे उसका मुंह धुलाती हैं।'' बंटी पौधों को बच्चे की तरह मानकर उनकी देखभाल करता है। यही कारण है कि डॉक्टर जोशी के घर जाने के बाद ममी के वहाँ भी बगीचा लगाने की बात पर बंटी उखड़ जाता है। वह साफ कहता है–

''नहीं, बिल्कुल नही है यह मेरा बगीचा! बीज और कलम लगा–लगाकर बनाओ, अपना बगीचा तो पता लगेगा कैसे बनता है बगीचा!''



BHDC-109_4th proof.indd 272 8/6/2021 2:09:14 PM

कॉलेज से आया माली भी बंटी की बात का समर्थन करता है–'' ऐसा ही होता है बहूजी, ऐसा ही होता है। अपने बोए–सींचे पौधे से ऐसा ही मोह होता है, बिलकुल संतान–जैसा। जहां एक बार लगाओ वहां से उखाड़ा नही जाता।''

## छिनते अधिकार की सघन पीड़ा

संवेदनशीलता और करुणा से भरे बंटी के नौ वर्षीय जीवन में माता–पिता का तलाक एक घटना के रूप में घटित होता है। बंटी की मासूम उम्र में उसका जागृत विवेक उसे इस घटना से तो उबार लेता है परंतु ममी के जीवन में डॉक्टर जोशी का आगमन बंटी के जीवन की सबसे बड़ी दुर्घटना बन जाता है। इसके तीन अलग–अलग प्रभाव बंटी के जीवन में साफ दिखलाई देते हैं। पहला, ममी के जीवन में बंटी के हिस्से के समय की कटौती। दूसरा, ममी के विवाह से बंटी का जड़ से उखड़कर नयी जगह न जम पाने का दुख और अकेलेपन की असहनीय पीड़ा। तीसरा, बंटी में ममी से बदला लेने की विद्रोही प्रवृत्ति का जन्म। ये भी सत्य है कि ममी की इच्छाओं के विरुद्ध किए कार्यों को बंटी बदले की भावना से अवश्य देखता है पर उस बदले में भी बंटी को सुख और संतोष की अनुभूति नहीं होती है। एक गहरा खालीपन उसके जीवन को लगातार अकेलेपन और अँधेरे की ओर धकेलता जाता है।

डॉक्टर जोशी की शकुन से बढ़ती नजदीकियाँ बंटी को अच्छी नहीं लगतीं। बेवजह घर में डॉक्टर साहब का आना–जाना उसे व्यथित करता है। उसे लगता है ममी उस पर अब ध्यान नहीं देतीं। यहाँ तक कि घर आए डॉक्टर साहब की परवाह किए बगैर वह ममी पर अपना गुस्सा उतारता है। उनके जाने के बाद दो–टूक शब्दों में कहता है–''तुम्हें मेरी बिल्कुल परवाह नहीं रह गई है। मत करो मेरा कोई भी काम। बस, डॉक्टर साहब के पास बैठकर चाय पियो। तुम्हारा क्या है, सजा तो मुझे मिलेगी। मैं अब स्कूल कभी नहीं जाऊंगा, कभी भी...'' और बंटी फूट–फूटकर रोने लगा।''

बंटी, डॉक्टर साहब के लिए तैयार होती ममी की सभी हरकतों पर गौर करता है। उसे न ममी का सजना–सँवरना पसंद आता है न ही डॉक्टर जोशी के ममी को दिए गए उपहार। ममी को भेंट में मिली साड़ी और परफ्यूम से वह चिढ़ता है। डॉक्टर जोशी के परिवार के साथ घूमते हुए वह स्वयं को बिल्कुल अकेला महसूस करता है। ममी का डॉक्टर साहब के करीब बैठना उसे अखरता है–'' ये ममी इतना सटकर क्यों बैठी हैं डॉक्टर साहब से। ऐसे तो कभी ममी किसी के साथ नहीं बैठतीं। बंटी को बहुत अजीब लग रहा है। अजीब और बहुत खराब भी।'' डॉक्टर जोशी का अपने बच्चों जोत और अमि के साथ घर आना भी बंटी को अखरता है। मन में जमा होता लावा ममी द्वारा अमि को उसके खिलौने दिए जाने पर ज्वालामुखी बनकर फूट पड़ता है। वह अमि से गुत्थम–गुत्था हो जाता है और पहली बार सबके सामने ममी उसे तमाचा मारती हैं। अपना सारा दुख और क्रोध बंटी अपनी खिलौना बंदूक दागकर प्रकट करता है। अपने अकेलेपन में वह ममी के स्पर्श, उनके समय और ममी पर अपने अधिकार को तरसता है।

ममी के विवाह के बाद बंटी के जीवन की पीड़ा और सघन हो जाती है। फूफी, पुराने घर और अपने बगीचे से छूटने का असह्य दुख लिए बंटी नए जीवन में प्रवेश करता है। इस घर में बंटी को परायापन महसूस होता है। ममी से बढ़ती दूरी और जीवन में ममी का घटता समय– दोनों उसकी सहजता को समाप्त करते हैं। '' कैसे रहेगा वह इस घर में? यह उसका घर बिलकुल नहीं है। यह डॉक्टर साहब का घर है, जोत और अमि का घर है। वह किसी के घर में नहीं रहेगा, अपने घर जाएगा, अपने ही घर में सोएगा...यहां तो न घर उसका है,न घरवाले उसके हैं। ममी के कहने से क्या होता है, क्या वह जानता नहीं? और जब कुछ भी उसका नहीं है तो डरेगा नहीं वह। लाख रोकने पर भी आंखें हैं कि छल–छल हो रही हैं।'' बंटी की यह दशा उसके बालमन पर पड़ी चोटों को साफ दिखलाती है। गुस्सा, दुख, अपमान के चलते उसे रात में



BHDC-109_4th proof.indd 273 8/6/2021 2:09:14 PM

भय सताता है। बार–बार रुलाई छूट पड़ती है। '' सारा घर अंधेरे में डूब गया। बंटी के मन का दुख और गुस्सा धीरे–धीरे डर में बदलने लगा। केवल डर ही नहीं, एक आतंक, कैसी–कैसी शक्लें उभरने लगीं उस अंधेरे में। उसने कसकर आंखें मींच लीं। पर अजीब बात है, बंद आंखों के समाने शक्लें और भी साफ हो गईं–लपलपाती जीभ के राक्षस...उलटे पंजे और सींगोंवाला सफेद भूत, तीन आंखोंवाली चुड़ैल, जादुई नहगरी के नाचते हुए हड्डियों के ढांचे, सब उसके चारों ओर नाच रहे हैं। धीरे–धीरे उसकी ओर बढ़ रहे हैं।''

क्लास के बच्चे उसे अरूप जोशी कहकर चिढ़ाते हैं तो वह विरोध करता हुआ स्वयं को अरूप बत्रा ही कहता है। बंटी के भीतर का दुख और डर अब नया रूप लेकर ममी की बातों के विद्राह में उभरने लगता है। वह ममी को पसंद आने वाली स्वभावगत विशेषताओं–शालीनता, तमीज, आदर–छोड़ बैठता है। ममी की इत्र की शीशी को बगीचे में खाली कर आता है और ममी को परेशान देखकर खुश होता है। एक पल को उसका खुश हुआ मन लगातार शून्य में घिरता जाता है। पापा के साथ कलकत्ता पहुँचकर तो बंटी का भीतरी मन जीवन की हर इच्छा से किनारा कर लेता है। वहाँ भी वह उदासी में घिरा अकेला, असुरक्षित और उपेक्षित महसूस करता है। इस तरह उपन्यासकार ने बंटी के अवचेतन पर दुख की गहरी छायाओं को उसके व्यक्तित्व में आ रहे परिवर्तनों के माध्यम से व्यक्त किया है। आर्थिक सुविधाएँ देने वाले ममी–पापा के होते हुए भी बंटी के मन का भावात्मक कोना अतृप्त है।

## शकुन का चरित्र

'आपका बंटी' उपन्यास के चरित्रों की बात की जाए तो कथा के केंद्र में बंटी और शकुन ही हैं। फूफी इन दोनों के बीच संतुलन बनाए रखती हैं। बंटी जहाँ अकेला है वहाँ भी उसकी मनःस्थिति का कोई सिरा अपनी ममी से ही जुड़ा रहता है। कथा के अंत तक शकुन और बंटी के जीवन में घटित घटनाएँ उपन्यास को प्रवाह देती हैं। पठनीयता बनाए रखती हैं। शकुन का चरित्र उपन्यास में कई दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है। उपन्यासकार ने जितनी कुशलता से बंटी को रचा है शकुन को भी उतनी ही गहरी संवेदना से रचा है। शकुन अपने बेटे बंटी की निगाह में अनेक स्थलों पर दोषी हो सकती है परंतु रचनाकार ने उसे दोषी सिद्ध नहीं किया है। यही कारण है कि पाठक भी बंटी की स्थिति के लिए शकुन को सीधा कटघरे में नहीं खड़ा करता। रचनाकार ने बहुत सावधानी के साथ शकुन के आंतरिक और बाह्य व्यक्तित्व को रचा है। शकुन के माध्यम से रचनाकार की स्त्री–चेतना के भी दर्शन होते हैं।

## आत्मनिर्भर स्त्री

मन्नू भंडारी का उपन्यास 'आपका बंटी' में बंटी की माँ शकुन एक आत्मनिर्भर स्त्री है। वह पढ़ी–लिखी, संभ्रांत महिला है जो लड़कियों के एक प्रतिष्ठित कॉलेज की प्रधानाचार्या है। उपन्यास के पहले ही पृष्ठ में लेखिका ने आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर शकुन की छवि को रचा है। पूरे उपन्यास में अनेक स्थलों पर शकुन की दायित्वपूर्ण कार्यपद्धति, कर्मठ रूप और कॉलेज के प्रति निष्ठा देखी जा सकती है। उसकी नियमित दिनचर्या का एक बड़ा हिस्सा कॉलेज के कामों के लिए समर्पित है। प्रशासनिक और अकादमिक जगत से उसका गहरा जुड़ाव उपन्यास में दिखाई देता है। अपने सहकर्मियों के साथ उसका आत्मीय संबंध है। अनेक बार बंटी भी शकुन के साथ कॉलेज जाता है पर धीरे–धीरे उसका मन वहाँ से उचाट हो जाता है। कार्यस्थल पर शकुन की अनुशासनप्रियता और कर्त्तव्यनिष्ठा के चलते बंटी को अपनी ममी की जगह एक दूसरी ही स्त्री दिखाई देती है। ममी की छवि से अलग लगने वाली प्रिंसीपल शकुन अपने जीवन के विभिन्न उतार–चढ़ावों के बीच अपनी नौकरी को सुचारु रूप से चलाती है। डॉक्टर जोशी से विवाह की खबर फैलने और कॉलेज के मैनेजर की पूछताछ शकुन



BHDC-109_4th proof.indd 274 8/6/2021 2:09:14 PM

को बेचैन करती है तब पहली और अंतिम बार वह सोचती है कि नौकरी छोड़ देगी। डॉक्टर जोशी द्वारा समझाए जाने पर वह भावुकता छोड़ देती है। इसी प्रसंग में वह यह भी विचार करती है कि डॉक्टर जोशी का उससे विवाह करने का एक कारण संभवतः उसका पद और पद से जुड़ी सामाजिक प्रतिष्ठा भी है।

**अकेलेपन की यातना**

उपन्यास में शकुन अकेलेपन की यातना झेलती है। इस यातना के दो छोर हैं– एक उसका पति अजय तो दूसरा बंटी। शकुन विवाहित है परंतु सिंगल पेरेंट की स्थिति में ही है। बंटी का किशोर उम्र की ओर जाना, बहुत सारे सवाल करना और उसका अंसतोष शकुन को व्यथित करता है। उसका पति अजय किसी कम्पनी का मैनेजर है। विवाह को दस वर्ष हो चुके हैं जिनमें से सात वर्ष तक उसका वैवाहिक जीवन खुशहाल नहीं रहा। लेखिका ने इसे 'घिसटता हुआ संबंध' कहा है। बंटी को अकेले पालना और पति के लौट आने की आस लगाए रखना शकुन को यातनाप्रद स्थिति में डाल देता है। पति का बेटे से मिलने आना उसे उम्मीद दिलाता है कि जीवन कभी खुशहाल होगा पर यह संभावना जल्द ही समाप्त हो जाती है। पति के द्वारा भेजे गए वकील चाचा, अजय द्वारा तलाक की मांग और उसके दूसरे विवाह की सूचना संग लाते हैं। अपने अंधकारमय जीवन के विषय में शकुन सोचती है– ''एक अध्याय था, जिसे समाप्त होना था और वह हो गया। दस वर्ष का यह विवाहित जीवन–एक अंधेरी सुरंग में चलते चले जाने की अनुभूति से भिन्न न था। आज जैसे एकाएक वह उसके अंतिम छोर पर आ गई है। पर आ पहुँचने का संतोष भी तो नहीं है, ढकेल दिए जाने की विवश कचोट–भर है। पर कैसा है यह छोर? न प्रकाश, न वह खुलापन, न मुक्ति का एहसास लगता है जैसे इस सुरंग ने उसे एक दूसरी सुरंग के मुहाने पर छोड़ दिया है–फिर एक और यात्रा–वैसा ही अंधकार, वैसा ही अकेलापन।''

भीतरी यातना को शकुन अपने बाह्य व्यवहार से सदा नियंत्रित करने की कोशिश करती है। वकील चाचा के विरोधाभासी कथनों को वह बखूबी समझती है। कहाँ विवाहित जीवन के आरंभ में वह अजय जैसे व्यक्ति के साथ तनावपूर्ण जीवन को सुधारने के लिए शकुन को 'एडजस्ट' करना और अपनी इच्छाओं को मारना सिखाते हैं और कहाँ तलाक की नौबत आने पर कहते हैं–''यदि ऐसा ही है तो फिर अच्छा है कि तुम लोग अलग हो जाओ संबंध को निभाने की खातिर अपने को खत्म कर देने से अच्छा है कि संबंध को ही खत्म कर दो।'' जीवन की एक आस के टूटने के बावजूद शकुन एकदम संयमित मुद्रा में रहती है। उसके मन का भीतरी कोना भले ही अँधेरे से जूझता है, पीड़ा महसूस करता है पर वह बंटी को हॉस्टल भेजने की अजय की बात का पूरा विरोध करती है और वकील चाचा से भी साफ कहती है–'' आप क्यों इतना गिल्ट फील कर रहे हैं...? इसमें नया तो कुछ नहीं हुआ? जो था उसे ही कानूनी रूप दिया जा रहा है।' और कहने के साथ ही उसे लगा, काश! वह अपने मन को भी ऐसे ही समझा पाती।''

तलाक के बाद बंटी को एकमात्र सहारा मानने वाली शकुन दो महीने की छुट्टियों के दौरान बंटी के साथ ही रहती है। यह उसके दुख के दिन हैं पर बंटी के स्नेह में वह कमी नहीं आने देती। उसके जीवन में डॉक्टर जोशी के आने के बाद बंटी से लगातार उसकी अनबन रहती है। बंटी उसकी अपेक्षा से नितांत विपरीत व्यवहार करता है जिससे वह न सिर्फ अपमानित होती है बल्कि पीड़ित भी होती है। इस तरह शकुन का जीवन दोहरी यातनाओं से अभिशप्त रहता है। वह इन यातनाओं में भी बंटी, घर, नए संबंध और नौकरी के दायित्व सही ढंग से निभाने की भरसक कोशिश करती है।

दूसरा विवाह करके भी शकुन की यातनाएँ समाप्त नहीं होतीं। एक स्त्री के रूप में, एक माँ के रूप में और एक पत्नी के रूप में उसके भीतरी द्वंद्व और पीड़ाएँ उसे मथते



BHDC-109_4th proof.indd 275 8/6/2021 2:09:15 PM

रहते हैं। उपन्यासकार ने उपन्यास के आरंभ में साफ लिखा है– ''इस नारी और मां के आपसी द्वंद्व का अध्ययन ही शकुन को उसका वर्तमान रूप देता है।'' (जन्मपत्री : बंटी की, मन्नू भंडारी का वक्तव्य) दूसरे विवाह के बाद संतुष्ट जिंदगी जीते हुए भी अनेक बार शकुन खुद को असहाय पाती है। उसके भीतर की स्वतंत्रचेता और तार्किक स्त्री अपनी नयी स्थिति इस प्रकार विश्लेषण करती है–'' ...कभी–कभी डॉक्टर के सामने अकारण ही अपने को बड़ा छोटा महसूस करने लगती है। लगता है, जैसे डॉक्टर ने स्वीकार करके उस पर बड़ी कृपा की है। छोटा बनकर जीना उसके अहं को बर्दाश्त नहीं और बड़ा होकर जीने लायक उसके पास कोई पूंजी नहीं। तब एक अजीब–सी मानसिक यातना में वह अपने को पाती है।''

जीवन की नई स्थितियाँ शकुन के व्यक्तित्व के अंतर्विरोधों को भी व्यक्त करती हैं। बंटी के प्रति उसकी प्राथमिकताएँ पहले जैसी नहीं रह पातीं। वह कभी बंटी को अपने प्रतिशोध का हथियार बनाती है तो कभी बंटी को स्वयं से दूर करने का निर्मम निर्णय भी लेती है। उपन्यासकार का कहना है– ''जिंदगी को चलाने और निर्धारित करनेवाली कोई भी स्थिति कभी इकहरी नहीं होती, उसके पीछे एक साथ अनेक और कभी–कभी बड़ी विरोधी प्रेरणाएं निरंतर सक्रिय रहती हैं। शकुन और बंटी– दोनों के चरित्रों की वास्तविकता इन्हीं अंतर्विरोधों में जीने की वास्तविकता है।'' (जन्मपत्री : बंटी की, मन्नू भंडारी का वक्तव्य)

### समर्पित माँ

शकुन बंटी के लिए एक समर्पित माँ है। वह बंटी के पिताविहीन जीवन का दुख जानती है और बंटी के जीवन के अभावों को भरने की यथासंभव कोशिश करती है। बंटी और शकुन का असुरक्षा बोध कई बार एकाकार होकर दोनों को और अधिक निकट ले आता है। कई बार शकुन , बंटी की उम्र की परवाह किए बगैर उसके सामने सच को खोलकर रख देती है। तलाक के बाद स्वयं को दृढ़ रखने के बावजूद एक दिन संयम खोकर वह बंटी को वास्तविकता बता देती है–'' अब होने को बाकी ही क्या रह गया था? बस, अब से तू मेरा बेटा है, केवल मेरा। भूल जा कि तेरे पापा...।'' वह बंटी को अपने जीवन का एकमात्र आधार मानती है। बंटी के हर गुस्से को अपने प्यार और स्पर्श से समाप्त कर देना चाहती है। उसके इस प्यार और स्पर्श को अजय, वकील चाचा और डॉक्टर साहब अनुचित मानते हैं। सबका एक ही कहना है कि अतिरिक्त लाड़–प्यार और स्पर्श ने बंटी के सहज विकास को बाधित करके उसे लड़कियों जैसा भावुक बना दिया है। वकील चाचा तो बहुत सख्त बात कहते हैं–'' यह तुम मां–बेटों का चूमने–चाटने और गले में बांहें डाल–डालकर लिपटनेवाला जो रवैया है वह अब बंद होना चाहिए। लगता है, तुम अपनी इस अर्ज को भी बंटी के साथ पूरा करती हो।'' शकुन के अंतर्मन को यह बात आहत करती है पर बेटे के विकास के लिए वह उसे अपनी निकटता और स्पर्श से दूर रखती है।

दूसरा विवाह शकुन स्वेच्छा से करती है पर उसमें बंटी की उपेक्षा का भाव कहीं नहीं रहता। वह बंटी के सहज विकास और खुशी को महत्व देती है। बंटी की भावात्मक इच्छाओं की पूर्ति करती है। चाहती है बंटी नए परिवार का सदस्य बने लेकिन पहले बंटी के डर और फिर उसका विद्रोही स्वभाव शकुन को पीड़ा पहुँचाता है। रात को अपने भयों से जूझता बंटी डर के मारे बिस्तर गीला कर देता है और अगले दिन उसे सबके सामने यह बात खुलने में शर्म महसूस होती है। शकुन न सिर्फ बंटी की स्थिति को समझती है बल्कि अपने प्रयासों से पूरे घर के सामने इस सच को आने ही नहीं देती। वह डॉक्टर जोशी से भी अक्सर बंटी की समस्या साझा करती है लेकिन कई बार समस्या की तह तक न पहुँचने वाले पति से भी उसे शिकायत रहती है। बंटी की जरूरत के हर सामान उसकी अल्मारी, मेज की भी शकुन को परवाह रहती है। बंटी



BHDC-109_4th proof.indd 276 8/6/2021 2:09:15 PM

के अकेलेपन और निराशा को दूर करने के लिए शकुन नए घर में बगीचा लगाने का सुझाव भी देती है और पुराने घर से लाए जा सकने वाले पौधों की बात भी माली से करती है। बंटी की कुंठा के प्रहार भी सहती है। डॉक्टर जोशी के बंटी से बाहर घुमाकर लाने का वादा पूरा न करने पर शकुन पति से इसकी शिकायत करती है।

विवाह के बाद नई स्थिति बंटी के लिए ही विषम नहीं ऊपर से सहज दिखने वाली शकुन के लिए भी बहुत सहज नहीं है। वह भी अपने को बँटा हुआ पाती है। इस स्थिति से दुखी होकर वह बंटी को हॉस्टल भेजने का कठोर निर्णय भी लेती है पर उसे लगता है ''वह जैसे एकदम खाली और खोखली हो गई है।'' बंटी को उसके पिता के साथ भेजे जाने पर शकुन उसकी अनुपस्थिति में डॉक्टर जोशी के बच्चों जोत और अमित के विषय में सोचती है– "...बिना बंटी के वह इन लोगों को उसी तरह प्यार कर सकेगी जैसे बंटी को करती थी? इन्हें उतना ही अपना समझ सकेगी? शायद नहीं।'' इस प्रकार अनेक प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करते हुए भी शकुन बंटी के प्रति समर्पित रहती है।

### स्वाधीन चेतना सम्पन्न

उपन्यास में शकुन के व्यक्तित्व की एक बड़ी विशेषता उसका स्वाधीन चेतना सम्पन्न होना भी है। यही कारण है माता–पिता से, ससुराल पक्ष से अलग रहने वाली शकुन अपने जीवन के अनेक निर्णय खुद लेती है और उन्हें समाज के समक्ष सही सिद्ध करने की पूरी कोशिश करती है। वह पति से स्वतंत्र एकाकी जीवन जीती है। आर्थिक रूप से स्वावलंबी शकुन, बंटी की हर ख्वाहिश पूरी करने की कोशिश करती है। वह न सिर्फ बंटी की भावात्मक इच्छाएँ समझती है बल्कि भौतिक इच्छाएँ भी पूरी करती है। पति से तलाक के बाद वह दृढ़ निश्चय करती है कि पति की सलाह न मानकर बंटी को हॉस्टल नहीं भेजेगी। यह उसके द्वारा लिया गया पहला महत्त्वपूर्ण निर्णय है। इसके बाद समाज की परवाह न करते हुए डॉक्टर जोशी से विवाह करना उसके जीवन का एक अन्य महत्त्वपूर्ण निर्णय है। विवाह के मसले पर फूफी का विरोध और परिस्थितियों के विषम होने पर बंटी को हॉस्टल भेजने के निर्णय के पीछे भी शकुन की ही सहमति रहती है। शकुन के दूसरे विवाह पर फूफी की आपत्ति और क्रोध का वह तार्किक उत्तर देती है। परिस्थितियों ने शकुन को निडर और स्वाधीन बनाया है। वह फूफी द्वारा परंपरागत आचरण वाली स्त्री को सही माने जाने के विरुद्ध अपनी आधुनिक स्वंतत्र विचारशीलदृष्टि से सम्पन्न होकर कहती है–'' देखो फूफी, मैं तुम्हारी बहुत इज्जत करती हूं। अपनी मां से भी ज्यादा...पर मां को भी मैंने कभी अपनी बातों के बीच में बोलने नहीं दिया...मुझे याद नहीं वे कभी बोली हों।...यह अधिकार तो मैं किसी को दे ही नहीं सकती।'' इस प्रकार शकुन अपने जीवन में भावुक निर्णय नहीं लेती और किसी भी व्यक्ति के अपने जीवन में अनाधिकार प्रवेश को अनुचित मानती है। उसका विरोध करती है।

डॉक्टर जोशी से विवाह के बाद शकुन अवश्य सशंकित रहती है। इस संशय का मुख्य कारण पहले विवाह की असफलता है। इसीलिए वह आधुनिक होकर भी अंधविश्वास में पड़कर किसी शुभ दिन डॉक्टर के घर जाना तय करती है। बाद में भी बंटी के संदर्भ में कही गई अनेक बातों का प्रत्यक्ष विरोध वह नहीं करती पर उसका मन बातों पर असहज भी होता है और आंतरिक रूप से सशंकित होकर विरोध भी प्रर्दशित करता है। डॉक्टर द्वारा बंटी को 'प्रॉबल्म बच्चा' कहने पर शकुन का मन कहता है–''...जैसे डॉक्टर कह रहे हों–इन्फ्लुएंजा है तो बदन मे ंतो दर्द होगा ही। इन बातों पर कहीं इस तरह बात की जाती है? और क्या प्रॉब्लम बच्चा है? पागल है, उसका दिमाग खराब है या कि... पर नहीं डॉक्टर से वह अपेक्षा की क्यों करती है कि उसी की तरह सदय होकर, उसकी तरह मां बनकर बंटी के बारे में सोचें! डॉक्टर तो शायद बाप बनकर भी नहीं सोच सकते!''



BHDC-109_4th proof.indd 277 8/6/2021 2:09:15 PM

इस प्रकार शकुन अपने जीवन में घट रही घटनाओं के प्रति अधिकांश रूप से तार्किक रहती है और जीवन के निर्णय स्वयं लेती है।

### स्त्री की सहज इच्छाएँ

जीवन में निरंतर तनाव और द्वंद्व का सामना करती शकुन का वैवाहिक जीवन न ही उसे कोई भावात्मक सम्बल दे सका न ही शारीरिक सुख। डॉक्टर जोशी के जीवन में आने से पहले शकुन ने कभी यह नहीं सोचा था कि उसके जीवन में पुरुष के साथ, सहयोग और स्पर्श की सहज इच्छाएँ शेष हैं। डॉक्टर जोशी के आगमन के बाद वह अतीत और वर्तमान को तुलनात्मक रूप में विश्लेषित करती है–'' आज लगता है, साथ रहना भी कितनी तरह का हो सकता है। सारी जिंदगी साथ रहकर भी आदमी कितना अकेला रह सकता है और किसी का हल्का–सा स्पर्श भी कैसे जिंदगी को किसी के साथ होने के एहसास और आश्वासन से भर सकता है।''

जीवन के छत्तीस वर्ष गुजार देने वाली एक युवती भी डॉक्टर जोशी के प्रेम और अधिकार से किशोर उम्र का नया उत्साह अपने भीतर अनुभव करती है। शकुन को डॉक्टर जोशी के साथ एकांत में रहना उल्लास से भर देता है। वह स्वीकार करती है–'' लगता है, उम्र बीत जाने से कैशोर्य और यौवन नहीं बीत जाता। ये भावनाएं केवल तृप्त होकर ही मरती हैं, वरना और अधिक बलवती होकर आदमी को मारती हैं।'' शकुन को अपनी यह नई स्थिति उम्र के अभाव को भरती हुई जान पड़ती है। उसे डॉक्टर का स्पर्श, उससे संवाद सब आनंद देते हैं। पुरुष के बिना एकाकी जीवन बिताने वाली उदास और निर्लिप्त शकुन के पीछे चंचल और जीवन से भरी स्त्री दिखाई देने लगती है। अंर्तमुखी शकुन खुलकर बातचीत करने लगती है। वह डॉक्टर जोशी से पूछती है–'' अच्छा क्या प्रेम सचमुच ही मात्र एक शारीरिक आवश्यकता और एक सुविधाजनक एडजस्टमेंट का ही दूसरा नाम है? बताओ, तुम्हें क्या अपनी पत्नी की याद नहीं आती और आती है तो क्यों? उसे तुम क्या कहोगे?'' इस प्रसंग में शकुन अधिक मुखर दिखाई देती है जबकि पूरे उपन्यास में हर स्थिति में बिना विचलित हुए अत्यंत संयमित रहने वाले डॉक्टर जोशी अपने अतीत को उससे छिपाते प्रतीत होते हैं।

### फूफी का चरित्र

'आपका बंटी' उपन्यास में फूफी घर की सबसे जीवंत कड़ी के रूप में नजर आती हैं। ऐसा महसूस होता है कि शकुन के जीवन की उदासी और बंटी के अकेलेपन को अपने व्यवहार से फूफी संतुलित करके एक दिशा देती हैं। घर में चुप्पी, तनाव के वातावरण को छाँटने वाली एकमात्र पात्र फूफी हैं। यों तो फूफी गृहसेविका हैं परंतु वह उम्र में शकुन से बड़ी हैं और वर्षों से घर को अपनी सेवाएँ देने के कारण घर का अभिन्न अंग हो गई हैं।

### वात्सल्य से भरपूर

उपन्यास में पाठक फूफी के साथ एक गहरा जुड़ाव अनुभव करता है। वह कर्मठ हैं, हाजिरजवाब हैं, हँसमुख हैं और घर के प्रति समर्पित हैं। पति से अलगाव का दुख और नौकरी के दायित्वों में घिरी शकुन, बंटी को कम समय दे पाती है। ऐसे में घर में फूफी ही शकुन की कमी को बंटी के लिए पूरा करती हैं। बंटी को भैया सम्बोधित और शकुन को बहूजी कहने वाली फूफी एक तरह से दोनों के प्रति वात्सल्य भाव रखती हैं। शकुन के जीवन के दुखों से भी वह व्यथित होती हैं और बंटी की मनोदशा को समझकर बंटी को खुश रखने के सभी प्रयास करती हैं। बंटी के खाने–पीने का ध्यान, उसकी जरूरतों का ख्याल, माँ सरीखा लाड़, बंटी को कहानियाँ सुनाकर खुश करना, किसी कहानी को सुनकर दुखी हो रहे बंटी को तुरंत कोई हास्य रस वाली कहानी सुनाना–सभी बातों के लिए फूफी मौजूद हैं। कहानियों में बंटी की जान बसती है। वह



BHDC-109_4th proof.indd 278 8/6/2021 2:09:15 PM

फूफी से सुनी सोनल रानी की लंबी कहानी बार–बार सुनता है। कहानियों के संदर्भ में बंटी की अनंत जिज्ञासाएँ हैं। इन्हें फूफी अनेक बार सुलझाती भी हैं। बंटी के संसार में फूफी एक अनिवार्य कड़ी हैं। बंटी–फूफी के बीच लगातार होती बातचीत घर को घर बनाए रखती है। उदाहरण के लिए यह संवाद देखिए–

''तुमने डायन देखी है फूफी? कैसी होती होगी? जब आदमी के भेष में होती होगी तब तो कोई पहचान भी नहीं सकता होगा? बंटी की आंखों में जाने कैसे–कैसे चित्र तैरने लगे।

अरे, हमने नहीं देखी कोई डायन–वायन, तुम चलकर नहा लो।

नहीं अभी नहीं नहाता।''

**मित्र–भाव**

बंटी का शकुन से संबंध माँ का ही अधिक है। माँ के साथ दोस्ताना व्यवहार बंटी का नहीं है। यही बात पापा के संदर्भ में भी है। दोनों माता–पिता की आपसी दूरी और तनावों ने उन्हें समय ही नहीं दिया कि वे बंटी के मित्र भी बन सकें। पापा हर कमी को खिलौनों से पूरी करते हैं और ममी उसे अपने नजदीक रखकर। एकमात्र फूफी ही बंटी को मातृवत स्नेह भी देती हैं और उसकी दोस्त भी बन जाती हैं। दोनों के बीच ऐसे कई प्रसंग हैं जहाँ यह मित्र–भाव देखा जा सकता है। ऐसा संबंध जो समानता के धरातल पर खड़ा है। कभी दोनों के बीच प्यार, कभी नोंक–झोंक, कभी लड़ाई के अनेक दृश्य उपन्यास में हैं। जैसे –

''तुम कहती थीं न फूफी कि रात–दिन भगवान करते हैं। पानी भगवान बरसाता है। सब झूठ। जनरल साइंस की किताब में सारी सही बात लिखी हुई है। अभी पढ़ी नहीं है। तब पढ़ लूंगा तो सब तुम्हें बताऊंगा।

''तो हम कौन इस्कूल में पढ़े हैं बंटी भैया! बस, अब तुमसे पढ़ेंगे। इंगरेजी भी पढ़ाओगे हमें।''

बंटी फिर खीं...खीं करके हँस पड़ा।''

दोनों के बीच लड़ाई के अनेक दृश्य हैं। अधिकांश ये लड़ाई मुखर ही है। कहीं–कहीं अबोले जैसी स्थिति भी आती है। फूफी एक तरफ बराबरी की डोर थामे बंटी से लड़ती भी हैं और फिर माँ की तरह उसकी मनुहार भी करती हैं। उदाहरण के लिए यह प्रसंग–

''तभी फूफी की बात याद आ जाती है। हुंह! फूफी बकवास करती है। कहीं ममी को प्यार करने से या कि ममी के साथ सोने से कोई लड़का लड़की बन जाता है होगा भला!

तुम नहा लो बंटी भैया! कहो तो हम नहला दें?

नहीं अपने आप नहाऊंगा। बड़ी आई नहलानेवाली!

तो जाओ अपने आप नहाओ। हम कपड़ा–वपड़ा निकालकर रख देते हैं।''

या फिर बंटी के गुस्से पर फूफी का यह रुख–

''फेंको, खूब फेंको, सारी चीजें उठाकर फेंक दो। आखिर तुम किसी से कम हो? यह तो एक बहूजी हैं जो तुम्हारे पीछे जान हलकान किए रहती हैं। नही ंतो...'।''

फूफी एक तरफ बंटी के बढ़ते गुस्से और उसके भीतर के अंसतोष को देखते हुए बहूजी यानी शकुन के भविष्य के लिए चिंतित होती हैं तो दूसरी ओर बंटी के लिए भी उनकी चिंता बनी रहती है। दलिया और घर की चीजें फेंकने की हरकत पर वह शकुन से कहती हैं–

''मत इतना सिर चढ़ाओ बहूजी, हम अभी से कहे देते हैं, नहीं फिर आप ही दुखी होंगी।''



BHDC-109_4th proof.indd 279 8/6/2021 2:09:15 PM

दूसरी तरफ डॉक्टर जोशी के परिवार के घर आने और बंटी को शकुन द्वारा मारे जाने पर अकेले और अपमानित बंटी को मनाने केवल फूफी ही जाती हैं–

''अरे काहे को तुम हमारा खून जलाते हो बंटी भैया। कहते हैं न उतरकर खाना खा लो। फिर मर्जी आए बंदूक चलाना, चाहे तोप।''

### हितचिंतक

फूफी का चरित्र अनेक मनोभावों और सादगी से भरा है। उनकी पूरी दुनिया बंटी और शकुन के घर तक सीमित है। दोनों के प्रति उनका भावुक मन तड़पता है। दोनों को परेशानी में देखकर वह भी परेशान होती हैं। उपन्यास के आरंभ में ही जब शकुन, वकील चाचा के कहने पर तलाक के कागजों पर हस्ताक्षर करने जाती है पीछे से फूफी की खिन्नता और शकुन के लिए चिंता साफ उजागर होती है। फूफी, बंटी के पापा अजय की मर्दागनी को प्रश्नित करती है। वह बंटी से कहती हैं–

''हम कहते हैं तुम यहां से चले जाओ बंटी भैया। हमारे तन–बदन में आग लगी हुई है इस बखत। बहू को ले जाकर थाना–कचहरी खड़ा करेंगे। मर्दानगी दिखाएंगे। अरे हाथ पकड़कर निभाने की मर्दानगी जिनमें नहीं होती, वह ऐसे ही मर्दानगी दिखाते हैं। अनबन किसमें नहीं होती, तो क्या ब्याही औरत को यों छोड़ दिया जाता है?''

शकुन के पक्ष में खड़ी होकर अपनी संवेदना और गुस्सा व्यक्त करने वाली फूफी, शकुन और डॉक्टर साहब के बीच पनप रहे प्रेम–संबंध और उपेक्षित हो रहे बंटी की स्थिति देखती हैं, तो वह एक तरफ शकुन को समझाती हैं और दूसरी तरफ एकांत में बंटी से अपनी ममी से जिद करके बात मनवाने की उसकी आदत याद दिलाती हैं। शकुन के डॉक्टर जोशी के साथ घूमने जाने पर वह सीधी आपत्ति तो नहीं करतीं पर यह जरूर कहती हैं–

''न हो तो साथ ले जाओ न बहूजी....काम से जा रही हो तो क्या हुआ? बच्चा होगा तो क्या फेंक जाएंगे? दो मिनट में तैयार किए देती हूं।''

### स्पष्टवादी

फूफी उपन्यास में एक ईमानदार श्रमिक के रूप में उपस्थित हैं। वह अपनी पूरी मेहनत से घर को सँवारती हैं। उसकी सादगी का सौंदर्य उसकी स्पष्टवादिता है। वह बुरी लगने वाली बातों को सहज रूप में नहीं स्वीकारतीं। पूरी निष्ठा से घर की सेवा करने वाली फूफी किसी भी गलत व्यवहार और बात पर न सिर्फ अपनी राय रखती हैं बल्कि यथासंभव विरोध भी करती हैं। उदाहरण के तौर पर बंटी के दलिया फेंकने वाली बात पर वह कहती हैं–

''चुप करे वह जिसके जीभ नहीं है। आने दो ममी को यों का यों पड़ा रहने दूंगी यह सारा दलिया। देखें तो तुम्हारे कारनामे। अभी तो यह हाल है तो बड़े होकर पता नहीं क्या सुख दोगे अपनी महतारी को।''

बंटी पर ध्यान न देने पर वह शकुन को भी उलाहना देती हैं–

''कइसा खुश–खुश आया था बच्चा स्कूल से। बहुत दिनों बाद तो चेहरे पर ऐसी हंसी देखी थी...आने के बाद दस बार तो कहा था कि कागद चढ़ा देना, पर आपको तो आजकल...।''

फूफी, शकुन और अजय के संबंध विच्छेद में अजय को पूरी तरह दोषी मानती हैं पर जब शकुन दूसरे विवाह की ओर कदम बढ़ाती है तो फूफी को यह अनुचित लगता है। दरअसल फूफी के लिए स्त्री की निजता का प्रश्न बहुत महत्व नहीं रखता। वह जिन संस्कारों से बनी हैं वहाँ स्त्री की भूमिका एक समर्पित पत्नी और समर्पित माँ की है।



BHDC-109_4th proof.indd 280 8/6/2021 2:09:15 PM

इनसे स्वतंत्र होकर स्त्री अपनी राह बनाए यह फूफी नहीं जानतीं। इसीलिए वह शकुन के नए निर्णय को अनुचित ठहराते हुए ताना भी कसती हैं और अपने अनुभवों के आलोक में भविष्य की गति के प्रति सावधान भी करती हैं–

''जिस घर के लोग लीक छोड़कर चलेंगे उसमें यही सब होगा। अभी क्या हुआ है, अभी तो बहुत कुछ होगा।''

बंटी के भविष्य को लेकर आशंकित फूफी, शकुन के विवाह के निर्णय पर असहमति दर्ज कराती हैं। उन्हें अपने श्रम पर भरोसा और ईमानदारी पर गर्व है इसीलिए निडरता उनका स्वाभाविक गुण है। वह डंके की चोट पर शकुन से कहती हैं–

''अरे हम नौकर आदमी, हम कइसे नाराज होंगे। पर भगवान ने जीभ दी है तो बोलेंगे जरूर। आप सौ जूता मारेंगी तो हम तनिकों चिंता नहीं करेंगे, पर बोले बिना हमसे रहा नहीं जाएगा।...

अब आप जो कर रही हैं बालक–बच्चा को लेकर, सो आपको शोभा देता है? बड़े आदमियों की बड़ी बात, मुंह पर कौन बोलेगा, और काहे बोलेगा? पर फूफी तो मुंह पर ही बोलेगी।...

जवानी यों ही अंधी होती है बहूजी, फिर बुढ़ापे में उठी हुई जवानी। महासत्यानाशी! साहब ने जो किया तो आपकी मट्टी पलीद हुई और अब आप जो कर रही हैं इस बच्चे की मट्टी पलीद होगी। चेहरा देखा है बच्चे का कैसा निकल आया है ,जैसे रात–दिन घुलता रहता हो भीतर ही भीतर।''

**स्वाभिमानी**

फूफी ने जीवन भर शकुन के परिवार की निस्वार्थ सेवा की। वह परिवार का अंग रहीं। शकुन ने भी उन्हें सम्मान से रखा लेकिन शकुन के विवाह करने के निर्णय और बंटी के प्रति फूफी के अज्ञात भयों ने शकुन और उनके रिश्ते को एक निर्णायक मोड़ पर ला खड़ा किया। ऐसे में स्वाभिमानी फूफी घर छोड़ने और हरिद्वार जाने का निर्णय लेती हैं। वैसे भी नई स्थिति में डॉक्टर जोशी के घर में फूफी का रहना उतना ही असंभव होता जितना बंटी के लिए होता गया। हरिद्वार जाने से पहले वह शकुन के आदर से दिए गए रुपये भी वह लौटा देती हैं। जीवन भर अपनी सेवा और प्यार से घर को सींचने वाली फूफी को जाते समय भी केवल बंटी की ही चिंता मथती है। वह कसम के बावजूद शकुन के दिए रुपये यह कहकर लौटाती है–

''नहीं , हमें पाप में मत डालो बहूजी कसम दिलाकर। हम कुछ नहीं लेंगे। भगवान के दरबार में जा रहे हैं, रुपया पइसा का होगा क्या? देना ही है तो एक बचन दे दो कि हमारे बंटी भैया को जैसा आपने बिसरा दिया है आजकल वैसा और मत करना। आप के रहते यह बिना बाप का हो रहा, अब मां के रहते यह बिना मां का न हो जाए...।''

**बोध प्रश्न 1**

**1. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिएः**

1. अरूप बत्रा, ..... का ही नाम है।
2. शकुन और बंटी गृहसेविका को ..... संबोधन से पुकारते थे।
3. अजय ने ..... के हाथ तलाक के कागज शकुन को भिजवाए।
4. 'आपका बंटी के तीन मुख्य चरित्र ..... , ..... और ..... हैं।
5. बंटी को जो भी व्यक्ति पसंद आता है वह उसे ..... भेंट करता है।



BHDC-109_4th proof.indd 281 8/6/2021 2:09:15 PM

2. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर सात–सात पंक्तियों में दीजिए–

1. शकुन के चरित्र की किन्हीं तीन विशेषताओं को बताइए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2. बंटी की किन्हीं दो अभिरुचियों के विषय में लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3. 'फूफी एक स्पष्टवादी महिला हैं '–उदाहरण सहित बताइये।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

4. शकुन का चरित्र एक स्त्री और एक माँ में किस प्रकार बँटा हुआ है?

.....

.....

.....

.....

.....

5. बंटी के लिए बगीचा क्या महत्त्व रखता है?

.....

.....

.....

.....

.....



BHDC-109_4th proof.indd 282 8/6/2021 2:09:15 PM

## 16.2.2 सहायक चरित्र

उपन्यास में मुख्य चरित्रों के अतिरिक्त सहायक चरित्र भी हैं। इनमें हम शकुन के पहले पति अजय और दूसरे पति डॉक्टर जोशी को रख सकते हैं। अजय की प्रत्यक्ष उपस्थिति तो उपन्यास में कम ही है और डॉक्टर जोशी भी एक लंबे समय बाद प्रत्यक्ष रूप से शकुन और बंटी के जीवन में आते हैं पर उनकी भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण और निर्णायक नहीं रहती।

### अजय

शकुन का पति और बंटी का पिता अजय, पत्नी–बेटे से दूर कलकत्ता में रहता है जहाँ मीरा नाम की एक स्त्री के साथ उसका संबंध है। पिछले कई वर्षों से अपनी विवाहिता स्त्री शकुन के साथ उसका कोई संबंध नहीं है। साथ रहते हुए भी जीवन में प्रेम नहीं रहा फिर अलगाव और तलाक की स्थिति आई। अजय द्वारा पत्नी से संबंध को सुधारने की कोई कोशिश दिखाई नहीं देती। शकुन के मन में फिर भी अजय बसता है पर अजय के मन में शकुन नहीं है। वह किसी भी सूरत में शकुन से न मिलना चाहता है न संवाद करना चाहता है। वह ऐसी हर स्थिति से बचता है। बंटी के प्रति उसके मन में वात्सल्य है। आरंभ में लगता है अजय , बंटी के जीवन में अपनी कमी को भेंट दी गई वस्तुओं से पूरा करना चाहता है पर तलाक के बाद डॉक्टर जोशी के घर से बंटी को कलकत्ता लेकर जाने पर अजय के व्यक्तित्व का दूसरा पक्ष उजागर होता है। उससे पूर्व अजय आत्मकेंद्रित, व्यस्त, निर्मोही व्यक्ति जान पड़ता है परंतु बंटी को कलकत्ता ले जाने के बाद वह शकुन की तरह ही उसका ध्यान रखता है। दूसरी पत्नी मीरा से बंटी को लेकर असहमत भी होता है और उसे हॉस्टल भेजने के अपने निर्णय पर अडिग भी रहता है। यहाँ देखा जाए तो शकुन , बंटी से प्यार करने के बावजूद डॉक्टर जोशी के घर में द्वंद्व में घिरी रहती है जबकि अजय दूसरी पत्नी के साथ भी बिल्कुल निर्द्वंद्व रहता है। यह संभवतः भारतीय संरचना में पुरुषसत्तात्मक व्यवस्था का यथार्थ भी है।

अजय का व्यक्तित्व शकुन से निर्लिप्त है परंतु अपनी दूसरी पत्नी और बच्चे के प्रति समर्पित है और बंटी के प्रति भी जिम्मेदार है। कलकत्ता में अजय के व्यक्तित्व में संवदेनशील पिता दिखाई देता है। कई बार लगता है कि अजय जैसे शकुन में परिवर्तित हो गया है। वह बंटी के लिए शकुन जितना ही समर्पित लगता है। वह बंटी की जरूरतों को पूरा करने की कोशिश करता है। बंटी एक सामान्य लड़के की तरह जिए, पढ़े, दोस्त बनाए–यही अजय की इच्छा है। इसी इच्छा की पूर्ति का बेहतर विकल्प वह बंटी को हॉस्टल भेजने के रूप में देखता है। वह बंटी का जीवन तो व्यवस्थित करना चाहता है पर उसके अकेले, अतृप्त मन की वास्तविकता और खुशी पहचानने में वह भी शकुन की तरह ही विफल है।

### डॉक्टर जोशी

शकुन के दूसरे पति डॉक्टर जोशी बहुत व्यवहारकुशल व्यक्ति हैं। शकुन से उनका दूसरा विवाह है पर वह शकुन से प्रेम करते हैं। उसकी इच्छाओं का सम्मान भी करते हैं। उनके व्यक्तित्व का एक पक्ष हर स्थिति में उद्घाटित होता है, उनकी मुद्रा हर स्थिति में तटस्थ रहती है। वह किसी भी घटना के प्रति चिंतित, तत्पर, दुखी–आहत नहीं दिखाई देते। एक जैसी स्थिति में ही बने रहते हैं। शकुन इस व्यवहार पर अनेक बार चौंकती भी है। बंटी से भी वह दोस्ती करना चाहते हैं पर बंटी उन्हें पिता का दर्जा नहीं देता। एक सीमा के बाद अपनी ओर से बंटी की सुविधाओं के लिए पूरी कोशिश करके वह बंटी को उसके हाल पर छोड़ देते हैं। बंटी के कोमल स्वभाव के विषय में वे भी अजय की तरह ही उसमें लड़कीपन को देखते हैं। दरअसल उपन्यास में अजय,



BHDC-109_4th proof.indd 283 8/6/2021 2:09:15 PM

डॉक्टर जोशी और वकील चाचा का बंटी की कई आदतों को लड़कियों से जोड़कर देखना उनकी पूर्वाग्रही दृष्टि का परिचायक है। असुरक्षा और भय के कारण बंटी का शकुन से लगाव, स्पर्श, शकुन से चिपटा रहना और उसके साथ सोना–यह सभी बातें अजय और डॉक्टर जोशी को समान रूप से खलती हैं। दोनों की यह दृष्टि उस सामाजिक अनुकूलन को सामने लाती है जहाँ आदतों को भी लड़कों और लड़कियों के खाने में रखकर लड़कों को एक तरफ लड़कियों से नीचा दिखाकर अपमानित करने की कोशिश की जाती है तो दूसरी तरफ इन आदतों वाले लड़कों को अपमानित करके दरअसल लड़कियों को कमजोर और भावुक माना जाता है।

शकुन, डॉक्टर जोशी के अतीत, उनकी पहली पत्नी प्रोमिला के बारे में जानना चाहती है पर वह उसे साझा करना उचित नहीं समझते। उनके हँसते–मुस्कुराते चेहरे के नीचे एक दूसरा इंसान भी है। ऊपर से बड़े स्वतंत्र, बहिर्मुखी दिखने वाले डॉक्टर जोशी अपने भीतर के सच को सबसे नहीं बाँटते। अपने काम के प्रति गंभीर, धन की दृष्टि से समृद्ध, चेहरे से खुश रहने वाले, पहली पत्नी से हुए बच्चों को प्यार देने वाले पिता, शकुन के साथ दूसरे विवाह में एक संतुष्ट पति, पराए बेटे बंटी को परिवार में सहजता से शामिल करने वाले और अजय की उपस्थिति से भी विचलित न होने वाले डॉक्टर जोशी पूरी तौर पर एक व्यावहारिक आदमी हैं। इस सबके बावजूद वह शकुन पर पूरा अधिकार रखते हैं। नए घर में शकुन को कुछ स्थितियों में लगता है जैसे वह डॉक्टर जोशी के अधीन है। पति–पत्नी दोनों के आत्मनिर्भर होने के बावजूद घर के मुखिया डॉक्टर जोशी ही हैं।

### 16.2.3 अन्य चरित्र

उपन्यास के अन्य चरित्रों में टीटू, अम्माँ, माली, जोत, अमित, मीरा, चीनू आदि पात्र हैं। चूंकि यह सभी उपन्यास के मुख्य पात्र बंटी के जीवन से संबंधित हैं तो उसकी स्थिति को भी प्रभावित करते हैं। टीटू, बंटी के बचपन का दोस्त है। टीटू के साथ दोस्ती है, प्यार है, एक स्वाभाविक प्रतिद्वंद्विता भी है पर जब भी कोई सलाह लेनी है तो बंटी, टीटू को समझदार मानता है। टीटू के घर आने–जाने के कारण ही वह उसकी अम्माँ के स्वभाव से परिचित है। अम्माँ, बंटी और उसकी ममी को पसंद नहीं करती यह बात बंटी अच्छी तरह जानता है। बगीचे के लिए बीज, खाद, पौध लाने वाले माली से उसका गहरा नाता है। पेड़–पौधों के बारे में किसी भी तरह की कोई जिज्ञासा हो माली के पास उसका समाधान है। बंटी के लिए टीटू और माली भावात्मक सहारा हैं।

जोत, अमित, मीरा और चीनू यह सभी उपन्यास में कुछ समय के लिए आते हैं। डॉक्टर जोशी की बड़ी संतान जोत एक समझदार, हंसमुख और सहयोगी लड़की है। बंटी उसे पसंद करता है। इधर उम्र में छोटे अमित के भीतर की जिद और अधिकार भावना से बंटी चिढ़ता है। अमित उसे अपना प्रतिद्वंद्वी दिखाई देता है। उसकी कोई भी बात बंटी को पसंद नहीं आती। पापा के साथ कलकत्ता जाकर एकदम अंतर्मुखी हो गए बंटी को पापा की दूसरी पत्नी मीरा और उनके नन्हे बच्चे चीनू से कोई खास शिकायत नहीं है। वह नई परिस्थिति में खुद को अकेला पाता है। मीरा यथासंभव बंटी की चिंता भी करती है और उसके हॉस्टल जाने के अजय के दिए सारे निर्देशों का पालन भी करती है।

**बोध प्रश्न–2**

**3. उचित शब्दों द्वारा रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–**

क) बंटी का पिता अजय ..... शहर में रहता है।

ख) अजय की दूसरी पत्नी का नाम..... है और उसके दूसरे बेटे का नाम..... है।

ग) डॉक्टर जोशी की पहली पत्नी का नाम..... है।

घ) अमित में बंटी को अपना ..... दिखाई देता है।



BHDC-109_4th proof.indd 284 8/6/2021 2:09:15 PM

**4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 4–5 पंक्तियों में दीजिए–**

1. अजय और शकुन के बीच कैसा रिश्ता है?

.....

.....

.....

.....

.....

2. टीटू की अम्माँ, बंटी को किसलिए पसंद नहीं हैं?

.....

.....

.....

.....

3. क्या अजय, बंटी को प्यार करता है? उदाहरण देकर समझाइए।

.....

.....

.....

.....

4. जोत कौन है और बंटी से उसका कैसा संबंध है?

.....

.....

.....

.....

5. डॉक्टर जोशी और अजय दोनों को समान रूप से बंटी के व्यवहार में कौन–सी समस्या दिखाई देती है?

.....

.....

.....

.....

.....

## 16.3 सारांश

इस इकाई में 'आपका बंटी' उपन्यास के चरित्रों के बारे में विस्तारपूर्वक समझाया गया है। उपन्यास के चरित्रों को सुविधानुसार मुख्य, सहायक और अन्य की श्रेणियों में बाँटा गया है। बंटी, शकुन और फूफी जैसे मुख्य चरित्रों के वैशिष्ट्य के साथ उनके जीवन के अंतर्विरोधों और द्वंद्वों को भी उपन्यास के हवाले से समझाया गया है। सहायक चरित्रों में अजय और डॉक्टर जोशी के व्यक्तित्व की खूबियों–खामियों का उल्लेख किया



BHDC-109_4th proof.indd 285 8/6/2021 2:09:15 PM

गया है। मुख्य चरित्रों की दुनिया को ये सहायक चरित्र किस प्रकार प्रभावित करते हैं यह भी इकाई में स्पष्ट किया गया है। अन्य चरित्र की श्रेणी में उन सभी चरित्रों का उल्लेख किया गया है जो उपन्यास के मुख्य और सहायक चरित्रों के साथ अपनी सीमित–संक्षिप्त भूमिका का निर्वाह करते हैं। इनमें जोत, अमित, टीटू, अम्माँ, मीरा और चीनू जैसे चरित्रों के विषय में बताया गया है।

## 16.4 बोध प्रश्नों के उत्तर

**बोध प्रश्न 1**

**1. रिक्त स्थान–**

1. बंटी ; 2. फूफी ; 3. वकील चाचा ; 4. बंटी, शकुन, फूफी ;
5. अपने बगीचे के फूल

**2. सात–सात पंक्तियों में उत्तर**

1. शकुन के चरित्र की तीन विशेषताएं–आत्मनिर्भर स्त्री, स्वतंत्र चेता स्त्री और समर्पित मां। अधिक जानने के लिए 16.2.1 देखें।
2. चित्रकला और बागवानी। उत्तर के लिए 16..2.1 में बंटी के चरित्र संबंधी विशेषताओं को देखें।
3. 16..2.1 में फूफी की चारित्रिक विशेषताओं को देखें और बंटी के संदर्भ में शकुन और फूफी की टकराहट के उदाहरण से उत्तर लिखें।
4. उत्तर के लिए 16..2.1 में शकुन की चारित्रिक विशेषताओं में अकेलेपन की यातना और समर्पित माँ उपशीर्षक को देखें।
5. 16..2.1 में बंटी की कलात्मक अभिरुचियों पर आधारित उपशीर्षक को देखें।

**बोध प्रश्न 2**

**3. रिक्त स्थान–**

क) कलकत्ता ; ख) मीरा ,चीनू ; ग) प्रोमिला ; घ) प्रतिद्वंद्वी

**4. पांच पंक्तियों के उत्तर**

1. उत्तर के लिए 16.2.2 में अजय के चरित्र को देखें।
2. उत्तर के लिए 16.2.3 को देखें।
3. उत्तर के लिए 16.2.2 में अजय के बंटी को कलकत्ता ले जाने और हॉस्टल वाली घटना का उल्लेख करें।
4. उत्तर के लिए 16.2.3 को देखें।
5. उत्तर के लिए 16.2.2 में डॉक्टर जोशी की चारित्रिक विशेषताओं को जानें। अजय और डॉक्टर जोशी, दोनों को ही बंटी के स्वभाव में लड़कियों जैसी हरकतें पसंद नहीं हैं।



BHDC-109_4th proof.indd 286 8/6/2021 2:09:15 PM

# इकाई 17 'आपका बंटी' का परिवेश और संरचना–शिल्प

**इकाई की रूपरेखा**


17.0 उद्देश्य

17.1 प्रस्तावना

17.2 उपन्यास का परिवेश

17.2.1 शहरी मध्यवर्ग की प्रामाणिक कथा

17.2.2 सामाजिक रूप से प्रतिष्ठित और आर्थिक रूप से समृद्ध परिवार

17.2.3 महानगरों में बसे गाँव–कस्बे

17.3 उपन्यास का संरचना–शिल्प

17.3.1 उपन्यास की भाषा

17.3.2 शब्द–भंडार

17.3.3 उपन्यास की शैली

17.4 उपन्यास की संवाद–योजना और उसका महत्त्व

17.4.1 एकालाप

17.4.2 जीवंतता का गुण

17.4.3 रोचक और तंज कसते संवाद

17.4.4 संवाद और एकालाप के सामंजस्य की कला

17.5 सारांश

17.6 बोध–प्रश्नों के उत्तर


## 17.0 उद्देश्य

इस इकाई में आप उपन्यासकार मन्नू भंडारी के उपन्यास 'आपका बंटी' के परिवेश के संबंध में जान सकेंगे। उपन्यास के पात्रों की अपने परिवेश के साथ संगति को समझ पाएँगे। इसके अतिरिक्त उपन्यास के संरचना–शिल्प से संबंधित विस्तृत जानकारी आपको मिलेगी। इस पक्ष में आप उपन्यास की अनेक भाषिक विशेषताओं से परिचित हो सकेंगे। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- उपन्यास के परिवेश और उसके पात्रों की परिवेश के साथ संगति को जान पाएँगे;
- उपन्यास के संरचना–शिल्प से परिचित हो सकेंगे;
- उपन्यास की भाषिक विशेषताओं को जान पाएँगे; और
- उपन्यास में आए संवादों का विश्लेषण कर पाएँगे और महत्त्व को समझा सकेंगे।

## 17.1 प्रस्तावना

उपन्यास का परिवेश और उसकी संरचना उपन्यास–कला के दो मुख्य बिंदु हैं। किसी भी रचना की अंतर्वस्तु ही उसके रूप को निर्धारित करती है। कथाकार यदि ग्रामीण या आंचलिक जीवन की कथा को अपने उपन्यास का आधार बनाता है तो निश्चित तौर पर उसके उपन्यास में वह भूगोल अपनी अर्थवत्ता के साथ प्रस्तुत होगा। ग्रामीण जीवन का जीवंत परिवेश या देहाती जीवन के वैशिष्ट्य के साथ वहाँ के काम–धंधे,

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

किसान–फसल, मजदूर–श्रम, वहाँ की समस्याओं और उन समस्याओं में अपने परिवेश से जूझते पात्रों का वर्णन उपन्यास में मौजूद रहता है। उपन्यास में वर्णित परिवेश से लेखक का जुड़ाव जितना अधिक रहता है पात्र भी उससे उतने ही गहरे तौर पर जुड़ पाता है।

परिवेश के सफल चित्रांकन के लिए प्रेमचंद ने 'उपन्यास कला' शीर्षक लेख में बहुत ही स्पष्ट लिखा है–''लाजिम है लेखक वही दृश्य दिखावे, उन्हीं चरित्रों की तुलना करे, जिनका उसने स्वयं अनुभव किया हो। जिसने समुद्र नहीं देखा, वह किसी समुद्र का दृश्य क्यों कर लिखेगा? जिसने ग्रामीणों की संगति नहीं की, वह ग्रामीण जीवन का चित्र क्यों कर खींच सकता है? यही सफलता प्राप्त करने के लिए योरोप के कई विख्यात उपन्यासकारों ने वेश बदलकर उन स्थितियों का अध्ययन किया है, जिनके आधार पर वे अपना उपन्यास लिखना चाहते थे।'' परिवेश के प्रामाणिक चित्रण से उपन्यास के पात्र, स्थितियाँ, घटनाएँ समूचे तौर पर प्रभावित होती हैं। परिवेश की भिन्नता ही उपन्यास को पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आधारों पर अलग भी करती है।

उपन्यास की संरचना में भाषा एक प्रधान घटक है। उपन्यासकार जो कुछ भी कहना चाहता है उसे उसने किस दर्जे की भाषा में ,किन रचनात्मक कौशलों, भाषा की अर्थवत्ता को बढ़ाने वाली किन रचनात्मक युक्तियों का प्रयोग किया है, यह जानना भी बेहद महत्त्वपूर्ण है। अपने यथार्थ से रचनाकार की टकराहट और उससे टकराकर उपन्यास का भवन खड़ा करना एक कठिन और जटिल रचना–प्रक्रिया का अंग है।

'आपका बंटी' उपन्यास के संदर्भ में बात करें तो निजी और सामाजिक जीवन के यथार्थ को अभिव्यक्त करने वाला यह उपन्यास क्या अपने परिवेश के साथ संगति बिठा पाया है–यह जानना बेहद जरूरी है। साथ ही कथा को किन भाषागत उपादानों के माध्यम से अभिव्यक्त किया गया है, इसे जानना भी हमारी प्राथमिकता रहेगी। नई अंतर्वस्तु अपने साथ किस नए रूप का वहन करती है इसे हम भाषा संबंधी विशेषताओं के संदर्भ में जान पाएँगे। उपन्यास की संवाद–योजना भी शिल्प का एक विशिष्ट पक्ष है। 'आपका बंटी' उपन्यास की संरचना में संवाद की उपियोगिता और सार्थकता को जानना भी महत्त्वपूर्ण है। यह उपन्यास अपने समय का महत्त्वपूर्ण उपन्यास कैसे है इसकी जानकारी उपन्यास के इन सभी पक्षों को जानने से मिल सकेगी।

## 17.2 उपन्यास का परिवेश

रूसी जनता के संघर्षों से गहरी दिलचस्पी रखने वाले आलोचक और सिद्धांतवेत्ता रैल्फ फॉक्स उपन्यासकार के अपने समय से अभिन्न जुड़ाव के साथ स्पष्ट तौर पर यह मानते हैं कि उपन्यास यथार्थ जीवन का चित्रण करता है। इसलिए उनका यह भी मानना है कि उपन्यास विधा मानव–जीवन की निकटतम साहित्य विधा है जिसमें जीवन के जीते–जागते चित्र विविध रूपों में मिलते हैं। उपन्यासकार का अपने समाज से, उसकी समस्याओं से संबंध और जीवन के विविध चित्रों का यथार्थ चित्रण उसे परिवेश के प्रति जागरूक और संवेदनशील बनाए रखता है। उनका कथन है कि '' सबसे अधिक प्रश्न जो आज उपन्यासकार को मथता है, वह समाज से संबंध रखता है। क्या कोई उपन्यासकार इस दुनिया की समस्याओं से जिसमें कि वह रहता है, बेखबर रह सकता है? क्या वह युद्ध की तैयारियों के शोर–शराबे की ओर अपने कान बंद कर सकता है? क्या वह अपने देश की स्थिति की ओर से अपनी आंखें मूंद सकता है? क्या वह उस समय अपना मुंह बंद रख सकता है जबकि चारों ओर विभीषिका मंडरा रही हो .. ।.''(उपन्यास और लोक जीवन : रैल्फ फॉक्स,)

'आपका बंटी' उपन्यास सन् 1971 में प्रकाशित हुआ था। यह नेहरू युग के बाद का दौर था। उस समय तद्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी अपने पूरे वर्चस्व के



BHDC-109_4th proof.indd 288 8/6/2021 2:09:15 PM

साथ देश की राजनीति में मौजूद थीं। उस समय देश में शिक्षा का स्तर बढ़ रहा था। साथ ही साथ नए आर्थिक परिवर्तन भी समाज में आ रहे थे। सन् 1969 में प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने बैंकों का राष्ट्रीयकरण कर दिया था। इससे समाज में आर्थिक स्थिरता भी आ रही थी। देश समाजवादी और पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के दोहरे रास्ते पर चल रहा था। स्त्री स्वातंत्र्य और मुक्ति के विचार समाज में प्रचलन में आ रहे थे। कथाकार मन्नू भंडारी का उपन्यास 'आपका बंटी' ऐसे ही करवट लेते समय का साक्ष्य बनता है।

### 17.2.1 शहरी मध्यवर्ग की प्रामाणिक कथा

'आपका बंटी' उपन्यास की कथा शहरी मध्यवर्ग से सम्बद्ध है। इसके केंद्रीय पात्र बंटी का तीन पात्रों से करीबी संबंध है। ये पात्र हैं–बंटी की ममी, उसके पापा और ममी के दूसरे पति डॉ.जोशी। तीनों ही पात्र दो भिन्न शहरों के निवासी हैं। बंटी के पापा कलकत्ता शहर में रहते हैं जबकि उसकी ममी शकुन कलकत्ता से दूर एक अन्य शहर में उसके साथ रहती हैं। डॉ. जोशी भी ममी के शहर के ही निवासी हैं। उपन्यास, यथार्थ का चित्रण इन पात्रों के पूरे परिवेश के संदर्भ में करता है। यह सभी सुशिक्षित, संभ्रांत और नौकरीपेशा लोग हैं। कॉलेज की प्रधानाचार्य शकुन के कार्यस्थल और घर का चित्रण हो, कलकत्ता की एक कंपनी में मैनेजिंग डॉयरेक्टर का पदभार सँभालने वाले अजय की जिंदगी हो या फिर शहर में पूरे ठाठ–बाट से रहने वाले डॉ. जोशी का घर और क्लीनिक हो–इन सभी के जीवन–स्थितियों के अनेक ब्यौरे उपन्यास में हैं। इनके एकाकी परिवार, दिनचर्या, कार्यस्थल पर इनका जीवन, इनकी रुचियाँ आदि मध्यवर्गीय जिंदगी का आईना हैं।

### 17.2.2 सामाजिक रूप से प्रतिष्ठित और आर्थिक रूप से समृद्ध परिवार

उपन्यास को पढ़ने के उपरांत महानगरों में रहने वाले इन तीन एकाकी मध्यवर्गीय परिवारों की सुदृढ़ आर्थिक स्थिति, घरेलू नौकर रखने की उनकी क्षमता, रहन–सहन, खान–पान, शौक आदि का प्रामाणिक और जीवंत चित्रण पाठकों को मिलता है। इसका एक मुख्य कारण उपन्यासकार का कलकत्ता और दिल्ली जैसे महानगरों में स्वयं रहना भी रहा है। दूसरे, शकुन की भाँति ही लेखिका का कार्यस्थल भी कॉलेज है। उपन्यास के आरंभ में और अन्य स्थलों पर भी कॉलेज, स्टाफ क्वार्टर, कॉलेज की शिक्षिकाओं का चरित्र, कॉलेज की गतिविधियों का बेहद जीवंत चित्रण परिवेश को ठोस और प्रामाणिक रूप में सामने लाता है। यह चित्रण लेखिका के अपने जीवनानुभवों से और समृद्ध हुआ है। उपन्यास के आरंभ में ही बंटी, ममी के कॉलेज का एक खाका खींचता है–''वहाँ उसके और ममी के बीच में बहुत सारी चीजें आ जाती हैं। ममी का नकली चेहरा, कॉलेज, कॉलेज की बड़ी–सी बिल्डिंग, कॉलेज की ढेर सारी लड़कियाँ, कॉलेज के ढेर सारे काम! थोड़ी–थोड़ी देर में बजनेवाले घंटे, घंटा बजने पर होनेवाली हलचल.. ।'' इस तरह लेखिका ने पात्र को जिस परिवेश में रचा है वह उसके पूरे वातावरण के साथ न्याय कर पाई हैं।

उपन्यास के पात्रों का पारिवारिक, सामाजिक जीवन, उनकी जीवन–शैली और उनकी आर्थिक आत्मनिर्भरता–सम्पन्नता भी महानगरीय मध्यवर्ग की तस्वीर प्रस्तुत करती है। उदाहरण के तौर पर शकुन के डॉ. जोशी से हुए विवाह के बाद एक जलसे का दृश्य डॉ. जोशी की आर्थिक समृद्धि को सामने लाता है–'' हलकी–सी सजावट ओढ़े क्लब का लॉन। परिचित–अपरिचित चेहरों की भीड़। हंसी–मजाक, खाना–पीना। बध ाई हो...मुबारक हो... अरे बंटी, मिठाई खाओ बेटे...उस दिन सारे लॉन के पेड़–पौधों पर लाल–पीली बिजली के फूल खिले थे। न जाने कितने फूल, जिनसे रंगीन रोशनी झर रही थी। इस समय भी वह आंखें बंद करे या खोले, चारों ओर फैले हुए वे फूल झिलमिलाते नजर आ रहे थे।'' यही नहीं इन परिवारों का कंपनी बाग में घूमने जाना, मनपसंद चीजें खरीदना, घरेलू सेवकों की सेवाएँ लेना, आठवें दशक के आरंभ में परिवार



BHDC-109_4th proof.indd 289 8/6/2021 2:09:15 PM

के पास मोटर–गाड़ी का होना, बंटी के पास नए से नए खिलौने, डॉ.जोशी के नए घर के लिए मनमाफिक फर्नीचर बनवाने आदि के प्रसंग से यह ज्ञात होता है कि शकुन और डॉक्टर जोशी का परिवार सामाजिक रूप से प्रतिष्ठित और आर्थिक रूप से समृद्ध है।

बंटी के पिता अजय का कलकत्ता का जीवन और उसकी नौकरी भी उसके सामाजिक–आर्थिक स्तर को सामने लाती है। वह एक कंपनी में मैनेजिंग डॉयरेक्टर है। इस उपन्यास में पात्रों के भीतर मनोविज्ञान की दृष्टि से एक अस्थिरता अवश्य दिखाई देती है पर उनका आर्थिक–सामाजिक पक्ष बेहद स्थिर है। इनके जीवन में किसी आर्थिक अभाव का कोई चित्र उपन्यास में नहीं है। कलकत्ता में भी अजय के घर एक घरेलू नौकर मौजूद है। यही नहीं वह बंटी के हॉस्टल का महँगा खर्च वहन करने में भी सक्षम है। अजय तलाक के सिलसिले में जब शकुन के शहर आता है तब वहाँ भी वह बंटी को घुमाने ले जाता है। बंटी की मनपसंद चीजें–आइसक्रीम, चाट, गन्ने का रस आदि खिलाता–पिलाता है। कलकत्ता के बारे में अजय अनेक जानकारियाँ देता है जैसे वहाँ 'विक्टोरिया मेमोरियल, बोटेनिकल गार्डन, लेक्स, जू','बड़ा शहर, शहर की बड़ी–बड़ी इमारतें, बड़ी–बड़ी बातें' 'तेरह–चौदह तल्ले के मकान', 'हुगली में जहाज','पी. सी. सरकार का जादू' आदि कलकत्ता की पृष्ठभूमि रचते हैं। उपन्यास के अंत में जब अजय, बंटी को कलकत्ता लेकर आता है तब यह सूचनाएँ बंटी के अनुभवों से जुड़कर उसके वास्तविक जीवन का अंग बन जाती हैं। ऊँचे घर की बाल्कनी से उसका नीचे की दुनिया निहारना, बाहर की भीड़–भाड़, प्लेनेटोरियम, विक्टोरिया मेमोरियल उसकी कल्पना से निकलकर यथार्थ हो जाते हैं। कलकत्ता के चित्रण में उपन्यासकार ने बहुत सूक्ष्म ब्यौरों के साथ परिवेश को साकार किया है। 'मोशला मूड़ी...चीना बादाम। मुरमुरे की मूंगफली' या फिर 'यह कम्युनिस्टों का जुलूस है। कलकत्ता जुलूसों का शहर है।'' बंटी की आँखों से देखे शहर को पाठक भी देखता–समझता चलता है।

### 17.2.3 महानगरों में बसे गाँव–कस्बे

परिवेश का चित्रण कभी एकांगी नहीं होता। रचनाकार जब कभी कथा को एक परिवेश में रखता है तो वह परिवेश के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक पक्ष और उसके वैविध्य को भी रचता है। कथा–संरचना की दृष्टि से देखें तो यह वैविध्य जीवन, चरित्र और भाषा के स्तर पर कथा में बन रही एकरूपता को तोड़कर एक नयापन लाता है। 'आपका बंटी' उपन्यास की मूल कथा मध्यवर्ग पर केंद्रित है। यह वर्ग समृद्ध है। इसकी भाषा, विचार, जीवन–स्तर विशिष्ट हैं। सामाजिक हैसियत में भी यह लोग ऊँचे हैं। उपन्यासकार ने इनके साथ जीवन बिताने वाले निम्नवर्ग के पात्रों और उनकी स्थितियों को भी रचा है। परिवारों में काम करने वाले श्रमिक वर्ग के अनेक चित्र उपन्यास में दिखाई देते हैं। माली, फूफी, माली की बेटी, ड्राइवर आदि ऐसे अनेक किरदार भी उपन्यास में हैं। उनकी उपस्थिति गाँव–कस्बे से विस्थापित होकर शहर आए लोगों की उपस्थिति है। उनके होने से शहरों में बसे गाँव–कस्बे अपनी सांस्कृतिक धरोहर, अपनी लोक–बोली और व्यवहार संग साकार होते हैं। इस तरह परिवेश का सांस्कृतिक वैविध्य दिखाई देता है। 'आपका बंटी' उपन्यास में इन घरेलू श्रमिकों के स्वाभिमान के चित्र भी हैं और उनकी आर्थिक परनिर्भरता, उनकी गरीबी की झलक भी उपन्यास दे देता है। जैसे फूफी की बोली में स्थानीय दबाव साफ देखे जा सकते हैं– ''अरे हम नौकर आदमी, हम कइसे नाराज होंगे। पर भगवान ने जीभ दी है तो बोलेंगे जरूर। आप सौ जूता मारेंगी तो हम तनिकों चिंता नहीं करेंगे, पर बोले बिना हमसे रहा नही जाएगा।''

जहाँ स्त्रियाँ शिक्षित होकर जीवन के निर्णय स्वयं ले रही हैं वहाँ पूरा समाज अभी नहीं बदला है। वह इन आत्मनिर्भर और स्वाभिमान से जीवन बिता रही स्त्रियों को शंका से देखता है और लांछित करने के प्रयास करता है। शहर के विस्तार में व्याप्त संकीर्णताएँ भी लेखिका उजागर करती चली हैं। यहाँ एक ओर स्त्रियों को संकीर्ण दृष्टि से देखा



BHDC-109_4th proof.indd 290 8/6/2021 2:09:15 PM

जाना है तो दूसरी ओर बोली का कस्बाई प्रभाव भी सामने आता है। उदाहरण के तौर पर बंटी के हमउम्र दोस्त टीटू की अम्माँ का शकुन के विवाह के संदर्भ में यह कहना है–'' पहले जब, डॉक्टर साहब को एक–दो बार देखा तो सोचा कोई बीमार होगा! पर जब बंटी ने बताया कोई बीमार नहीं है तो सोचा भई आते होंगे!...मेरी तो भैनजी, आप जानो दूसरों के घरों में ताक–झांक करने की आदत ही नहीं है। बस पड़ोस में रहते हैं तो दीखता तो सभी कुछ है, पर इधर–उधर कुछ पूछताछ करूं, कुछ कहूं–सुनूं ऐसा मेरा स्वभाव ही नहीं। फिर आप पढ़ी–लिखी ठहरीं, प्रिंसीपल ठहरीं.... ।'' इस तरह अम्माँ की बोली में जबरन पैदा की गई नरमी भी उनके भीतर शकुन को लेकर बनी शंका और घृणा को व्यक्त किए बगैर नहीं रह पाती।

इस प्रकार 'आपका बंटी' बड़े शहरों में जीवन बिताने वाले मध्यवर्गीय परिवारों के समूचे परिवेश को प्रस्तुत करता है। शहर का भूगोल, लोगों की रुचियाँ, उनकी आर्थिक–सामाजिक स्थितियाँ, उनकी भाषा–बोली का प्रभाव, उनके विचार और आचरण से परिवेश पूरी प्रामाणिकता के साथ उपन्यास में दर्ज हुआ है।

**बोध प्रश्न 1**

1. उचित शब्दों द्वारा रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिएः
   क) बंटी के पिता एक कंपनी में ..... थे।
   ख) परिवेश का चित्रण कभी .....नहीं होता।
   ग) 'आपका बंटी' की कथा शहरी.....से संबंधित है।
   घ) 'आपका बंटी' सन्.....में प्रकाशित हुआ।
2. 'आपका बंटी' की परिवेशजन्य विशेषताएँ लगभग 7 पंक्तियों में बताइए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

## 17.3 उपन्यास का संरचना–शिल्प

उपन्यास के संदर्भ में संरचना–शिल्प की बात की जाए तो संरचना को हम उपन्यास की कथा का आंतरिक गठन कह सकते हैं। आलोचक नामवर सिंह का कहना है–''उपन्यास की संरचना का विषय से अनिवार्य संबंध होता है। विषय से अलग संरचना की कल्पना असंभव है। उसका अस्तित्व ही विषय सापेक्ष होता है।'' 'आपका बंटी' उपन्यास की कथा संरचना में मध्यवर्गीय परिवार की स्थितियों, घटनाओं को उपन्यास के केंद्रीय पात्रों–बंटी और शकुन के संदर्भ में पिरोया गया है। कथा का अंकन या तो शकुन के दृष्टिकोण से किया गया है या फिर बंटी के दृष्टिकोण से। इस तरह उपन्यास का नरेटर सर्वव्यापी है। वो सामाजिक परिवेश को भी देख रहा है और मनोभावों को भी पढ़ रहा है। जीवन में घटित घटनाओं का प्रभाव किस कदर बंटी के जीवन को अस्त–व्यस्त कर देता है, यही कारण–कार्य शृंखला उपन्यास की संरचना का आधार है। उपन्यास का कथानक इसी आधार पर निर्मित होता है। अजय और शकुन का सात वर्षीय अलगाव



BHDC-109_4th proof.indd 291 8/6/2021 2:09:15 PM

और अंततः तलाक फिर शकुन का दूसरा विवाह–देखा जाए तो उपन्यास में यही दो घटनाएँ प्रधान हैं। इन घटनाओं को एक नौ वर्षीय बालक किस रूप में अनुभव करता है, उनका पुरजोर विरोध करता है या अंततः अकेलेपन और निराशा में परिस्थितियों के समक्ष समपर्ण कर देता है।

कथा में अंतर्वस्तु और रूप का अन्योन्याश्रित संबंध है। अपनी किताब 'कला की ज़रूरत' में अंर्स्ट फिशर बड़े ही तर्कपूर्ण ढंग से इस प्रश्न पर विचार करते हुए रूप और अंतर्वस्तु को बदले हुए समाज से प्रभावित मानते हैं। इस संदर्भ में उनका कहना है कि परिस्थितियों का बदलाव अंतर्वस्तु को गहरे तौर पर प्रभावित करता है और बदली परिस्थितियों की संवाहक अंतर्वस्तु अपने साथ बदला हुआ रूप भी लेकर आती है। अंर्स्ट फिशर का मानना है–'' विषय को अंतर्वस्तु के स्तर तक उठाकर ले जाने वाली चीज है कलाकार का रवैया; क्योंकि अंतर्वस्तु केवल यह नहीं है कि क्या प्रस्तुत किया गया है; उसको कैसे प्रस्तुत किया गया है; किस दर्जे की सामाजिक तथा व्यक्तिगत चेतना के साथ प्रस्तुत किया गया है; यह भी अंतर्वस्तु ही है।'' (कला की जरूरत : अंर्स्ट फिशर) कथा का आंतरिक संगठन जिस प्रकार का होगा उसका शिल्प भी उसी रूप में आकार लेगा। इस तरह रचना में वस्तु और रूप का एक–दूसरे से गहरा नाता होता है। उपन्यास की भाषा, शैली, संवाद सभी अंतर्वस्तु से गहरे तौर पर संबंधित हैं।

### 17.3.1 उपन्यास की भाषा

आलोचक रामस्वरूप चतुर्वेदी का उपन्यास की भाषा के संदर्भ में मानना है कि ''उपन्यास में भाषा प्रयोग की दुहरी समस्या है। एक तो गद्य की सामान्य प्रकृति के हिसाब से उसे वर्णन करना है, और दूसरा, उससे अधिक मुश्किल काम है सूक्ष्म और जटिल अनुभव को संप्रेषित करना। भाषा के इस दुहरे धर्म को निबाहने में उपन्यासकार का मुख्य कृतिकर्म निहित है।'' इस आधार पर देखा जाए तो उपन्यास में लेखक–पाठक के बीच पुल बनाने में भाषा के दोहरे दायित्व का बोध होता है। एक दायित्व उपन्यास में देश, समय और समाज को रचता है तो दूसरा जटिल दायित्व समय में आकार लेते चरित्रों का यथार्थ चित्रण करते हुए उनके अंतर्द्वंद्व, विरोधाभासों के साथ परिस्थितियों की प्रतिक्रिया में उनके मर्म पर पड़े प्रभाव और उसके फलस्वरूप उभरते चिंतन के बिंदुओं से पाठक का साक्षात्कार कराना भी होता है। इस दोहरे दायित्व का वहन 'आपका बंटी' उपन्यास भी करता है।

'आपका बंटी' उपन्यास की भाषा सहज और बोलचाल की भाषा है। उपन्यास कलात्मक चमत्कारों के फेर में पड़े बिना अपनी सहजता में बेहद पठनीय है। उपन्यासकार की भाषा पाठक के लिए कोई समस्या पैदा नहीं करती। वह सहज–सामान्य भाषा है परंतु इसका अभिप्राय यह कदापि नहीं कि उपन्यास की भाषा कलात्मक नहीं है। मन्नू भंडारी की कथा–भाषा में सहजता के साथ कलात्मकता और जीवंत चित्रण से पैदा हुई रोचकता का गुण विद्यमान है। रचना के रूप में किसी भी प्रकार की कृत्रिमता या चमत्कार पैदा करना लेखिका का मंतव्य नहीं रहा है। इस सोद्देश्य उपन्यास की भाषा में एक ओर यदि विपुल शब्द–भंडार हैं तो दूसरी ओर भाषा की अर्थवत्ता बढ़ाने वाले मुहावरे भी हैं। जीवन–दर्शन बताने वाली निष्कर्षात्मक सूक्तियाँ हैं। विषय–वस्तु और पात्र के अनुरूप चुस्त और गहरे संवाद हैं। यही नहीं चरित्रों की मनःस्थिति सामने लाने वाले एकालाप भी हैं। उपन्यास अनेक स्थलों पर निजी यथार्थ के अंकन में किरदारों के अवचेतन की पर्तों को खोलता चलता है। अवचेतन में चल रही उधेड़बुन को उपन्यासकार ने विविध प्रतीकों और बिंबधर्मी वैशिष्ट्य के साथ व्यक्त किया है।

### 17.3.2 शब्द–भंडार

उपन्यास अपनी अंतर्वस्तु के आधार पर ही अपने रूप और भाषा को लेकर आया है। इसका रचना–समय आधुनिक है, परिवेश महानगरीय है और उसमें भी स्थल विशेष अधिकांशतः



BHDC-109_4th proof.indd 292 8/6/2021 2:09:15 PM

बौद्धिक उर्वरा से सम्पन्न है। चाहे वह शहर के किसी कॉलेज का परिसर हो, डॉक्टर की कोठी, उसका क्लीनिक हो या फिर कलकत्ता शहर। दूसरे, उपन्यास के पात्र अपनी वर्गीय पृष्ठभूमि से भी भाषा के भिन्न आस्वाद को प्रकट करते हैं। मसलन फूफी, माली, नौकर, ड्राइवर आदि श्रमिक वर्ग की भाषा पर उनकी स्थानीयता के दबाव साफ दिखाई देते हैं। एक तरफ डॉक्टर की नफासत से भरी भाषा तो दूसरी तरफ टीटू की अम्माँ का भाषाई अक्खड़पन, भाषा के दो विपरीत ध्रुव हैं। भाषा के यह अलग आस्वाद उसे जीवंत बनाते हैं। इसके कारण उपन्यास में शब्द–भंडार की विपुलता है। यहाँ अंग्रेजी, संस्कृत, उर्दू, अरबी–फारसी, देशज शब्दों के साथ बोलियों की सहज घुलावट देखी जा सकती है। उदाहरण के तौर पर इन शब्दों को देखें–

एडमिशन, एबनॉर्मल, हॉस्टल, पेंटिग्स टाइम, व्यूमास्टर, ग्लोब, मैकेनो, स्टार्ट, प्रॉमिस, निस्पंद, व्याघात, कौतूहल, संकुचित, गंध, आक्रोश, इंकलाब–ज़िंदाबाद, सुर्ख, कचहरी–तारीख, दहशत, मजबूरन, सख्त, ताज़ी, बहस, हिम्मत, गुनाह, भद्द, ढीठ, ताप चौखट, धत्तेरे की, इतराना, करौंदे, तरकारी, खडाऊं, बिफरना, चौलबे (बंगाली) आदि अनेक भाषाओं–बोलियों के शब्दों का प्रयोग उपन्यास में है।

उपन्यास के चरित्र–अजय, शकुन और डॉक्टर जोशी आधुनिक जीवन–शैली के, पढ़े–लिखे, नौकरीपेशा चरित्र हैं। आर्थिक रूप से सशक्त और समाज में प्रतिष्ठित। उपन्यास में इनके काम और जीवन में अंग्रेजी भाषा का सहज प्रयोग न सिर्फ शब्दों में अपितु वाक्यों में भी दिखाई देता है। पूरे उपन्यास में अंग्रेजी भाषा के वाक्य सहजता से चले आते हैं।

### मुहावरे, लय, प्रतीक, बोली का प्रभाव, बिंबधर्मिता, हास्य

आलोचक गोपाल राय ने 'आपका बंटी' उपन्यास की भाषा के विषय में लिखा है–''प्रत्येक अवलोकन बिंदु के अनुरूप भाषा में परिवर्तन तथा प्रतीकों, बिंबों, व्यंजना और लयात्मकता के आधार के कारण भाषा में अद्भुत सर्जनात्मकता पैदा की गयी है।'' यहाँ लय से अभिप्राय भाषा की अर्थलय है। गद्य में काव्यात्मक तरलता भी उपन्यास के कई अंशों में दिखाई देती है।

'आपका बंटी' में भाषायी लयात्मकता के उदाहरणस्वरूप यह दो अंश देखे जा सकते हैं–

''वकील चाचा जब भी आते हैं, एक बार वह पूरी तरह मथ जाती है। बाहर से तो तब भी कुछ घटित नहीं होता, एक पत्ता तक नहीं हिलता, पर मन के भीतर ही भीतर उसे जाने कितने आंधी–तूफानों को झेलना पड़ता है।'' इस अंश में बाह्य प्रकृति का तादात्म्य लेखिका ने शकुन की मनःस्थिति से कराया है। एक अन्य अंश की भाषा में कविता सरीखा प्रभाव दिखाई देता है–

''पर कैसा है यह छोर? न प्रकाश, न खुलापन, न मुक्ति का एहसास,। लगता है जैसे इस सुरंग ने उसे एक दूसरी सुरंग के मुहाने पर छोड़ दिया है–फिर एक और यात्रा, वैसा ही अंधकार, वैसा ही अकेलापन।''

उपन्यास या कहानी में चरित्रों का वर्ग और वर्गीय अभिरुचियाँ भी भाषा के माध्यम से प्रकट होती हैं। 'आपका बंटी' में जहाँ एक ओर उच्च वर्ग के अनुरूप भाषायी संस्कार दिखाई देते हैं वहाँ दूसरी ओर स्थानीय और निम्न वर्ग के चरित्रों की बोली उनके वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है। वर्गीय दृष्टि से भाषा का यह अंतर उपन्यास में साफ दिखाई देता है। फूफी, अम्माँ , माली, ड्राइवर और उसकी लड़की की बोली को इस रूप में देखा जा सकता है। जैसे ड्राइवर की लड़की का यह कहना–''भोत जोर का ताप चढ़ा है, सीत देकर। वे तो गुदड़े ओढ़कर पड़े हैं, मुझे इत्तिला देने को भेजा है।'' इस भाषायी गठन में ड्राइवर की लड़की की बोली उसकी वर्गीय पृष्ठभूमि को बताती है।



BHDC-109_4th proof.indd 293 8/6/2021 2:09:15 PM

उपन्यासकार ने भाषा में मुहावरों का सटीक प्रयोग किया है। इनसे भाषा में रवानगी का गुण आ गया है। उत्साह ठंडा पड़ना, तिलमिलाना, घुटने टेकना, ताव आना, गला भिंचना, जहर घोलना, मिट्टी पलीद होना जैसे अनेक मुहावरे भाषा की शक्ति हैं और उसकी अर्थवत्ता को बढ़ाते हैं।

उपन्यास में हास्य की स्थितियाँ कम ही बन पाई हैं। दरअसल पूरी कथा सघन तनावों से गुजरती है ऐसे में हास्य की गुंजाइश कम रहती है। फिर भी कुछ स्थलों पर हास्य की स्थितियाँ देखी जा सकती हैं। उपन्यास में हास्य का उदाहरण हम बंटी–फूफी से जुड़े इन अंशों में देख सकते हैं–''फूफी ,बुलाकी राक्षस की जान तोते की टांग में बसती थी, तेरी जान इस रसोई में बसती है।'' या फिर –''बरसो राम धड़ाके से, फूफी मर गई फाके से.. ।.''

शकुन, फूफी, टीटू की अम्माँ के संवादों में तानाकशी भी देखी जा सकती है। शकुन के एकालाप में अजय के व्यवहार पर अप्रत्यक्ष तानाकशी है तो बंटी के संवादों में शकुन और डॉ. जोशी पर तानाकशी का सीधा हमला है। इसी तरह टीटू की अम्माँ बंटी और शकुन पर गाहे–बगाहे ताने कसती हैं। उदाहरण के तौर पर–''आ गए बंटी। छुट्टी के दिन तो तुम्हारा सूरज भी इसी घर में उगता है और इसी घर में डूबता है।'' जहाँ टीटू की अम्माँ के ताने महीन तंतु से बने हैं वहाँ बंटी के तानों में क्रोध अधिक है।

भाषा अनेक बार चरित्र की मानसिकता और पूर्वाग्रहों की द्योतक भी होती है। यों तो 'आपका बंटी' की कथा में यह आद्योपांत देखा जा सकता है पर शांत से रहने वाले अजय के एक कथन से ही आर्थिक और सामाजिक हैसियत में कमतर तांगेवाले के प्रति उसका नजरिया साफ उजागर होता है–''यू शट अप! जबान संभालकर बात करो। जितना रहम खाओ उतना ही सिर पर चढ़े जा रहे हैं, जूते की नोक पर ही ठीक रहते हैं ये लोग.. ।.''

कथा में वर्णन करते समय अनेक बिंबधर्मी प्रयोग उपन्यासकार ने किए हैं। बिंब इंद्रिय संवेदन से जुड़े हैं। चाक्षुष या दृश्य बिंब, ध्वनि बिंब, गंध बिंब, आस्वाद और स्पर्श बिंब के उदाहरण पूरे उपन्यास में बिखरे हुए हैं। उदाहरण के लिए यह अंश–''उसका तुलसी का चबूतरा, तार के एक कोने पर सूखती मटमैली–सी धोती और चोगे जैसा ब्लाउज। आंगन की दीवार में बनी ताक पर रखे, सिंदूर से रंगे–पुते उसके हनुमान जी...उसके सरोते की खट–खट, उसके पसीने की गंध...उसके बेसुरे गले से निकले गीत की कड़ियां...उसकी कहानियों के राजा–रानी, भूत, जादूगर–राक्षस सबकुछ, इस तरह समाया हुआ है इस घर में कि यहाँ से वह जा ही नहीं सकती।'' यहाँ तुलसी का चबूतरा, तार पर लटकती धोती, चोगे जैसा ब्लाउज, हनुमान जी की मूर्ति जहाँ चाक्षुष या दृश्य बिंब हैं वहीं सरोते की खट–खट और गीत की कड़ियाँ ध्वनि बिंब रचते हैं। इसके अतिरिक्त अन्य कई स्थलों पर भी ध्वनि बिंब देखे जा सकते हैं–''लो, पापा की तो नाक भी बजने लगी–घुर्रऽऽऽ खूं, घुर्रऽऽऽ खूं'' ।

### 17.3.3 उपन्यास की शैली

फ्रांसीसी उपन्यासकार स्तान्ढाल ने शैली को रचना का गुण मानते हुए कहा हैं – ''शैली का अस्तित्व इसमें निहित है कि दिये हुए विचार के साथ उन सब परिस्थितियों को जोड़ दिया जाय, जो कि उस विचार के अभिमत प्रभाव को सम्पूर्णता में उत्पन्न करनेवाली है।'' बर्नार्ड शा का कहना है– ''प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति ही शैली का अथ और इति है।'' (हिंदी साहित्य कोश भाग–1 सम्पादक धीरेंद्र वर्मा) इस प्रकार शैली किसी भी रचना का महत्त्वपूर्ण अंग है और यह रचना के मूल विचार की प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति भी है। कृति के संरचना–शिल्प का अभिन्न हिस्सा है। शैली के आधार पर देखें तो ऐतिहासिक शैली,



BHDC-109_4th proof.indd 294 8/6/2021 2:09:15 PM

आत्मकथात्मक शैली, डायरी शैली, जीवनी शैली, वर्णनात्मक शैली, मनोविश्लेषणात्मक शैली, पत्र शैली, व्यंग्य शैली आदि उपन्यास की भिन्न शैलियाँ हैं। कोई उपन्यास किसी एक शैली पर केंद्रित होकर भी रचा जा सकता है और किसी उपन्यास में एकाधिक शैलियों का समावेश भी रहता है। हिंदी के चुनिंदा उपन्यासों को देखें तो 'बाणभट्ट की आत्मकथा' हजारीप्रसाद द्विवेदी का आत्मकथा शैली में लिखा उपन्यास है वहीं यदि हम अज्ञेय के 'शेखर : एक जीवनी उपन्यास' को देखें तो वह जीवनी शैली में लिखा गया है। इसी तरह यदि श्रेष्ठ रूसी कथाकार लेव तॉल्सतॉय के उपन्यासों 'अन्ना कारेनिना', 'पुनरुत्थान' आदि को पढ़ें तो हम पाएँगे इसमें कुलीनों और किसानों के जीवन प्रसंगों के अनेक वर्णन हमें मिलते हैं। किसानी जीवन के अनेक दृश्य अपने सूक्ष्म ब्यौरों के साथ इस वर्णनात्मकता शैली को रचते हैं। यहाँ एक और बात सामने आती है रचना के विचार के साथ उसका रूपाकार शैली को आकार देते हैं।

'आपका बंटी' उपन्यास अपने प्रमुख किरदारों–बंटी और शकुन के जीवन की हलचलों के बीच उनकी मनःस्थितियों को रचता है। इसलिए यह उपन्यास कई बार इन प्रमुख चरित्रों के संदर्भ में आत्मकथात्मक शैली के करीब भी जान पड़ता है। इस उपन्यास में वर्णनात्मक शैली का प्रयोग सर्वाधिक मिलता है। अपने पात्रों को उनकी विशिष्ट परिस्थितियों में संघर्षरत दिखाने के क्रम में उपन्यासकार ने भूगोल, समय, परिवर्तनकारी घटनाओं और परिस्थितियों को पाठक के सामने लाने के लिए वर्णन के कौशल को शैली का अंग बनाया है। उपन्यास में बंटी के अकेलेपन को व्यक्त करने के लिए आरंभ में ही उपन्यासकार ने उसकी ममी के कॉलेज जाने पर अकेले रह गए बंटी की स्थिति समझाने के लिए वर्णनात्मक शैली का सहारा लिया है– ''थोड़ी देर तक बंटी गेट पर खड़े–खड़े आने–जानेवालों को यों ही देखता रहा। फिर लोहे के फाटक पर झूलने लगा। सामने से दो लड़के साइकिल पर बातें करते हुए गुजर गए तो उसने सोचा, थोड़ा और बड़ा हो जाएगा तो वह भी दो पहिए की साइकिल खरीदेगा। वह जानता है, ममी उसे कभी बाहर निकलकर साइकिल नहीं चलाने देंगी। जाने क्यों, उन्हें हमेशा यही डर लगा रहता है कि वह बाहर निकला और एक्सीडेंट हुआ। हुंह! वह जरूर बाहर चलाएगा। पुलिया पर जब बिना पैडिल मारे ही फर्राटे से साइकिल उतरती है तो कैसा मजा आता होगा?''

उपन्यास अपनी वर्णनात्मक शैली में कई बार प्रतीकों के माध्यम से स्थितियों को स्पष्ट करता चलता है। फूफी द्वारा बच्चों की हत्या करने वाली सौतेली माँ, सोनल राजकुमारी की कहानी बंटी को सुनाना प्रतीकार्थ रखता है। सौतेली माँ का भय बंटी में बैठ जाता है। इसी तरह डॉक्टर जोशी के क्लीनिक पर निरोध का चिन्ह देखकर बंटी तीसरे अवांछित बच्चे के रूप में अपनी कल्पना करता है। यहाँ यह चिन्ह बंटी की स्थिति का प्रतीकार्थ रखता है। बंटी बार–बार उस चिन्ह और उसके साथ दो बच्चों के स्लोगन को देखकर जोत और अमित के साथ स्वयं को फालतू समझने लगता है। डॉ. जोशी द्वारा ममी को भेंट की गई इत्र की शीशी भी बंटी को ममी में आ रहे नए परिवर्तनों की सूचक लगती है। इत्र की शीशी ममी की बंटी से दूरी को लक्षित करने वाला प्रतीक है जिससे बंटी आतंकित रहता है।

'आपका बंटी' उपन्यास में व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग भी मिलता है। व्यंग्य, भाषा का धारदार हथियार है। चरित्रों, स्थितियों आदि की विसंगति, विडम्बना और विद्रूपता को व्यंग्य के माध्यम से रचनाकार रचता है। हिंदी साहित्य में हरिशंकर परसाई, श्रीलाल शुक्ल, शरद जोशी, ज्ञान चतुर्वेदी आदि के नाम व्यंग्य–लेखन में प्रमुख हैं। चाहे परसाई की कहानी 'भोलाराम का जीव' हो, श्रीलाल शुक्ल का उपन्यास 'रागदरबारी', शरदजोशी का 'जीप पर सवार इल्लियां' या फिर ज्ञान चतुर्वेदी का उपन्यास 'नरक–यात्रा'–इन सभी में मौजूदा समाज और समय की विसंगतियों पर रचनाकार की पैनी नजर रही



BHDC-109_4th proof.indd 295 8/6/2021 2:09:15 PM

है। व्यंग्य का मूलाधार करुणा है। 'आपका बंटी' उपन्यास में व्यंग्यात्मक शैली का गुण अनेक स्थलों पर देखा जा सकता है। बंटी, शकुन, फूफी के संवादों में व्यंग्य की धार देखी जा सकती है। खासतौर पर फूफी और शगुन के संवादों में जब फूफी बंटी की हितैषी बनकर शगुन के दूसरे विवाह पर आपत्ति करती हैं, वह पूरा प्रसंग भाषा की धारदार अभिव्यक्ति के साथ बेहद मार्मिक प्रसंग है।

## 17.4 उपन्यास की संवाद–योजना और उसका महत्त्व

कथा और नाटक की शक्ति उसके संवाद होते हैं। जहाँ संवाद/पात्रों की आपसी बातचीत से कहानी में गति और नाटकीयता का गुण आता है वहाँ इन संवादों से किसी समस्या/घटना पर पात्रों के विविध विचारों को भी जाना जा सकता है। कथा में रोचकता, मार्मिकता, हास्य, पात्र का परिवेश, उसकी मनःस्थिति को स्पष्ट करने का सार्थक शैल्पिक तरीका संवाद हैं। संवाद जहाँ दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच घटित होते हैं वहाँ एकालाप एक व्यक्ति की स्वयं से की गई बातचीत है। जिसका वक्ता भी वही है और श्रोता भी वही। लेखक कथा के उद्देश्य को भी कई बार पात्रों के संवादों के माध्यम से व्यक्त करता है। कथा–सम्राट प्रेमचंद ने कथा में संवादधर्मिता की विशेषता उजागर करते हुए लिखा था–''वार्तालाप केवल रस्मी नहीं होना चाहिए। प्रत्येक वाक्य जो किसी चरित्र के मुंह से निकले उसके मनोभाव और चरित्र पर कुछ न कुछ प्रकाश डालना चाहिए बातचीत का स्वाभाविक, परिस्थितियों के अनुकूल सरल और सूक्ष्म होना जरूरी है।'' (साहित्य का उद्देश्य : प्रेमचंद, पृ. 75)

'आपका बंटी' उपन्यास में संवाद, कथा का सबल पक्ष हैं। विशेष बात यह है कि संवाद और एकालाप कथा में साथ–साथ चलते हैं। अनेक स्थलों पर जहाँ पात्र के अवचेतन के भीतर चल रही उथल–पुथल को आपको जानना है, वहाँ यह एकालाप सहायक हैं। बंटी और शकुन दोनों ही पात्रों को जितना हम अन्य पात्रों के साथ उनके संवाद से नहीं जान पाते उससे कहीं अधिक हम उनकी स्वयं से की गई बातचीत और परिस्थितियों के विश्लेषण से जान पाते हैं। उदाहरण के तौर पर शकुन के एकालाप से उसके मनोभावों को समझा जा सकता है और उसकी व्यथित मनःस्थिति का विश्लेषण किया जा सकता है।

### 17.4.1 एकालाप

'आपका बंटी' उपन्यास के एकालाप चरित्रों के मानसिक द्वंद्व और उनकी चारित्रिक विशेषताओं को उजागर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं –''सारी जिंदगी अजय शकुन को, शकुन के हर काम और बात को, उसके सोचने और उसके हर रवैये को गलत ही तो सिद्ध करता रहा है। शकुन बहुत स्वतंत्र है। शकुन बहुत डॉमिनेटिंग है, शकुन यह है, शकुन वह है...पता नहीं गलत कौन था? वह या अजय...जो भी हो, पर सात साल तक गलत होने के अपराध बोध को उसने किसी न किसी स्तर पर हर दिन ही झेला है।

और अब यह बंटी...ठीक उसी तरह उसे गलत और अपराधी सिद्ध करने पर तुला हुआ है। और शायद सारी जिंदगी उसे गलत ही सिद्ध करता रहेगा। ठीक उसी तरह, जैसे...

पर नहीं, अब वह सब कुछ पहले की तरह अपने ऊपर ओढ़ती नहीं चली जाएगी।''

इस एकालाप में शकुन के मन के द्वंद्व को रचनाकार ने अभिव्यक्त किया है। वह बेटे में उसके पिता की छाया से परेशान और सावधान होती है।

उपन्यास में बंटी के अवचेतन में चल रही दुविधाएँ, उसकी तमाम परेशानियाँ और उन परेशानियों के अपने अनुसार खोजे गए बंटी के समाधान भी उसके एकालाप से व्यक्त



BHDC-109_4th proof.indd 296 8/6/2021 2:09:15 PM

होते हैं। एक बच्चा अपने तनावों से किस प्रकार मुक्त होने का रास्ता खोजता है, उसका एकालाप इसे प्रकट करता है–

''पर तभी सारे गुस्से और दुख को ठेलती हुई समझदारी आई–ममी प्रिंसीपल हैं, कितने जरूरी–जरूरी काम उनको रहते हैं, उसे इस तरह गुस्सा नहीं होना चाहिए। कुछ नहीं, दो महीने से ममी सारे दिन घर जो रहती थीं, सो वह कॉलेज की, कॉलेज के काम की बात भूल ही गया था इसीलिए तो गुस्सा भी आ गया वरना तो इसमें गुस्से की कोई बात ही नहीं है। कॉलेज खुल गया है तो कॉलेज का काम भी होगा ही। टीटू के पापा नहीं, ऑफिस की फाइलें लेकर घर में बैठे रहते हैं। फिर उसके कमरे में कोई घुस तो जाए, देखें? ऐसा फटकारते हैं कि बस! ममी ने तो कितने प्यार से कहा।''

## 17.4.2 जीवतंता का गुण

उपन्यास में संवाद का एक महत्त्वपूर्ण गुण जीवतंता है। संवाद इतने सहज लगें मानो कथा सिनेमा की तरह पाठक के समक्ष पूरी प्रामाणिकता के साथ दृश्यों में घटित हो रही हो। संवाद अनेक स्थलों पर कथा में पूरा दृश्य आँखों के समक्ष रच देने वाले और बंटी के उत्साह को प्रकट करने वाले भी हैं। फूफी–बंटी के अनेक संवाद कथा में बहुत जीवंत संवाद हैं। उदाहरणार्थ–

''मैं सब देख लूँगा ममी, तुम जाओ। चपरासी क्या करेगा, मैं मदद करवा दूंगा फूफी की।''

''मेरा राजा बेटा!'' ममी ने प्यार से गाल थपथपाया और चली गई।

''बताओ फूफी क्या करना है?''

'एल्ले, अभी से क्या करना है? कुछ नहीं, जाओ खेलो! घर तो साफ कर लूं पहले।''

ममी की टीचर्स की पार्टी है। 'आज तो बहुत काम करना है' के भाव से बंटी सफाई में जुट गया। कपड़ा लेकर टेबुल–कुर्सी पोंछ डाली। अपनी बुद्धि के हिसाब से जितनी साज–सज्जा कर सकता था, वह भी कर दी।

''अरे, तुम इतने समझदार कइसे हो गए, बंटी भइया। आजकल न जिद करते, न झगड़ा करते, न रोते। कहां से आ गई इतनी अक्किल तुम में?''

''आएगी क्यों नहीं? अब क्या मैं बच्चा हूं?''

बंटी–फूफी के संवादों के साथ, टीटू–बंटी संवाद, ममी–बंटी संवाद भी कथा के जीवंत संवादों का हिस्सा हैं।

## 17.4.3 रोचक और तंज़ कसते संवाद

भाषा में व्यंजना के माध्यम से चरित्रों पर तंज कसते संवाद जहाँ एक ओर कथा की रोचकता को बढ़ाते हैं, कहानी का विकास करते हैं, चरित्र भीतर क्या सोच रहा है और प्रत्यक्ष कैसा व्यवहार कर रहा है–इस अंतर को भी सामने लाते हैं। 'आपका बंटी' में शकुन के पड़ोसी और बंटी के दोस्त टीटू की अम्माँ को बंटी का परिवार फूटी आँख नहीं सुहाता। वह शकुन के दूसरे विवाह की मिठाई खाने पहुँच जाती हैं। शकुन–अम्माँ का यह संवाद चरित्र की कई परतें खोलता है–

''मेरी तो भैनजी, आप जानो दूसरों के घरों में ताक–झांक करने की आदत ही नहीं है। अब पड़ोस में रहते हैं तो दीखता तो सभी कुछ है, पर इधर–उधर कुछ पूछताछ करूं, कुछ कहूं–सुनूं ऐसा मेरा स्वभाव ही नहीं। फिर आप पढ़ी–लिखी ठहरीं, प्रिंसीपल ठहरीं, सो तरह–तरह के लोग आएँगे ही आपके पास।'' ममी तो जैसे बुत बन गईं।

''बंटी तो बहुत खुश होगा! बेचारा अकेला डांव–डांव डोला करे था। मुझे तो सच बड़ा तरस आता था। अब पापा भी मिल जाएंगे और भाई–बहन भी...'' ।



BHDC-109_4th proof.indd 297 8/6/2021 2:09:15 PM

### 17.4.4 संवाद और एकालाप के सामंजस्य की कला

'आपका बंटी' के संवादों की एक अन्य प्रभावशाली विशेषता यह भी है कि इस उपन्यास में बंटी से किए गए लोगों के संवादों का वह प्रत्यक्ष रूप में कई बार जवाब न देते हुए भी अपने मन में उसी समय जवाब देता चलता है। बंटी–ममी, बंटी–पापा, बंटी–डॉक्टर जोशी के संवादों में यह विशेषता देखी जा सकती है। इसी के कारण हम बंटी के मन के भीतर के सच से परिचित होकर उसके अवचेतन में चल रही प्रतिक्रियाओं को बेहतर रूप में समझ पाते हैं। उदाहरण के तौर पर बंटी–शकुन के संवाद में शकुन की बात का जवाब बंटी प्रकट रूप में नहीं देता। मुख से मौन और मन से मुखर इस संवाद और एकालाप की बुनावट देखिए–

''क्यों पागलपन कर रहा है बेटे? देख, ये दोनों भी तो हैं, मुझे तंग करने में, सबके बीच शर्मिंदा करने में तुझे खास ही सुख मिलने लगा है आजकल।'' (शकुन की इस बात का प्रत्यक्ष उत्तर न देकर बंटी मन में उसका पूरा जवाब देता है।)

हां मिलता है सुख...जरूर करूंगा शर्मिंदा। तुम नहीं कर रही हो मुझे शर्मिंदा? यहां दूसरों के घर लाकर पटक दिया। 'अपना घर होगा', कोई नहीं है अपना घर? मैं नहीं रहता किसी के घर...पहले तो कमरा पसंद करो और फिर ...कितनी बातें हैं, जो फूटी पड़ रही हैं। बंटी चाहता भी है कि सब कह दे कितने दिन हो गए उसने कुछ कहा ही नहीं। आज कल तो वह सिर्फ सुनता है और मान लेता है, पर आज नहीं।''

संवाद और एकालाप का यह अद्‌भुत सामंजस्य इन पंक्तियों में है। शकुन की लाचारी और बंटी के अनकहे आक्रोश से रचा यह भावपूर्ण संवाद और एकालाप का समन्वय है।

**बोध प्रश्न 2**

3. लगभग 5–5 पंक्तियों में उत्तर दीजिए–

   1. 'आपका बंटी' उपन्यास की भाषायी विशेषताएँ बताइए।

      .....

      .....

      .....

      .....

      .....

   2. 'आपका बंटी' उपन्यास के संवाद कितने प्रकार के हैं?

      .....

      .....

      .....

      .....

      .....

   3. 'आपका बंटी' में आए संवादों का महत्व बताइए।

      .....

      .....

      .....

      .....

      .....



BHDC-109_4th proof.indd 298 8/6/2021 2:09:16 PM

4. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिएः

   क) बंटी के एकमात्र दोस्त का नाम ..... है।

   ख) बंटी की मां शकुन पेशे से ..... है।

   ग) डॉक्टर जोशी के बच्चों का नाम ..... और ..... है।

   घ) कॉलेज का स्टाफ क्वार्टर छोड़ने के बाद फूफी ..... चली गईं।

5. लगभग 4–4 पंक्तियों में उत्तर दीजिए–

   1. टीटू की अम्मा की बोली में शकुन के प्रति तल्खी क्यों थी?

      .....

      .....

      .....

      .....

   2. 'आपका बंटी' उपन्यास की परिवेशजन्य विशेषताओं को बताइए।

      .....

      .....

      .....

      .....

   3. 'आपका बंटी' उपन्यास का शैलीगत वैशिष्ट्य बताइए।

      .....

      .....

      .....

      .....

## 17.5 सारांश

इस इकाई में उपन्यासकार मन्नू भंडारी के उपन्यास 'आपका बंटी' के परिवेश को विस्तारपूर्वक समझाया गया है। मध्यवर्गीय पात्रों के शहरी परिवेश के साथ उपन्यास में ग्रामीण, कस्बाई अन्य पात्रों के माध्यम से परिवेश के सांस्कृतिक वैविध्य को भी समझाया गया है। इसी इकाई के अंतर्गत 'आपका बंटी' उपन्यास के संरचना–शिल्प से आशय और उपन्यास में इसके वैशिष्ट्य को उजागर करने वाले मुख्य बिंदुओं को उदाहरण सहित बताया गया है। उपन्यास की अंतर्वस्तु और उसके रूप के सह–संबंध की चर्चा के साथ उपन्यास के रूप पक्ष में भाषा का विस्तृत विश्लेषण भी हमने किया है। भाषा के विभिन्न उपादानों–शब्द–भंडार, मुहावरे, हास्य–तानाकशी, लय, शैली, प्रतीक और बिंब को अनेक उदाहरणों सहित स्पष्ट किया गया है। इसी क्रम में उपन्यास के संवादों के प्रकार और संवादों की विशिष्टता को भी पात्रों के संदर्भ में समझा जा सकता है।

## 17.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. क) मैनेजिंग डायरेक्टर; ख) एकांगी; ग) मध्यवर्ग; घ. 1971
2. उत्तर के लिए देखिए 17.2



BHDC-109_4th proof.indd 299 8/6/2021 2:09:16 PM

3. 5–5 पंक्तियों में उत्तर

   1. उत्तर के लिए देखिए 17.3.1
   2. उत्तर के लिए 17.4 देखें
   3. उत्तर के लिए देखिए 17.4

4. क) टीटू ; ख) कॉलेज में प्रधानाचार्य; ग) जोत, अमित; घ) हरिद्वार

5. 4–4 पंक्तियों में उत्तर

   1. 17.2 के अंतर्गत 'शहरों में बसे गांव–कस्बे' शीर्षक को देखिए।
   2. देखिए 17.2 देखें।
   3. उत्तर के लिए देखिए 17.2.3 देखें।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY



BHDC-109_4th proof.indd 300 8/6/2021 2:09:16 PM